एक कहानी कई रंग–**3** ः

टौम थम्ब जैसी कहानियॉ

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Tom Thumb Jaisi Kahaniyan (Tom Thumb Like Stories)
Cover Page picture : Tom Thumb
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

एक कहानी कई रंग 5

टौम थम्ब जैसी कहानियॉ 7

1 टौम थम्ब 9

2 टौम थम्ब का जन्म 24

3 डौन फ़िरीयूलीडू 36

4 थम्ब 40

5 छोटा पौसेट 62

6 थम्बैलीना 76

7 छोटा चना 102

8 थम्बिकिन 117

9 अली थम्ब 122

10 सर पैपरकौर्न 130

11 एक लड़का जिसने सूरज के लिये जाल बिछाया 164

12 मूज़ीशैक – सात वर्स्ट लम्बी मूँछें पर तुम्हारे अँगूठे जितना बड़ा 174

13 सिनज़ैरो की कहानी 190

14 फ़ैरैयैल और जादूगरनी डैब्बे ऐंगल 205

एक कहानी कई रंग

लोक कथाओं के महत्व को ध्यान में रखते हुए कुछ समय पहले हमने संसार के सब देशों से कुछ लोक कथाऐं संकलित की थीं। उनको हमने "देश विदेश की लोक कथाऐं" सीरीज़ में प्रकाशित किया था। वे कथाऐं जब काफी संख्या में इकट्ठी हो गयीं, करीब करीब **2000,** तो उनमें एक तस्वीर देखी गयी। वह थी कि उनमें से कुछ कहानियॉ एक सी थीं और आपस में बहुत मिलती जुलती थीं।

तो लोक कथाओं की एक और सीरीज़ शुरू की गयी और वह है "एक कहानी कई रंग"। कितना अच्छा लगता है जब एक ही कहानी के हमें कई रूप पढ़ने को मिलते हैं। इन पुस्तकों में कुछ इसी तरह की कहानियॉ दी गयी हैं। सबसे पहले इसमें सबसे ज़्यादा लोकप्रिय कहानी दी गयी है और उसके बाद ही उसके जैसी दूसरी कहानियॉ दी गयी हैं जो दूसरी जगहों पर पायी जाती हैं। हम यह दावा तो नहीं करते कि हम वैसी सारी कहानियॉ यहॉ दे रहे हैं पर हमारी कोशिश यही रहेगी कि हम वैसी ज़्यादा से ज़्यादा कहानियॉ एक जगह इकट्ठा कर दें।

इस सीरीज़ में बहुत सारी पुस्तकें हैं जो यह बताती हैं कि केवल **2–4** कहानियॉ ही ऐसी नहीं हैं जो सारे संसार में कई जगह पायी जाती हों बल्कि बहुत सारी कहानियॉ ऐसी हैं जो अपने अपने तरीके से भिन्न भिन्न जगहों पर कही सुनी जाती हैं। इनमें सिन्डरैला, टाम थम्ब, बिल्ला और चुहिया, सोती हुई सुन्दरी, छह हंस[1] आदि मशहूर कहानियॉ दी गयी हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॉ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में यह जानने की प्रेरणा भी देंगी कि एक ही तरह की कहानी किस तरह से दूसरे देशों में पहुँची। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

[1] Cinderella, Tom Thumb, Cat and Rat, Sleeping Beauty, Six Swans etc stories

टौम थम्ब जैसी कहानियॉ

बच्चों तुमने टौम थम्ब की कहानी सुनी है। क्या तुम्हें मालूम है कि टौम थम्ब का नाम टौम थम्ब कैसे पड़ा। टौम तो उसका नाम था औत थम्ब वह इसलिये कहलाता था क्योंकि वह केवल अॅगूठे जितना बड़ा ही था। वह कभी इससे ज़्यादा बड़ा हुआ ही नहीं। यह साइज़ में तो इतना छोटा जरूर था पर था बहुत अक्लमन्द। इतने छोटे बच्चे की कहानी केवल यही नहीं है बल्कि और देशों में कही सुनी जाती हैं।

हमने एक नयी सीरीज़ शुरू की है "एक कहानी कई रंग"। इसमें वे कथाऐं शामिल की गयीं हैं जो सुनने में एक सी लगती हैं पर अलग अलग जगहों पर अलग अलग तरीके से कही सुनी जाती हैं। बच्चों जैसे तुम लोग कहानियॉ सुनते हो वैसे ही दूसरे देशों में भी वहॉ के बच्चे कहानियॉ सुनते हैं। क्योंकि कहानियॉ हर समाज की अलग अलग होती हैं इसलिये उन बच्चों की कहानियॉ भी तुम्हारी कहानियों से अलग हैं।

यहॉ कुछ ऐसी ही कहानियॉ दी जा रही हैं जो पढ़ने सुनने में एक सी कहानियों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं। ऐसी बहुत सी कहानियॉ हैं। ऐसी कहानियॉ हम "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित कर रहे हैं। अगर इन कहानियों के अलावा भी तुम और कोई ऐसी कहानी जानते हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसको इसके अगले आने वाले संस्करण में शामिल करने का प्रयास करेंगे। इन सभी पुस्तकों में सबसे पहले मूल कहानी दी गयी है फिर उसके बाद वैसी ही दूसरे देशों में कही जाने वाली कहानियॉ कही गयीं हैं।

इस सीरीज़ में, यानी "एक कहानी कई रंग" की सीरीज़ में, इससे पहले हमने अभी तक दो पुस्तकें प्रकाशित की है – "बिल्ला और चुहिया जैसी कहानियॉ"। सो इस "एक कहानी कई रंग–1" में "बिल्ला और चुहिया" जैसी कहानियॉ थीं।[2] इसकी दूसरी कड़ी कि पुस्तक थी "नीली दाढ़ी वाला जैसी कहानियॉ"।

अब इस सीरीज़ की यह तीसरी पुस्तक प्रकाशित की जा रही है जिसमें "टौम थम्ब जैसी कहानियॉ" दी गयीं थीं। इसमें बहुत छोटे बच्चे के कारनामों की कथाऐं हैं।[3] इन कथाओं का हीरो एक बहुत छोटा सा बच्चा है। हो सकता है कि तुम लोगों ने "टौम थम्ब" की कहानी पढ़ी भी हो पर वैसी कहानी केवल वही एक नहीं है और कई देशों में भी वैसी ही कहानी कही सुनी जाती हैं। ऐसी **80** से ज़्यादा कहानियों की सूची बनायी गयी है। पर यहॉ पर हम तुम्हारे लिये केवल कुछ कहानियॉ ही दे रहे हैं।

ये सब कहानियॉ सात से दस साल तक के बच्चों के लिये हैं जिनमें बच्चे इतने छोटे बच्चे के कारनामों के बारे में पढ़ कर आश्चर्य करते हैं। इन सब कहानियों में यह बच्चा बहुत अक्लमन्द है।

असल में थम्ब एक अंग्रेजी शब्द है जिसका अर्थ होता है अॅगूठा। जैसे कि अॅगूठा हाथ की सब उॅगलियों में सबसे छोटा होता है इसी तरह से यहॉ यह थम्ब भी एक बहुत ही छोटा बच्चा है जो वाकई अॅगूठे जितना ही बड़ा है। जैसा कि हमने बताया कि कई समाजों में ऐसी लोक कथाऐं मौजूद हैं पर देखने वाली बात यह है कि ये सब लोक कथाऐं कितनी एक सी हैं और कितनी अलग अलग।

इसकी **12**वीं कहानी जो हमने रूस की कहानियों से ली है शेष कहानियों से कुछ अलग है। इसमें वह अॅगूठे बडे जितना आदमी कुछ काम तो नहीं करता पर इसमें वह है जरूर।

---

[2] "One Story Many Colors-1" – like "Cat and Rat"

[3] "One Story Many Colors-2" – like "Tom Thumb"

ये कथाऐं केवल अलग अलग देशों से ही नहीं ली गयी हैं बल्कि वहॉ उनके नाम भी अलग अलग हैं जैसे ब्रिटेन में इसका नाम छोटा पौसेट है तो इटली की कहानियों में इसका नाम है डौन फ़िरीयूलीडो। जबकि इसकी इटली की टस्कन कहानियों में इसका नाम है चिचीनो। अफ्रीका के गाम्बिया देश में इसका नाम फ़ैरैयैल है तो इथियोपिया देश में इसके नाम हैं सिनज़ैरो और ओरैटाट[4]।

हमें पूरा विश्वास है कि ये कहानियॉ तुम लोगों ने भारत में भी कभी कहीं जरूर सुनी होगी। हो सकता है कि ऐसी कहानियॉ किसी और रूप में सुनी हो और अगर किसी और रूप में सुनी हो तो हमें जरूर लिखना। हम उसे इस पुस्तक के दूसरे संस्करण में प्रकाशित करने का प्रयास अवश्य करेंगे।

आशा है कि ये कहानियॉ तुम लोगों को बहुत पसन्द आयेंगीं।

[4] Tuscany is a region in central Italy whose capital is Florence. There his name is Cicino. In Gambia, a country in West Africa its name is Fereyel, and in Ethiopia, a country in East Africa its names are Sinzero, or Oretat, or Aure Tat.

1 टौम थम्ब[5]

टौम थम्ब जैसी कहानियों की यह पहली कहानी "टौम थम्ब" जर्मनी के ग्रिम ब्रदर्स की लिखी हुई कहानियों से ली गयी है। बहुत पहले **1850** के आस पास इन्होंने ये कहानियॉ लिखी थीं।

एक दिन एक रात को एक गरीब लकड़हारा अपनी झोंपड़ी में आग के पास बैठा बैठा अपना पाइप पी रहा था और उसकी पत्नी उसके पास बैठी रुई कात रही थी।

कि लकड़हारे ने एक लम्बा सा धुॅआ अपने पाइप से उड़ाते हुए अपनी पत्नी से कहा — "हम लोगों के लिये यह घर कितना सूना सूना है कि हम दोनों यहॉ बिना बच्चों के अकेले अकेले बैठे हैं।

न हमारे साथ कोई खेलने को है न ही कोई हमारा दिल बहलाने के लिये है। जबकि दूसरे लोग अपने अपने बच्चों के साथ कितने खुश हैं और आनन्द मना रहे हैं।"

एक लम्बी सॉस लेते हुए और चरखे का पहिया घुमाते हुए पत्नी बोली — "यह तो तुमने ठीक कहा। हम लोग कितने खुश रहते

[5] Tom Thumb – a folktale from Germany, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.authorama.com/grimms-fairy-tales-24.html Taken from Grimms Brothers version. This eBook of "Fairy Tales" by the Grimm Brothers (based on translations from the Grimms' "Kinder und Hausmärchen" by Edgar Taylor and Marian Edwardes) belongs to the public domain. Complete book is available at the Web Site : http://www.authorama.com/book/grimms-fairy-tales.html

अगर हमारे पास भी कम से कम एक बच्चा होता तो। चाहे वह बहुत छोटा ही होता – अॅगूठे जितना छोटा। पर उसको देख कर ही मैं बहुत खुश रहती और उसको बहुत प्यार करती।"

पर यह बड़ी अजीब सी बात है कि उस स्त्री की यह इच्छा उसके प्रगट करते ही पूरी हो गयी। कुछ समय बाद उसके एक बेटा हुआ जो बहुत तन्दुरुस्त और ताकतवर तो था पर वह एक अॅगूठे से ज़्यादा बड़ा नहीं था।

उसको देख कर वे बोले — "अब हम यह नहीं कह सकते कि जो कुछ हमने मॉगा था वह हमको मिला नहीं। और जितना यह छोटा है हम इसे उतना ही ज़्यादा प्यार करेंगे।"

और उन्होंने उसका नाम "थोमस थम्ब" रख दिया। वे उसको बहुत खाना खिलाते थे पर फिर भी वह अॅगूठे से ज़्यादा बड़ा नहीं हुआ। वह अपने उसी साइज़ में रहा जिसमें वह पैदा हुआ। फिर भी उसकी ऑखें बहुत तेज़ और बहुत चमकीली थीं।

आगे चल कर वह बहुत ही अक्लमन्द बच्चा साबित हुआ।

एक दिन वह लकड़हारा जब लकड़ी काटने के लिये जाने के लिये तैयार हुआ तो बोला — "काश मेरे पास कोई होता जो मेरी गाड़ी मेरे पीछे पीछे ले आता क्योंकि मुझे आज बहुत जल्दी है।"

टौम चिल्लाया — "पिता जी मैं आपकी गाड़ी ले कर आता हूॅ ताकि आपको आपकी गाड़ी तभी मिल जाये जब आपको जरूरत हो।"

यह सुन कर लकड़हारा ज़ोर से हॅसा और बोला — "यह कैसे हो सकता है बेटे। तुम तो घोड़े के मुॅह तक भी नहीं पहुॅच सकते। तुम मेरी गाड़ी ले कर कैसे आओगे?"

टौम बोला — "उसकी चिन्ता छोड़िये पिता जी। अगर मॉ घोड़े को उसका साज पहना कर उसे गाड़ी में जोत देगी तो मैं उसके कान में बैठ जाऊॅगा और उसको बताता रहूॅगा कि किधर जाना है।"

लकड़हारा बोला — "ठीक है एक बार कोशिश कर के देखते हैं।" यह सुन कर लकड़हारा जंगल चला गया।

बाद में टौम की मॉ ने घोड़े पर साज सजाया और उसको गाड़ी में जोत दिया। फिर उसने टौम को घोड़े के कान में भी बिठा दिया। वहॉ बैठ कर उस छोटे आदमी ने घोड़े से कहा कि उसको कैसे कैसे जाना है – "चलो" और "रुक जाओ"।

और वह घोड़ा वैसे ही चल दिया जैसे लकड़हारा उसको ले जाया करता था। जब घोड़ा थोड़ा तेज़ चलता तो टौम कहता "ज़रा धीरे चल।" और घोड़ा समझ जाता।

तभी दो अजनबी उधर से जा रहे थे। उनमें से एक उस गाड़ी को देख कर बोला — "यह कैसी अजीब बात है कि यह गाड़ी तो जा रही है और मुझे गाड़ीवान के घोड़े से बात करने की आवाज भी आ रही है पर मुझे इसका गाड़ीवान कहीं दिखायी नहीं दे रहा।"

दूसरा बोला — "चलो इस गाड़ी का पीछा करते हैं और देखते हैं कि यहॉ गाड़ी कहॉ जा रही है और इसको कौन ले जा रहा है।"

सो वे दोनों उस गाड़ी के पीछे पीछे चल दिये और जंगल में उस जगह आ पहुँचे जहॉ लकड़हारा लकड़ी काट रहा था।

टौम ने जैसे ही अपने पिता को देखा तो चिल्लाया — "देखिये पिता जी मैं गाड़ी के साथ ठीक ठीक यहॉ आ गया। अब आप मुझे उतार लें।"

यह सुन कर उसका पिता वहॉ आया। उसने एक हाथ से घोड़ा पकड़ा और दूसरे हाथ से घोड़े के कान में से अपने बेटे को निकाल कर नीचे घास पर बिठा दिया। वह वहॉ खुशी खुशी बैठ गया।

वे दोनों अजनबी सारा समय उनको देखते रहे और यह सब देख कर इतने आश्चर्यचकित हुए कि उनके मुँह से कोई बोल ही नहीं निकला।

सो एक आदमी दूसरे को एक तरफ ले गया और उससे कहा — "अगर हम इस छोटे आदमी को इस आदमी से खरीद लें और इसको गॉव गॉव ले जा कर इसका शो करें तो यह छोटा आदमी तो हमारी किस्मत बना देगा। इसको हमें इस आदमी से खरीद लेना चाहिये।"

दूसरे आदमी ने हॉ में अपना सिर हिलाया सो वे दोनों उस लकड़हारे के पास गये और उससे पूछा कि वह उस छोटे आदमी को उनको बेचने का क्या लेगा। यह छोटा आदमी तुम्हारे पास रहने की बजाय हमारे पास ज़्यादा अच्छी तरह से रहेगा।"

पिता ने कहा कि वह उसे किसी कीमत पर भी नहीं बेचेगा। उसने आगे कहा कि उसका अपना खून और मॉस और कितने भी सोने और चॉदी की कीमत से कहीं ज़्यादा है।"

पर टौम ने जब यह सौदा सुना तो वह अपने पिता के कोट से हो कर उसके कन्धे के पास तक पहुॅचा और उसके कान में फुसफुसाया — "पिता जी आप इनसे पैसा ले लीजिये और मुझे इनको बेच दीजिये। मैं जल्दी ही आपके पास वापस आ जाऊॅगा।"

सो लकड़हारे ने एक बहुत बड़े सोने के टुकड़े के बदले में टौम को उन दो अजनबियों को बेच दिया।

टौम को लेने के बाद उनमें से एक अजनबी ने उससे पूछा तुम कहॉ बैठना पसन्द करोगे।

टौम बोला तुम मुझे अपने टोप के किनारे पर बैठा दो। वह मेरे लिये बहुत अच्छी जगह रहेगी। मैं वहॉ पर चल फिर भी सकता हूॅ और वहॉ से चारों तरफ देख भी सकता हूॅ।

सो उन्होंने उसको उसके कहे अनुसार उसको वहीं बिठा दिया। टौम ने अपने पिता से विदा ली और वे दोनों उसको ले कर वहॉ से चल दिये।

वे लोग उसको लिये हुए शाम तक चलते रहे। शाम हुई तो टौम बोला "अब मुझे उतार दो मैं अब थक गया।"

सो उस आदमी ने अपना टोप उतारा और टौम को सड़क के किनारे एक जोते हुए खेत में जमीन पर खड़ा कर दिया। पर टौम

वहॉ से वह झाड़ियों की तरफ भागा और एक चूहे के बिल में घुस कर बोला — "गुड नाइट मेरे मालिको। मैं चला। दोबारा मेरी देखभाल ठीक से करना।"

तुरन्त ही वे लोग उसकी तरफ दौड़े और अपनी छड़ी उस बिल के अन्दर घुसायी पर सब बेकार। टौम तो उस बिल में दूर और और दूर रेंगता चला गया जब तक कि उसमें बिल्कुल अँधेरा नहीं हो गया।

आखिरकार वे अपनी खरीद खोने पर मुँह सुजाये हुए वहॉ से चले गये। जब टौम ने देखा कि वे लोग वहॉ से चले गये तो वह उस चूहे के बिल से बाहर निकल आया।

उसने सोचा कि इस जुते हुए खेत में चलना तो कितना खतरनाक होगा क्योंकि अगर मैं इन बड़े बड़े मिट्टी के टुकड़ों में कहीं गिर गया तो मेरी तो गरदन ही टूट जायेगी।

आखिर खुशकिस्मती से उसको घोंघे का एक टूटा हुआ खोल मिल गया। उसने सोचा कि यह अच्छी जगह है मैं यहीं सोता हूँ और यह सोचते हुए वह उसके अन्दर रेंग गया।

जैसे ही वह वहॉ सोने वाला था कि उसने दो आदमियों को बात करते हुए वहॉ से जाते हुए सुना। उनमें से एक कह रहा था — "हम उस अमीर पादरी के घर में से उसके सोने चॉदी को कैसे लूटें? उसके पास तो बहुत सोना चॉदी है और वह हमें लूटनी है।"

टौम तुरन्त ही बोला — "मैं बताता हूँ कि तुम उस अमीर पादरी को कैसे लूटो।"

चोर यह सुन कर डर गये — "अरे यह आवाज कहॉ से आयी? मुझे यकीन है कि मैंने किसी को बोलते हुए सुना।" और यह कह कर वे दोनों वहीं खड़े हो कर इधर उधर देखने लगे और फिर से किसी आवाज को सुनने का इन्तजार करने लगे।

टौम फिर बोला — "तुम लोग मुझे अपने साथ ले चलो। मैं तुमको बता दूँगा कि उस अमीर पादरी का सोना चॉदी कैसे चुराना है।"

दोनों एक साथ बोले — "पर तुम हो कहॉ? हमें तो तुम कहीं दिखायी नहीं दे रहे।"

"ज़रा नीचे जमीन पर देखो। और फिर सुनने की कोशिश करो कि यह आवाज कहॉ से आ रही है।"

आखिर चोरों ने उसको ढूँढ ही लिया और उसे हाथों में उठा कर बोले — "ओ छोटे आदमी, तुम हमारे लिये क्या कर सकते हो? तुम तो बहुत ही छोटे हो।"

"क्यों, मैं उस पादरी के घर की लोहे की खिड़कियों के बीच में से उसके घर में जा सकता हूँ और अन्दर से जो कुछ भी तुम चाहो वह तुम्हारे लिये बाहर फेंक सकता हूँ।"

चोरों ने सोचा यह तो बड़ा अच्छा विचार है। वे बोले तो चलो हमारे साथ और हमको दिखाओ कि तुम हमारे लिये क्या कर सकते हो।

सो वे सब उस पादरी के घर की तरफ चल दिये। जब वे पादरी के घर पहुँचे तो टौम उस पादरी के घर की खिड़की में से हो कर उसके घर में घुस गया।

वहॉ से फिर वह जितनी ज़ोर से चिल्ला सकता था चिल्ला कर बोला — "क्या तुम लोगों को वह सब चाहिये जो यहॉ है?"

यह सुन कर चोर डर गये और उससे बोले — "ज़रा धीरे से। ज़रा धीरे बोलो कि कोई जाग न जाये।"

पर टौम ने कुछ ऐसा दिखाया जैसे वह कुछ समझा ही नहीं सो वह और ज़ोर से बोला — "तुम लोगों को कितना चाहिये? क्या मैं सारा का सारा ही बाहर फेंक दूँ?"

अब हुआ यह कि पादरी की खाना बनाने वाली पास वाले कमरे में सो रही थी। इतना सारा शोर सुन कर उसकी ऑख खुल गयी। वह उठी और सुनने लगी कि वहॉ क्या हो रहा था।

इस बीच टौम के इतना ज़ोर से बोलने से चोर भी डर गये और वे जहॉ खड़े थे वहॉ से कुछ दूर चले गये। पर फिर उन्होंने अपना साहस बटोरा और एक ने दूसरे से कहा — "यह छोटा आदमी हमारा बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा है।"

सो वे फिर वहीं वापस आये जहॉ पहले खड़े थे और टौम से कहा — "अच्छा अब तुम अपने ये भद्दे मजाक बन्द करो और कम से कम थोड़ा सा पैसा तो उठा कर बाहर फेंको।"

यह सुन कर टौम जितनी ज़ोर से बोल सकता था बोला — "ठीक है। यह लो। यह रहा तुम्हारा पैसा।"

खाना बनाने वाली ने यह सब साफ साफ सुना तो वह अपने बिस्तर से कूद कर दरवाजा खोलने के लिये भागी। चोर यह देख कर वहॉ से भेड़िये की तरह भाग गये।

सो जब वह वहॉ पहुँची तो उसको वहॉ कोई दिखायी नहीं दिया। और जब तक वह वापस आयी तब तक टौम भी अनाज रखने की जगह में जा कर छिप गया था।

खाना बनाने वाली ने सारे कोने छान मारे पर जब वहॉ भी उसको कोई दिखायी नहीं दिया तो वह यह सोच कर वापस सोने चली गयी कि शायद वह खुली ऑखों से सपना देख रही हो।

जब छोटे आदमी टौम ने देखा कि अब वहॉ कोई नहीं था तो वह भूसे से बाहर निकल आया और एक गरम सी जगह ढूँढ कर अपनी बची हुई रात वहॉ सो कर बिताने का इरादा किया।

वह वहॉ यह सोच कर लेट गया कि अब वह वहॉ सुबह तक सोता रहेगा और फिर अपने माता पिता के पास चला जायेगा। पर अफसोस उसको यह नहीं पता था कि उसका यह प्लान काम नहीं करेगा।

अगले दिन वह खाना बनाने वाली जल्दी उठी और गायों को भूसा खिलाने के लिये वहॉ से भूसा लेने के लिये आयी जहॉ टौम सो रहा था। उसने भूसे का एक बहुत बड़ा सा गट्ठर उठाया और उसे गायों की जगह ले कर चली।

अब टौम क्योंकि उस भूसे में सो रहा था तो वह उस गट्ठर के साथ साथ उसकी गायों की जगह चला गया। टौम उस गट्ठर में शायद बाद तक भी सोता रहता पर उसकी ऑख खुल गयी जब उसने अपने आपको एक गाय के मुॅह में पाया।

क्योंकि खाना बनाने वाली ने तो वह भूसा गाय के खाने वाले बरतन में डाल दिया था और गाय ने वह भूसा अपने मुॅह में रख लिया था। उस भूसे के साथ टौम भी उसके मुॅह में चला गया।

"उफ़ कितना बुरा दिन है। यह कैसे हुआ कि मैं किसी चक्की में आ फॅसा।" पर उसे जल्दी ही पता चल गया कि वह कहॉ था। वह गाय के दॉतों के नीचे आ कर मर न सके इसके लिये उसको अपनी सारी होशियारी इस्तेमाल करनी पड़ी।

फिर वह गाय के पेट में चला गया। वह बोला — "अरे यहॉ तो बड़ा अॅधेरा है। ऐसा लगता है कि लोग इस कमरे में खिड़की बनाना भूल गये ताकि यहॉ धूप आ सके। यहॉ तो मोमबत्ती जलानी पड़ेगी।"

हालॉकि उसने अपने हालात का सबसे अच्छा इस्तेमाल किया था फिर भी उसको अपना कमरा बिल्कुल पसन्द नहीं था। और

उससे भी बुरी बात यह थी कि उस कमरे में और और और भूसा अन्दर आता जा रहा था। इस तरह से उसके लिये वहॉ जगह कम होती जा रही थी।

आखिर वह चिल्लाया — "और भूसा मत लाओ। और भूसा मत लाओ।"

इत्तफाक से उस समय वह खाना बनाने वाली वह गाय दुह रही थी जो वह भूसा खा रही थी। तो उसको कोई आवाज तो सुनायी पड़ी पर वहॉ दिखायी कोई नहीं दिया। पर उसने वह आवाज पहचान ली। यह वही आवाज थी जो उसने कल रात सुनी थी।

यह सुन कर तो वह इतनी डर गयी कि वह अपने स्टूल से वहीं गिर पड़ी और इससे उसकी बालटी का दूध भी बिखर गया। वह जल्दी से वहॉ से दूध की कीचड़ में से उठी और पादरी के पास भागी गयी और बोली — "मालिक मालिक गाय बात कर रही है।"

पादरी बोला — "तुम बिल्कुल पागल हो गयी हो। भला कहीं गाय भी बोलती है।"

पर फिर भी वह उसके साथ मामले की जॉच करने के लिये खुद गया। वे लोग उस जगह पहुँचे ही थे कि टौम फिर चिल्लाया — "मेरे लिये और भूसा मत लाओ।"

यह सुन कर तो पादरी भी डर गया। उसने सोचा लगता है कि गाय के ऊपर किसी ने जादू कर दिया है। सो उसने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वे उस गाय को मार दें। और गाय वहीं की वहीं

मार दी गयी। उन्होंने गाय का पेट एक गोबर के ढेर पर फेंक दिया।

टौम उस गाय के पेट के गोबर के ढेर पर गिरते ही वहॉ से निकल कर भागने की कोशिश करने लगा। जैसे ही उसने गाय के पेट में से अपना मुँह बाहर निकाला जो उसके लिये आसान नहीं था कि उसके ऊपर बदकिस्मती का एक और पहाड़ टूट पड़ा।

तभी वहॉ एक भूखा भेड़िया आ गया और वह गाय का पूरा का पूरा पेट ही खा गया। गाय के पेट के साथ साथ भेड़िये ने टौम को भी एक कौर में ही खा लिया और भाग गया।

टौम अभी भी हिम्मत नहीं हारा था और यह सोचते हुए कि शायद भेड़िये को उससे बात करने में अच्छा लगे वह उससे बोला — "मेरे अच्छे दोस्त, मैं तुमको एक बहुत अच्छी चीज़ दिखाना चाहता हूँ।"

"कहॉ है वह?"

इसके जवाब में टौम ने अपने पिता के घर का पता बता दिया और कहा — "तुम उस घर में नाली से हो कर रसोई में जा सकते हो और फिर वहॉ से खाना रखने की जगह।

वहॉ तुमको केक, सूअर का मॉस, गाय का मॉस, ठंडे मुर्गे, भुना हुआ सूअर, सेब के गोले और जो कुछ भी तुम्हारा दिल चाहे वह सभी कुछ मिलेगा।"

भेड़िये को दोबारा कहने की जरूरत नहीं थी। वह उसी रात को उस घर में नाली के रास्ते अन्दर घुस गया। वह रसोईघर में पहुॅचा फिर खाना रखने की जगह पहुॅचा और जितना वह वहॉ खा सका और पी सका खाया और पिया और वहॉ से वापस चला।

पर इतना सब खाने और पीने के बाद जब वह उसी रास्ते से वापस आने लगा तो वह वहॉ से वापस ही नहीं आ सका क्योंकि खा पी कर वह इतना मोटा हो गया था कि वह उस नाली में फॅस गया।

बस इसी मौके का तो टौम को तो इन्तजार था। उसने चिल्लाना शुरू किया। भेड़िया बोला — "ज़रा आराम से। ज़रा आराम से। अगर तुम इसी तरह से चिल्लाते रहे तो तुम सबको जगा दोगे।"

टौम बोला — "तो क्या हुआ। तुमने अपना आनन्द लिया अब मुझे भी तो कुछ आनन्द लेने दो।" और यह कह कर उसने और ज़ोर ज़ोर से गाना और चिल्लाना शुरू कर दिया।

इतना शोर सुन कर लकड़हारा और उसकी पत्नी जाग गये। उन्होंने दरवाजे में से झॉक कर देखा तो वहॉ एक भेड़िये को पाया। उसको देख कर तो उनकी सिट्टी पिट्टी गुम हो गयी।

लकड़हारे ने एक बड़ा चाकू अपनी पत्नी को दिया और उससे कहा कि जब मैं उसके सिर पर अपनी कुल्हाड़ी मारूॅ तब तुम उसको उसे तुरन्त ही चीर देना। कह कर वह अपनी कुल्हाड़ी लेने के लिये भागा।

टौम ने यह सब सुना तो अपने पिता से कहा — "पिता जी, मैं इस भेड़िये के अन्दर हूॅ इसने मुझे निगल लिया है।"

तो उसका पिता बोला — "भगवान की दया है कि हमको हमारा बेटा मिल गया।"

फिर उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह उस बड़े चाकू का इस्तेमाल न करे कहीं ऐसा न हो कि वह उनके बेटे को कोई नुकसान पहुॅचा दे। फिर उसने भेड़िये को एक ज़ोर की कुल्हाड़ी मारी जिससे वह वहीं मर गया।

जब वह मर गया तो उसने उसका पेट फाड़ कर अपने बेटे टौम को उसमें से बाहर निकाल लिया। उसको देखते ही उसका पिता रो पड़ा और बोला — "आह हम तुम्हारे लिये कितने परेशान थे बेटे।"

"पिता जी मैं तो सारी दुनियॉ घूम आया। जबसे हम अलग हुए हैं तबसे मैं इधर उधर बन्द था। अब मैं अपने घर की ताजा हवा में आ कर बहुत खुश हूॅ।"

"क्यों, अब तक तुम कहॉ थे?"

टौम बोला — "पहले मैं एक चूहे के बिल में था। फिर मैं एक घोंघे के खोल में था। उसके बाद मैं एक गाय के पेट में चला गया और फिर यह भेड़िया मुझे निगल गया। पर अब मैं यहॉ सुरक्षित हूॅ।"

उसके माता पिता बोले — "अच्छा हुआ कि तुम वापस आ गये। अब हम तुमको कभी नहीं बेचेंगे चाहे कोई हमको दुनियॉ भर की दौलत ही क्यों न दे।"

कह कर उन्होंने अपने छोटे से बेटे को गले लगाया और बहुत बार प्यार किया। उन्होंने उसको खूब खिलाया और पिलाया क्योंकि वह बहुत भूखा था। फिर वे उसके लिये नये कपड़े ले कर आये क्योंकि उसके पुराने कपड़े इस समय में खराब हो गये थे।

इसके बाद टौम घर पर ही शान्ति से रहा और अपनी यात्रा की कहानियॉ सुना सुना कर कहता रहा "घर के बराबर कोई अच्छी जगह नहीं।"

2 टौम थम्ब का जन्म[6]

टौम थम्ब की पिछली कहानी यूरोप की एक बहुत मशहूर कहानी है। पर ऐसी कहानियॉ केवल जर्मनी में ही नहीं पायी जातीं बल्कि दूसरे देशों में भी पायी जाती हैं। इस पुस्तक में हम तुम्हारे लिये कुछ और देशों की ऐसी ही कहानियॉ दे रहे हैं। तुम देखना कि तुमने कौन सी कहानी पढ़ी या सुनी है।

यह राजकुमार आर्थर के समय की बात है कि एक बहुत ही ताकतवर जादूगर रहता था। उसका नाम था मर्लिन।[7] वह एक बहुत ही विद्वान आदमी था और लोगों को बहकाने में भी उसका दुनियॉ भर में कोई सानी नहीं था।

यह जादूगर कोई भी रूप ले सकता था और एक गरीब भिखारी के रूप में घूमता रहता था। एक बार यह बहुत थक गया तो एक किसान के घर में आराम करने के लिये रुक गया। वहॉ उसने खाना मॉगा।

किसान ने उसका दिल से स्वागत किया और उसकी पत्नी जो बहुत ही अच्छे दिल की स्त्री थी उसके लिये तुरन्त ही लकड़ी के

[6] The History of Tom Thumb – a folktale from Britan, Europe. From the book "British Fairy Tales" by Jaoseph Jacobs. NY : GP Putnam's. 1892. Available at the Web Site : https://www.worldoftales.com/European_folktales/English_folktale_25.html

[7] Merlin named magician

एक कटोरे में दूध और एक तश्तरी में मोटे अनाज की रोटी ले आयी।

मर्लिन उनकी यह खातिरदारी देख कर बहुत खुश हुआ। पर वह यह भी बिना देखे नहीं रह सका कि मकान में हालॉकि सब कुछ बहुत साफ और आरामदेह था पर वे दोनों बहुत दुखी थे।

सो उसने उनसे पूछा कि वे दोनों क्यों दुखी थे। उसको पता चला कि वे दुखी इसलिये थे क्योंकि उनके कोई बच्चा नहीं था।

बेचारी स्त्री रोते हुए बोली — "मैं इस दुनियॉ में सबसे ज़्यादा खुश स्त्री होती अगर मेरे मेरे पति के अॅगूठे के बराबर भी मेरे कोई लड़का होता।"

मर्लिन तो इसी विचार से ही बहुत खुश हो गया कि वह स्त्री केवल एक अॅगूठे के बराबर ही लड़का मॉग रही थी। उसने इरादा किया कि वह इस स्त्री की इच्छा जरूर पूरी करेगा।

सो इस इरादे के अनुसार कुछ समय बाद ही किसान की स्त्री ने एक बच्चे को जन्म दिया और यह कहते हुए आश्चर्य होता है कि वह एक अॅगूठे के साइज़ से ज़्यादा बड़ा नहीं था।

परियों की रानी भी उस बच्चे को देखने के लिये आयी। वह खिड़की के रास्ते आयी। उस समय उसकी मॉ उसको बड़े शौक से देख रही थी।

रानी ने बच्चे को चूमा और उसको टौम थम्ब का नाम दिया। फिर उसने कुछ और परियों को बुलाया उन्होंने उसकी इजाज़त ले कर उन्होंने उसको एक बहुत प्यारे से बच्चे के रूप में तैयार किया।

उसको ओक की एक पत्ती का ताज पहनाया
उसकी कमीज मकड़े के जाले की थी
उसकी जैकेट थिसिल[8] की रुई की बनी थी
उसका पायजामा पंख का बना हुआ था
उसके मोजे सेब के छिलके के बने थे
जिन्हें उसकी मॉ की पलकों के बाल से बॉधा गया था
उसके जूते चूहे की खाल के बने थे और वे उसके बालों के रंग से रंगे थे

टौम थम्ब कभी भी अपने पिता के अॅगूठे से बड़ा नहीं हुआ। और उसका अॅगूठा भी सामान्य साइज़ का था बहुत बड़ा नहीं था। पर जैसे जैसे वह बड़ा होता गया तो वह चालाक और चालें खेलने वाला होता गया।

जब वह इतना बड़ा हो गया कि वह दूसरे लड़कों के साथ खेलने लायक हो गया तो जब उसकी चैरी की गुठलियॉ खो जातीं तो वह अपने साथियों के थैलों में घुस जाता और वहॉ से उनकी चैरियों की गुठलियों से अपनी जेबें भर लेता और उनके बिना जाने ही उनके थैलों से निकल भी आता। और फिर खेल शुरू कर देता।

[8] Thistle is a kind of flower whose cotton is very fine and soft. See its flowering plant above.

एक दिन जब वह चैरी के थैले से बाहर निकल रहा था जहॉ वह रोज की तरह उनकी चैरी की गुठलियॉ चोरी करने गया था। अब जिसका वह थैला था इत्तफाक से उस लड़के ने उसको अपने थैले से निकलते देख लिया।

वह चिल्लाया — "ओह मेरे छोटे टौमी। आज मैंने तुम्हें पकड़ लिया। तुम्हें तुम्हारी इन चोरियों का इनाम जरूर मिलेगा।"

कहते हुए उसने उसके गले में पड़ी हुई डोरी कस कर खींच दी। और थैले को इतनी ज़ोर से हिलाया कि बेचारे छोटे टौम की टॉगें जॉघें और शरीर सब घायल हो गया।

वह दर्द के मारे बहुत ज़ोर से चिल्लाया और उस लड़के से अपने आपको बाहर निकालने की बहुत विनती की। उसने यह वायदा भी किया कि अब आगे से वह कभी चोरी नहीं करेगा।

फिर कुछ समय बाद की बात है कि एक दिन उसकी मॉ पुडिंग बना रही थी तो यह देखने के लिये कि पुडिंग कैसे बनती है वह कटोरे के किनारे पर चढ़ गया पर उसका पैर फिसल गया और उसका सिर और कान उस घोल में डूब गये।

उसकी मॉ को इसका पता ही नहीं था। उसने उसको पुडिंग के थैले में डाल दिया और उसको बरतन में रख कर उबलने रख दिया।

वह घोल उसके मुॅह में जाने लगा तो वह चिल्ला भी न सका। पर जब उसने पानी की गरमी महसूस की तो वह बरतन में इतना

हिला डुला कि उसकी मॉ को लगा जैसे उसकी पुडिंग के ऊपर कोई जादू हो गया है सो उसने उसको बरतन में से निकाल कर उसे दरवाजे के बाहर फेंक दिया।

खुशकिस्मती से एक बरतन ठीक करने वाला वहॉ से गुजर रहा था तो उसने वह पुडिंग अपनी जेब में रख ली और वहॉ से चला गया। टौम के मुँह में अब पुडिंग का घोल नहीं था सो अब उसने चिल्लाना शुरू कर दिया।

वह इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि बरतन ठीक करने वाला डर गया और उसने पुडिंग तो नीचे फेंक दी और वहॉ से भाग लिया।

जैसे ही पुडिंग नीचे गिरी तो वह टूट कर बिखर गयी। टौम उसमें से घोल में लिपटा हुआ बाहर निकल आया और घर चला गया।

अपने लाड़ले बेटे की यह हालत देख कर मॉ को बड़ा दुख हुआ। उसने उसको एक चाय के प्याले में रखा और उसके शरीर पर लगा सारा घोल साफ किया। फिर उसे चूम कर बिस्तर में लिटा दिया।

अब इस पुडिंग के कारनामे के बाद एक दिन टौम की मॉ गाय का दूध दुहने गयी तो वह उसको भी साथ में ले गयी। हवा बहुत तेज़ चल रही थी तो वह हवा में कहीं उड़ न जाये उसने उसे बड़े ही बारीक धागे से एक थिसिल से बॉध रखा था।

गाय ने बहुत जल्दी ही टौम का ओक के पत्ते का टोप देख लिया। वह उसको देखने में बहुत अच्छा लगा तो उसने टौम और थिसिल को एक बार में ही मुँह में भर लिया।

जब गाय थिसिल चबा रही थी टौम को उसके बड़े बड़े दॉतों से बहुत डर लग रहा था जिनसे वह कभी भी कुचला जा सकता था। इसलिये वह बहुत ज़ोर से चिल्लाया "मॉ मॉ।"

मॉ भी उसकी आवाज सुन कर चिल्लायी — "तुम कहॉ हो टौमी मेरे प्यारे टौमी?"

वह बोला — "मैं यहॉ हूँ मॉ। लाल गाय के मुँह के अन्दर।"

उसकी मॉ तो यह सुन कर डर गयी और रोने लगी। अपने हाथ मलने लगी। पर गाय ने जब अपने मुँह में से आवाज सुनी तो उसने अपना मुँह खोल दिया। टौम बाहर आ गया।

खुशकिस्मती से मॉ ने उसको अपने ऐप्रन में पकड़ लिया वरना न जाने उसको कितनी चोट आती। वह उसको अपनी छाती में छिपा कर घर भाग गयी।

टौम के पिता ने उसके लिये जौ की एक बाल से एक कोड़ा बना दिया जिससे वह जानवरों को दूर भगा सकता।

एक दिन वह खेत पर गया। वहॉ उसका एक पैर फिसल गया और वह खेत में बीज बोने के गड्ढे में जा पड़ा। उसी समय एक रैवन ऊपर उड़ रहा था। उसने उसे उठा लिया और उसे ले कर

समुद्र के ऊपर उड़ गया। वहॉ ले जा कर उसने उसे समुद्र में गिरा दिया।

तुरन्त ही एक बड़ी मछली उसको निगल गयी। पर जल्दी ही वह मछली पकड़ ली गयी और राजा आर्थर की खाने की मेज के लिये लायी गयी।

जब उन रसोइयों ने राजा के खाने के लिये उसको काटा तो सबको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसमें से एक बहुत ही छोटा सा आदमी निकला। टौम फिर से आजाद हो कर बहुत खुश हुआ।

वे उसको राजा के पास ले गये। राजा ने उसे अपना बौना साथी बना लिया। कुछ ही दिनों में वह सब दरबारियों में बहुत लोकप्रिय हो गया। क्योंकि अपनी चालाकियों से उसने राजा रानी का ही नहीं बल्कि नाइट्स और दूसरे कुलीन लोगों का भी मन मोह लिया था।

कहा जाता है कि एक दिन राजा ने टौम से उसके माता पिता के बारे में पूछा। असल में वह बस यह जानना चाहता था कि उसके माता पिता भी क्या उसी की तरह छोटे थे। और क्या वे अच्छी तरह से रह रहे थे। टौम ने राजा को बताया कि उसके माता पिता सामान्य लोगों की तरह ही हैं जैसे राजा के दरबार में थे। पर वे गरीब हैं।

यह सुन कर राजा ने टौम को उठाया और अपने खजाने की तरफ ले गया जहॉ वह अपना सारा पैसा रखता था। वहॉ जा कर वह उससे बोला कि वह उसमें से जितना पैसा ले जा सकता था ले जा सकता था।

यह सुन कर वह छोटा आदमी तो बहुत खुश हो गया। टौम तुरन्त ही एक बटुआ लेने के लिये दौड़ा जो पानी के एक बुलबुले का बना हुआ था। बटुआ ले कर वह वापस आया जहॉ वह अपने बटुए में चॉदी के तीन पैन्स का सिक्का ही रख सका।

हमारे छोटे हीरो को अपनी पीठ पर उसका बोझ उठाना बहुत मुश्किल हो गया। पर फिर भी किसी तरह उसने उसे अपने सिर पर लादा और अपने घर चल दिया।

खैर वह बिना किसी ऐक्सीडैन्ट के और रास्ते में **100** बार से ज़्यादा आराम करते हुए दो दिन और दो रात में अपने पिता के घर सुरक्षित पहुॅच गया।

टौम अपनी पीठ पर एक बहुत बड़ा चॉदी का सिक्का लाद कर **48** घंटे की यात्रा कर के घर आया था। उसकी हालत मरे जैसी हो रही थी। उसकी मॉ उससे मिलने के लिये दरवाजे की तरफ दौड़ी और उसको उठा कर अन्दर ले गयी।

पर वह जल्दी ही फिर दरबार वापस लौटा। क्योंकि टौम के कपड़े पुडिंग के घोल में और मछली के अन्दर बहुत खराब हो गये थे तो हिज़ मैजेस्टी ने उसके लिये एक नया सूट बनवाने का हुक्म दे

दिया था और उसको अपने यहॉ नाइट रख लिया था। सवारी के लिये उसको एक चूहा दे दिया गया था।

उसके लिये तितली के पंख की कमीज बनवायी गयी
उसके लिये मुर्गे की खाल के जूते बनवाये गये तेज़ काटने वाले ब्लेड से
जिसने सिलाई का काम बहुत अच्छे से सीखा हुआ था
ऐसे दर्जी से उसके कपड़े बनवाये गये थे
उसकी बगल में एक सुई लटकी हुई थी
एक साफ सुथरा चूहा उसकी सवारी के लिये था
इस तरह से टौम शाही शान से घूमता था

जब टौम राजा और कुलीन लोगों के साथ शिकार पर गया तो वह ऐसी पोशाक पहने और चूहे पर सवार हुए देखने में बिल्कुल अलग लग रहा था। उसको और उसकी सवारी को देख कर तो बस सब ठहाका लगा कर हॅस पड़े – देखो टौम को देखो ज़रा।

राजा को वह इतना सुन्दर लगा कि उसने टौम के लिये उसके साइज़ की एक कुर्सी बनाने का हुक्म दिया जिससे वह उसके साथ उसके खाने की मेज पर बैठ सके।

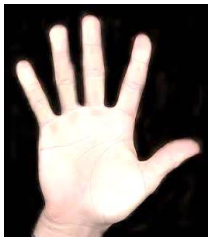

उसके रहने के लिये सोने का एक महल बनवाया गया जो एक बालिश्त[9] चौड़ा था। उसका दरवाजा एक इंच चौड़ा था। राजा ने उसको एक गाड़ी भी दी जिसको छह छोटे छोटे चूहे खींचते थे।

[9] Translated for the word “Span” – approximately 9” to 10” or maybe 11”. This measurement is the distance between the tip of the thumb and the smallest finger when a hand is spread. See its picture above.

पर रानी को राजा का उसको यह सब इज़्ज़त देना अच्छा नहीं लगा। वह इस बात से बहुत नाराज थी। उसने उसको बरबाद करने की सोची। उसने राजा से कहा कि यह छोटा नाइट उसको बहुत परेशान करता था।

राजा ने टौम को जल्दी से बुलवाया। टौम को शाही खतरों का कुछ कुछ पता लग चुका था सो वह घोंघे के एक खाली खोल में घुस गया जहॉ वह बहुत देर तक छिपा रहा जब तक उसको बहुत भूख नहीं लग आयी। पर आखिर उसको उसमें से बाहर तो झॉकना ही पड़ा।

बाहर झॉकने पर उसने देखा तो उसको अपने छिपने की जगह के पास ही एक तितली दिखायी दे गयी।

वह उसके पास चला गया और उस पर कूद पड़ा। तितली उसको हवा में ऊपर उड़ा कर ले गयी। वे दोनों खेत खेत पेड़ पेड़ घूमते रहे। आखिर तितली दरबार में वापस आयी तो वहॉ राजा और कुलीन लोग उसे पकड़ने के लिये दौड़े।

बेचारा टौम अपनी सीट से पौधों को पानी देने बरतन में गिर पड़ा। उसमें तो वह करीब करीब डूब ही गया।

जब रानी ने यह देखा तो उसे बहुत गुस्सा आया। उसने कहा — "इसका सिर काट दो।"

उसको एक चूहा पकड़ने वाले डिब्बे में बन्द कर दिया गया जब तक उसकी सजा का समय आता है।

इतने में एक बिल्ले ने चूहा पकड़ने वाले बक्से में कोई जानदार चीज़ देखी तो उसने उस पर अपना पंजा मारना शुरू कर दिया और तब तक मारता रहा जब तक कि उसके तार नहीं टूट गये और टौम आजाद नहीं हो गया।

राजा ने टौम के ऊपर फिर कृपा की पर टौम उसका आनन्द लेने के लिये ज़िन्दा नहीं रह सका। एक दिन एक बहुत बड़े मकड़े ने उसके ऊपर हमला बोल दिया।

हालॉकि उसने अपनी तलवार भी निकाली फिर भी मकड़े की जहरीली सॉस उसके ऊपर काबू पाती चली गयी।

वह जमीन पर मर कर गिर गया जहॉ वह खड़ा था
मकड़े ने उसके शरीर के खून की एक एक बूँद चूस ली थी

राजा आर्थर के दरबार के सारे लोग बहुत दुखी थे वे अपने प्रिय के लिये इतने दुखी थे कि वे उसके लिये दुख मनाने के लिये चले गये। उसके लिये उन्होंने एक बहुत ही बढ़िया संगमरमर का एक मकबरा बनाया जिस पर उन्होंने लिखा —

यहॉ राजा आर्थर का नाइट टौम थम्ब लेटा है
जो एक बेरहम मकड़े के काटने से मारा गया
वह आर्थर के दरबार में बहुत अच्छी तरह से जाना जाता था
जहॉ वह शानदार हॅसी के काम किया करता था
वह टेढ़ा हो कर सवारी करता था

वह चूहे पर चढ़ कर शिकार खेलने जाता था
वह हॅसी से दरबार को भर देता था

उसके मरने से दुख छा गया है
अपने ऑसू पोंछ लो अपना सिर हिला हिला कर रोओ टौम थम्ब मर गया है

3 डौन फ़िरीयूलीडू[10]

टौम थम्ब जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक किसान था। वह अपनी बेटी के साथ रहता था। उसकी बेटी उसके लिये रोज खेत पर खाना ले कर जाती थी।

एक दिन पिता ने अपनी बेटी से कहा — "कल मैं रास्ते में भूसा बिखेरता जाऊँगा ताकि तुझे मुझे ढूँढने में कोई परेशानी न हो। तू उस भूसे के पीछे पीछे आ जाना तो तू मुझे पा लेगी।" पिता यह कह कर चला गया।

इत्तफाक की बात कि उस दिन एक बूढ़ा जादूगर[11] उधर से गुजरा और रास्ते में भूसा बिखरा देखा तो सोचा यह तो बड़ी अच्छी चीज़ है। उसने वह भूसा उठा लिया और उसको अपने घर की तरफ जाने वाले रास्ते पर बिखरा दिया।

जब किसान की बेटी अपने पिता के लिये खाना ले जाने लगी तो अपने पिता के कहे अनुसार वह रास्ते में पड़े भूसे के पीछे चलती

[10] Don Firriulieddu – a folktale from Italy, Europe.
Adapted from the book: "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. London, 1885.
Available free at the Web Site :
https://books.google.ca/books?id=RALaAAAAMAAJ&pg=PR1&redir_esc=y#v=onepage&q&f=false

[11] Translated for the word "Magician"

गयी। इस तरह से वह अपने पिता के पास न पहुॅच कर उस जादूगर के घर पहुॅच गयी।

जब जादूगर ने उस लड़की को देखा तो उसने उससे कहा — "तुमको तो मेरी पत्नी होना चाहिये।" यह सुन कर लड़की ने रोना शुरू कर दिया।

उधर लड़की के पिता ने देखा कि उसकी बेटी तो उस दिन खाना ले कर नहीं आयी। जब वह शाम को घर पहुॅचा तो वह उसको घर में भी नहीं मिली। जब वह उसको कहीं भी नहीं मिली तो उसने भगवान से प्रार्थना की कि वह उसको एक बेटा या बेटी दे दे।

एक साल बाद उसके एक बेटा हुआ जिसका नाम उन्होंने डौन फिरीयूलीडू रखा।

जब वह बेटा तीन दिन का हुआ तो उसने पूछा "क्या आपने मेरे लिये शाल[12] बनाया? आप मुझे एक शाल दे दें और एक कुत्ता दे दें क्योंकि मुझे अपनी बहिन को ढूॅढना है।"

सो उसने शाल ओढ़ा और कुत्ता साथ लिया और अपनी बहिन को ढूॅढने चल दिया। कुछ देर चलने के बाद वह एक मैदान में आ गया जहॉ बहुत सारे आदमी खड़े हुए अपने जानवर चरा रहे थे।

[12] Translated for the word "Cloak". See its picture above.

उसने उन चरवाहों से पूछा — "ये इतने सारे जानवर किसके हैं?"

चरवाहों ने जवाब दिया — "ये सब जानवर जादूगर के हैं जो न भगवान से डरता है और न किसी सेन्ट से। वह केवल डौन फिरीयूलीडू से डरता है जो केवल तीन दिन का है और रास्ते में है।"

यह सुन कर डौन ने अपने कुत्ते को रोटी दी और कहा — "खा मेरे कुत्ते रोटी खा। और भौंक मत क्योंकि हमको अभी बहुत अच्छे अच्छे काम करने हैं।"

यह सुन कर कि वह जादूगर डौन फिरीयूलीडू से डरता है डौन फिरीयूलीडू आगे चला तो उसको बहुत सारी भेड़ें मिलीं तो उसने वहॉ भी उनके चरवाहों से पूछा — "ये इतनी सारी भेड़ें किसकी हैं?"

भेड़ों के उन चरवाहों ने भी उसको वही जवाब दिया जो जानवरों के चरवाहों ने दिया था — "ये सब भेड़ें जादूगर की हैं जो न भगवान से डरता है और न किसी सेन्ट से। वह केवल डौन फिरीयूलीडू से डरता है जो तीन दिन का है और रास्ते में है।"

अब वह जादूगर के घर तक आ पहुँचा था। वहॉ आ कर उसने जादूगर के घर का दरवाजा खटखटाया तो उसकी बहिन ने दरवाजा खोला। उसने देखा कि दरवाजे पर एक बच्चा खड़ा है तो उसने उससे पूछा — "तुम्हें कौन चाहिये?"

बच्चा बोला — "मैं तुम्हें ढूँढ रहा हूँ बहिन। मैं तुम्हारा भाई हूँ और तुम्हें घर ले जाने के लिये आया हूँ। अब तुम मॉ के पास अपने घर चलो।"

जब जादूगर ने सुना कि डौन फिरीयूलीडू वहॉ है तो वह ऊपर चला गया और डर के मारे वहॉ जा कर छिप गया।

डौन ने अपनी बहिन से पूछा — "जादूगर कहॉ है?"

"ऊपर है।"

डौन ने अपने कुत्ते से कहा — "तुम ऊपर जाओ और भौंको मैं अभी आता हूँ।"

मालिक का हुक्म पाते ही कुत्ता ऊपर चला गया और जा कर भौकने लगा। डौन फिरीयूलीडू उसके पीछे पीछे चला गया और जादूगर को मार दिया। वहॉ से उसने फिर उस जादूगर का सारा पैसा लिया और अपनी बहिन को ले कर घर वापस आ गया।

सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

4 थम्ब[13]

टौम थम्ब जैसी थम्ब की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के फ्रांस देश में कही सुनी जाती है और वहॉ यह कथा बहुत लोकप्रिय है।

बहुत समय पुरानी बात है कि एक जगह एक लकड़हारा और उसकी पत्नी रहते थे। उनके सात बच्चे थे। वे सब लड़के थे। उनका सबसे बड़ा लड़का दस साल का था और सबसे छोटा लड़का सात साल का।

लोग यह देख कर बहुत आश्चर्यचकित थे कि इस लकडहारे के इतने कम समय में इतने सारे बच्चे थे पर उसकी पत्नी को बच्चों का बहुत शौक था सो एक बार में उसने दो बच्चों से कम को जन्म ही नहीं दिया।

ये लकड़हारा पति पत्नी बहुत गरीब थे और इतने सारे बच्चों से उनको काफी परेशानी होती थी क्योंकि उनमें से उनका एक भी बच्चा अपने तरीके से अपनी कमाई नहीं कर सकता था।

वे दोनों इसलिये और भी ज़्यादा परेशान रहते थे क्योंकि उनका यह सबसे छोटा वाला बेटा काफी बीमार भी रहता था। वह मुश्किल

[13] The Thumb – a fairy tale from France, Europe. Written by Charles Perrault.
DL Ashliman has taken it from "The Blue Fairy Book", by Andrew Lang, ca. 1889.
Andrew Lang took it from, "Histoires ou contes du temps passé, avec des moralités: Contes de ma mère l'Oye", by Charles Perrault. Paris, 1697.
Edited by D. L. Ashliman. 2002.
Its English version may be read at the Web Site : https://sites.pitt.edu/~dash/perrault08.html

से ही कुछ बोल पाता था जो उन लोगों को लगता था कि वह उसकी बेवकूफी की निशानी थी। हालॉकि यह कम बोलना उसका एक बहुत अच्छा गुण था।

साइज़ में वह बहुत ही छोटा था। जब वह पैदा हुआ था तो वह एक अॅगूठे के बराबर का था इसलिये वे सब उसको छोटा अॅगूठा कह कर ही पुकारते थे।

इसके अलावा घर में कोई भी गलती करता तो सारे लोग उस गलती का इलजाम भी उसी के सिर मढ़ देते चाहे उस बेचारे की कोई गलती होती या नहीं।

पर वह बहुत चालाक और होशियार था। उसमें उसके बाकी भाइयों की अक्ल मिला कर भी उन सबसे ज़्यादा अक्ल थी। हालॉकि वह बोलता बहुत कम था पर सुनता बहुत था।

एक साल बहुत बुरा आया। उस साल बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा तो उन लोगों ने अपने बच्चों को घर में से कहीं बाहर निकालने का फैसला किया।

एक शाम जब सब बच्चे सोने चले गये और लकड़हारा अपनी पत्नी के पास आग के पास बैठा था उसने दुख से फटते हुए दिल से अपनी पत्नी से कहा।

"प्रिये, तुम तो देख ही रही हो कि इस अकाल के समय में हमको अपने बच्चों को रखने में कितनी परेशानी हो रही है और मैं इन बच्चों को अपनी ऑखों के सामने भूखे मरते नहीं देख सकता।

मैंने उनको कल जंगल में छोड़ने का विचार बना लिया है। और यह काम आसान है। जब वे लकड़ियों के गट्ठर बॉध रहे होंगे तो हम उनकी नजर बचा कर उनको वहॉ छोड़ कर चले आयेंगे।"

यह सुन कर उसकी पत्नी रो पड़ी और बोली — "क्या तुम्हारा दिल इतना सख्त है कि तुम इन मासूम से बच्चों को जंगल में अकेले छोड़ आओगे?"

लकड़हारे ने उसको अपनी गरीबी की हालत समझाने की बहुत कोशिश की पर उसकी पत्नी कुछ सुनने को तैयार नहीं थी। वह गरीब जरूर थी पर वह उन बच्चों की मॉ थी।पर अपनी हालत देख कर आखिर वह उन बच्चों को जंगल में छोड़ने को तैयार हो गयी और रोते रोते सोने चली गयी।

छोटा अॅगूठा अपने बिस्तर में लेटे लेटे उन दोनों की सारी बातें सुन रहा था। जब वे लोग बात कर रहे थे तो वह धीरे से उठा और यह सुनने के लिये कि वे क्या बात कर रहे थे जा कर अपने पिता के स्टूल के नीचे छिप गया।

उनकी बातें सुनने के बाद वह फिर अपने बिस्तर पर चला गया पर न तो वह वहॉ सोया और न ही उसने वहॉ अपनी ऑख ही झपकायी। वह तो रात भर बस यही सोचता रहा कि कल उसे क्या करना है।

वह सुबह बहुत जल्दी उठ गया और नदी के किनारे चला गया। वहॉ से उसने कुछ छोटे छोटे सफेद पत्थर चुने और घर वापस आ गया।

सुबह सभी जंगल जाने के लिये तैयार हो कर बाहर चल दिये पर छोटे अॅगूठे ने जो कुछ भी उसने रात को अपने माता पिता के बीच हुई बात सुनी थी उसका एक शब्द भी अपने भाइयों से नहीं कहा।

चलते चलते वे सब एक घने जंगल में पहुॅच गये। वह जंगल इतना घना था कि किसी को दस कदम दूर की भी कोई चीज़ दिखायी नहीं देती थी।

वहॉ पहुॅच कर लकड़हारे ने अपना काम शुरू कर दिया और बच्चों ने लकड़ी के गट्ठर बॉधने शुरू कर दिये। जब बच्चों के माता पिता ने देखा कि बच्चे तो अपने काम में लग गये हैं तो वे चुपके से वहॉ से खिसक लिये। झाड़ियों के सहारे सहारे चलते चलते वे एक दूसर रास्ते से घर आ गये।

कुछ देर बाद ही बच्चों ने देखा कि उनके माता पिता तो वहॉ कहीं नहीं हैं और वे तो जंगल में अकेले रह गये हैं तो उन्होंने सबने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया।

छोटे अॅगूठे ने उनको थोड़ी देर तक तो रोने दिया क्योंकि वह जानता था कि वह उन सबको घर वापस ले जा सकता था।

क्योंकि जंगल आते समय वह नदी से लाये हुए अपने सफेद पत्थर रास्ते में थोड़ी थोड़ी दूर पर डालता आया था और अब उन्हीं के सहारे वह उन सबको घर वापस चला जायेगा।

थोड़ी देर बाद वह बोला — "भैया, रोओ नहीं। हमारे माता पिता हमको यहॉ छोड़ गये हैं पर मैं तुम सबको घर ले जाऊॅगा बस तुम सब मेरे पीछे पीछे चलते चले आओ।"

सो छोटे अॅगूठे ने उनको रास्ता दिखाया और वे सब उसी रास्ते पर चल कर घर पहुॅच गये जिससे वे आये थे। पर उनकी घर के अन्दर जाने की हिम्मत नहीं हुई। वे सब दरवाजे पर ही बैठ गये और अपने माता पिता की बात सुनने लगे जो वे उस समय कर रहे थे।

लकड़हारा और उसकी पत्नी भी अभी अभी घर आये ही थे कि उनका मकान मालिक उनको बीस क्राउन[14] दे गया जो उसने बहुत पहले कभी उन लोगों से उधार लिये थे और जिनको वह वापस पाने की उम्मीद भी नहीं कर रहे थे।

इस पैसे से तो लकड़हारे को नयी ज़िन्दगी मिल गयी। उसने तुरन्त ही अपनी पत्नी को कसाई की दूकान पर मॉस लाने के लिये भेजा। वह भी वहॉ से अपने दोनों की जरूरत से तीन गुना ज़्यादा मॉस ले आयी।

[14] Crown – the then currency used in Europe

जब वे दोनों खाना खा चुके तो पत्नी बोली — "अफसोस हमारे बच्चे पता नहीं कहॉ होंगे। अगर वह यहॉ होते तो उनको भी कितना अच्छा खाना मिलता। विलियम[15], तुमको उनको जंगल में छोड़ने के लिये किसने कहा था? मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि तुम उनको जंगल में छोड़ने के बाद पछताओगे।

पता नहीं वे जंगल में इस समय क्या कर रहे होंगे। हे भगवान कहीं उन सबको भेड़िया ही न खा गया हो। तुमने उनको जंगल में इस तरह अकेला छोड़ कर कोई इन्सानियत का काम नहीं किया।"

इतना सब सुन कर लकड़हारे का धीरज छूट गया क्योंकि उसकी पत्नी ने यह सब उससे कम से कम बीस बार से ज़्यादा कहा होगा कि वे लोग बच्चों को जंगल में इस तरह से अकेला छोड़ कर पछतायेंगे। और उसने ठीक भी कहा था।

फिर भी लकड़हारे ने उसको डॉटा कि अगर वह चुप नहीं रही तो वह उसको बहुत पीटेगा। ऐसा नहीं था कि लकड़हारे को इस बात का कुछ कम दुख था कि वह अपने बच्चों को जंगल में अकेला छोड़ आया था पर क्योंकि वह उसको बार बार यह सब कह रही थी यही उसको बुरा लग रहा था।

वह भी दूसरों की तरह से यही मानता था कि पत्नियॉ अक्सर सही ही बोलती हैं पर उनको उस बात को बार बार नहीं कहना चाहिये।

[15] William – name of the woodcutter

उसकी पत्नी तो बस रोये जा रही थी और रोये जा रही थी — "ओह मेरे बच्चे पता नहीं कहॉ होंगे। मेरे प्यारे बच्चे।"

अबकी बार उसने यह इतनी ज़ोर से कहा कि दरवाजे के बाहर बैठे उसके सारे बच्चे ज़ोर से रो पड़े और चिल्ला कर बोले — "मॉ हम यहॉ हैं, मॉ हम यहॉ हैं।"

अपने बच्चों की आवाज सुन कर उनकी मॉ दरवाजे की तरफ दरवाजा खोलने दौड़ी। दरवाजा खोल कर उसने अपने बच्चों को गले लगाया और बोली — "ओह तुम सबको यहॉ देख कर मैं कितनी खुश हूँ मेरे बच्चों। तुम सबको भूख लगी होगी और तुम लोग थके हुए भी होगे। आओ चलो खाना खा लो।

और मेरा बेचारा यह पीटर, यह तो बहुत ही गन्दा हो रहा है। चल अन्दर चल पहले मैं तुझे नहला दूँ।"

पीटर उनका सबसे बड़ा बेटा था जिसको वह सबसे ज़्यादा प्यार करती थी क्योंकि उसके बाल लाल थे जैसे कि उसके अपने थे।

पहले उसने पीटर को नहलाया फिर सब खाना खाने बैठे और सबने खूब पेट भर कर खाना खाया। इससे उनके माता और पिता दोनों ही बहुत खुश हुए।

बच्चों ने उनको बताया कि वे जंगल में कितना डर गये थे। यह सब वे एक साथ बोल रहे थे। माता पिता दोनों ही अपने बच्चों को एक बार फिर से घर में देख कर बहुत खुश थे।

यह खुशी तब तक चलती रही जब तक दस काउन बचे पर फिर जब सारा ही पैसा खत्म हो गया तो वे फिर बेचैन हो गये और वे बच्चों को फिर से जंगल में छोड़ने के लिये सोचने लगे।

इस बार उन्होंने उनको जंगल में और ज़्यादा दूर ले जा कर छोड़ने का प्लान बनाया।

हालॉकि इसके बारे में वे यह सब बहुत ही चुपचाप बात कर रहे थे पर फिर भी छोटे अॅगूठे ने सब कुछ सुन लिया। उसने पिछली बार की तरह से इस मुसीबत से निकलने का वही प्लान बनाया जो पहले बनाया था।

कि वह नदी से फिर से पत्थर चुन लायेगा और फिर से उनको जंगल जाते समय रास्ते भर गिराता जायेगा और लौटते समय फिर से उनको देख कर घर वापस आ जायेगा।

सुबह को वह नदी से पत्थर लाने के लिये बहुत जल्दी उठा पर वह घर के बाहर ही न जा सका क्योंकि उस दिन घर का दरवाजा बन्द था और उसमें ताला भी लगा था।

सुबह को उनके पिता ने उनको नाश्ते के लिये डबल रोटी का एक एक टुकड़ा दिया। छोटे अॅगूठे को लगा कि वह इस डबल रोटी का इस्तेमाल उन सफेद पत्थरों की तरह कर लेगा।

वह उस डबल रोटी के छोटे छोटे टुकड़े रास्ते में डालता जायेगा और फिर उन्हीं के सहारे घर वापस आ जायेगा। सो उसने अपनी डबल रोटी खायी नहीं और अपनी जेब में रख ली।

बच्चों के माता पिता उनको इस बार जंगल के एक बहुत ही घने हिस्से में ले गये और वहॉ उनको पहले की तरह अकेला छोड़ कर घर वापस आ गये।

छोटे अॅगूठे को इस बार भी कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि वह सोच रहा था कि वह पहले की तरह से उन डबल रोटी के टुकड़ों के सहारे घर पहुॅच जायेगा जो वह आते समय रास्ते में डालता आया था।

सो जब वे लोग अकेले रह गये तो छोटे अॅगूठे ने फिर अपने भाइयों को तसल्ली दी और घर लौटने का रास्ता ढूॅढने के लिये अपने डाले हुए डबल रोटी के टुकड़े ढूॅढने लगा।

पर आश्चर्य उसको तो डबल रोटी का एक छोटा सा टुकड़ा भी दिखायी नहीं दिया। उन डबल रोटी के टुकड़ों को तो चिड़ियें दिन में ही आ कर खा गयी थीं।

अब तो वे सब बहुत परेशान हुए। क्योंकि जितना वे आगे चलते जाते थे उतना ही वे अपने आपको और घने जंगल में पाते जाते थे।

रात होने वाली हो रही थी और हवा भी बहुत तेज़ हो गयी थी। जंगल में वह तेज़ हवा इतनी आवाजें कर रही थी कि वे सभी बहुत डर रहे थे। डर के मारे न तो वे कुछ बोल पा रहे थे और न ही अपना सिर घुमा कर इधर उधर कुछ देख पा रहे थे।

इसके बाद बारिश आ गयी जिससे वे पूरे के पूरे भीग गये और जंगल में बार बार फिसल कर गिरने लगे। वे कीचड़ में लथपथ हो गये और ठंड की वजह से उनके हाथ पैर सुन्न पड़ने लगे।

छोटा ऑगूठा यह देखने के लिये एक पेड़ पर चढ़ गया कि शायद उसको कहीं कुछ दिखायी दे जाये। उसने वहॉ चारों तरफ अपना सिर घुमा घुमा कर देखा तो उसको बहुत दूर एक बहुत छोटी सी रोशनी चमकती दिखायी दी जैसे किसी मोमबत्ती की रोशनी होती है।

वह पेड़ से नीचे उतरा पर जमीन पर से उसको वह रोशनी दिखायी नहीं दे रही थी इससे उसको बहुत चिन्ता हुई। फिर भी वह अपने भाइयों के साथ उस तरफ चला जिस तरफ उसने वह रोशनी देखी थी। धीरे धीरे वे जंगल से बाहर आ गये और रोशनी के पास भी आ गये।

यह रोशनी एक घर में जल रही थी। पर वहॉ जाने में तो इनको डर ही डर लग रहा था क्योंकि जैसे जैसे वे उस रोशनी की तरफ बढ़ते जा रहे थे वह रोशनी उनसे दूर होती जा रही थी।

आखिरकार वे उस घर तक आ पहुॅचे जिसमें वह रोशनी जल रही थी। वहॉ आ कर उन्होंने घर का दरवाजा खटखटाया। एक भली सी स्त्री ने दरवाजा खोला और उनसे पूछा कि उनको क्या चाहिये।

छोटा अॅगूठा बोला कि वे गरीब बच्चे थे जो जंगल में खो गये थे सो भगवान के लिये वह रात को रहने की जगह चाहते थे।

उस स्त्री ने देखा कि वे बच्चे देखने में अच्छे थे तो उनको देख कर वह रो पड़ी और उनसे पूछा — "बच्चो, तुम लोग कहॉ से आये हो? क्या तुम लोगों को मालूम हे कि यह मकान एक बेरहम ओगरे[16] का है जो छोटे बच्चों को खा जाता है?"

यह सुन कर तो सारे बच्चे डर के मारे कॉपने लगे। छोटा अॅगूठा भी कॉपने लगा था पर फिर भी हिम्मत कर के बोला — "मैम, फिर हम क्या करें अगर आप हमको यहॉ सोने नहीं देंगी तो जंगल में भेड़िये हमको खा जायेंगे।

हम चाहते हैं कि बजाय भेड़िये के यह भला आदमी ही हमको खा जाये। और यह भी हो सकता है कि उसको हमारे ऊपर दया आ जाये और वह हमको छोड़ दे, खास कर के अगर आप उससे हमारी ज़िन्दगी की भीख मॉगें तो।"

ओगरे की पत्नी को लगा कि वह उन बच्चों को अपने पति से सुबह तक के लिये छिपा सकती है सो उसने उनको घर के अन्दर बुला लिया। आग जला कर उनको उसके पास बिठा कर उनकी ठंड दूर की।

[16] An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings. See his picture above.

उस ओगरे के खाने के लिये एक पूरी की पूरी भेड़ आग पर भुन रही थी। जब बच्चों को थोड़ा गरमी आ गयी तो उन्होंने दरवाजे पर तीन चार बार खटखटाहट सुनी। यह ओगरे था जो अब घर वापस लौट आया था।

ओगरे के आने की आवाज सुन कर उसकी पत्नी ने बच्चों को पलंग के नीचे छिपा दिया और फिर अपने पति के लिये दरवाजा खोला।

ओगरे ने आते ही पूछा कि उसका खाना तैयार था कि नहीं। ओगरे की पत्नी ने कहा कि उसका खाना तैयार था। ओगरे ने शराब निकाली और मेज पर बैठ गया। वह भेड़ अभी कच्ची थी और खून से भरी थी पर उसको वह वैसी ही अच्छी लगती थी।

फिर उसने अपने चारों तरफ सूँघा और बोला कि उसको तो कहीं से ताजा मॉस की खुशबू आ रही थी। उसकी पत्नी बोली — "मैंने अभी एक बछड़ा काटा है तुमको उसी की खुशबू आ रही होगी।"

पर ओगरे अपनी बात पर अड़ा रहा और गुस्से से अपनी पत्नी की तरफ देख कर बोला — "मैं कह रहा हूँ न कि मुझे ताजा मॉस की खुशबू आ रही है। और यहॉ पर भी कुछ है जो मैं समझ नहीं पा रहा हूँ।"

यह बोलते बोलते वह मेज पर से उठ गया और सीधा पलंग के पास गया और उसके नीचे झॉकता हुआ बोला — "आहा, अब मैं

देखता हूँ कि तू मुझे कैसे धोखा देती है ओ नीच स्त्री। पता नहीं मैं तुझको ही क्यों नहीं खा सकता।

यह तो तेरी अच्छी किस्मत है कि तू इतनी सख्त है पर यहॉ तो आज बहुत ही अच्छा शिकार है जो आज मुझे मेरे तीन ओगरे दोस्तों के लिये मिल गया है। मेरे वे दोस्त बस एक दो दिन में यहॉ आने ही वाले हैं।"

यह कहते हुए उसने उन सब बच्चों को एक एक कर के पलंग के नीचे से बाहर खींच लिया। बच्चे बेचारे अपने घुटनों पर बैठ गये और उससे दया की भीख मॉगने लगे।

पर यह तो उनको मालूम ही नहीं था कि वे तो दुनियॉ के सबसे ज़्यादा बेरहम ओगरे से बात कर रहे थे। उसके दिल में दया तो दूर उसने तो उनको अपनी नजरों से ही खा लिया था।

उसने अपनी पत्नी से कहा — "ये तो बहुत ही नरम हैं सो ये नमकीन सौस से खाने में ज़्यादा अच्छे लगेंगे।"

फिर उसने एक बड़ा सा चाकू उठाया और अपने बॉये हाथ में पकड़े पत्थर पर घिस कर उसको तेज़ करने लगा। फिर उसने एक बच्चे को मारने के लिये पकड़ लिया तो उसकी पत्नी बोली — "तुम इसको अभी क्यों मारते हो? कल ठीक नहीं रहेगा क्या?"

ओगरे चिल्लाया — "तू अपनी यह सब बातें बन्द कर। अगर मैं इनको अभी मारूँगा तो इनका मॉस ज़्यादा नरम रहेगा।"

उसकी पत्नी बोली — "पर अभी तो तुम्हारे पास बहुत सारा मॉस है खाने के लिये। तुमको अभी इनको खाने की जरूरत नहीं है। देखो न तुम्हारे पास खाने के लिये यह बछड़ा है, दो भेड़ हैं, आधा सूअर है। क्या इतना काफी नहीं है?"

ओगरे बोला — "यह तो तू ठीक कहती है। ठीक है तू इन को ठीक से खाना खिला ताकि ये दुबले न हो जायें।"

वह भली स्त्री यह सुन कर बहुत खुश हुई कि उसने उन बच्चों को कम से कम एक रात के लिये तो बचा ही लिया। उसने उन बच्चों को बहुत अच्छा खाना खिलाया पर वे बच्चे इतने डरे हुए थे कि वे बेचारे कुछ खा ही नहीं सके।

ओगरे फिर से अपनी शराब पीने बैठ गया था। वह बहुत खुश था कि आज उसके पास अपने दोस्तों को खिलाने के लिये कुछ अच्छी चीज़ थी। आज तो उसने दर्जनों गिलास शराब पी जो उसके सिर में चढ़ गयी और उसको बहुत जल्दी ही नींद आने लगी।

ओगरे के सात छोटी छोटी बेटियॉ थीं। वे सब बहुत गोरी थीं क्योंकि वे सब अपने पिता की तरह से ताजा मॉस खाती थीं। पर उनकी ऑखें छोटी, कुछ गोल और भूरी थीं। उनकी नाक थोड़ी मुड़ी हुई थी और उनके दॉत बहुत तेज़ और एकसार थे।

अभी तो वे ज़्यादा शरारतें नहीं करती थीं पर ऐसा लगता था कि जब वे बड़ी हो जायेंगी तब जरूर करेंगी क्योंकि उन्होंने तो अभी ही उन बच्चों को उनका खून पीने के लिये काट लिया था।

वे जल्दी सोने चली जाती थीं। वे एक बड़े से पलंग पर सोती थीं और सोते समय भी उनके हर एक के सिर पर एक सोने का ताज होता था।

ओगरे की पत्नी ने उन सातों लड़कों को टोपियॉ पहना दीं और उनको भी उसी कमरे में सोने के लिये एक बड़ा पलंग दे कर वह खुद भी सोने चली गयी।

छोटे अॅगूठे ने देखा कि ओगरे की बेटियॉ अपने सिरों पर ताज पहने थीं तो उसने सोचा कि पता नहीं ओगरे अपना दिमाग उन सब को मारने के बारे में बदले या नहीं बदले तो वे बेचारे तो बेमौत ही मारे जायेंगे।

सो वह आधी रात को उठा और अपने और अपने भाइयों की टोपियॉ उतार कर ओगरे की बेटियों के पलंग की तरफ चला।

वहॉ जा कर उसने उनके ताज उतार लिये और अपने भाइयों की टोपियॉ उनके सिर पर पहना दीं और उनके ताज ला कर अपने और अपने भाइयों के सिर पर पहन लिये ताकि वह ओगरे उनको अपनी बेटियॉ समझ कर न मारे जिनको वह मारना चाहता था।

यह सब उसके प्लान के अनुसार ठीक ही हुआ क्योंकि ओगरे ने उन बच्चों को अगले दिन का मारने का प्लान रोक कर उनको उसी रात को मारने का प्लान बना लिया।

वह आधी रात को उठा और अपना बड़ा चाकू ले कर उस कमरे में आया जहॉ सब बच्चे सोये हुए थे। उसने सोचा कि ऐसी

गलती वह दोबारा नहीं करेगा कि बच्चों को मारने का काम वह कल पर छोड़ दे।

उसने देखा कि एक पलंग पर सात बच्चे ताज लगा कर सोये हुए थे और दूसरे पलंग पर सात बच्चे टोपी ओढ़ कर सोये हुए थे। इन ताज वाले सात बच्चों में से केवल छोटा अॅगूठा ही जागा हुआ था बाकी सब गहरी नींद सोये हुए थे।

ओगरे उधर आया जिधर बच्चे ताज लगा कर सोये हुए थे और जब उसने उन सबके ताज महसूस किये तो बोला अरे यह तो मैं कितनी बड़ी गलती करने वाला था। मैं तो अपनी ही बेटियों को ही मार देता। लगता है कि मैंने रात को कुछ ज़रा ज़्यादा ही पी ली थी। चलता हूॅ पलंग के दूसरी तरफ चलता हूॅ।

फिर वह उस पलंग की तरफ गया जहॉ उसकी बेटियॉ लेटी हुई थीं। वहॉ उसने लड़कों की टोपियॉ महसूस की तो वह खुश हो कर बोला — "आहा तो ये हैं मेरे वे लड़के जिनको मुझे मारना है।"

तुरन्त ही उसने बिना किसी हिचक के अपनी सातों बेटियों के सिर काट दिये।

खुश हो कर कि उसने जो कुछ किया अच्छा ही किया वह फिर से अपने बिस्तर पर चला गया और लेट कर खर्राटे मारने लगा।

जैसे ही छोटे अॅगूठे ने ओगरे को खर्राटे मारते सुना उसने अपने भाइयों को जल्दी से जगाया और कपड़े पहन कर तैयार होने को

कहा। तैयार हो जाने पर वह छोटा अॅगूठा उन सबको वहॉ से ले कर ओगरे के घर के बागीचे में निकाल कर ले गया।

वहॉ से उन सबने उस बागीचे की दीवार फॉदी और फिर वे सब रात भर भागते रहे। वे सब डर के मारे कॉप रहे थे और उनको यह भी पता नहीं था कि वे किधर की तरफ भाग रहे थे।

सुबह को जब ओगरे उठा तो उसने अपनी पत्नी से कहा — "जा ऊपर जा और उन सब गधों को तैयार कर के यहॉ ले आ जो कल रात यहॉ आये थे।"

ओगरे की पत्नी अपने पति की इस अच्छाई पर बहुत चकित थी। उसने तो सपने में भी नहीं सोचा था कि ओगरे उन बच्चों को किस तरह तैयार करने की सोच रहा था। वह तो यह सोचे बैठी थी कि ओगरे ने उसको उनको कपड़े पहना कर वहॉ लाने के लिये कहा था।

वह तुरन्त ऊपर गयी पर वहॉ यह देख कर तो वह दुख से पागल सी हो गयी कि उसकी अपनी सातों बेटियों के गले कटे पड़े थे और वे अपने ही खून में लथपथ पड़ी थीं। वह तो उनको देखते ही बेहोश हो गयी।

उधर ओगरे ने सोचा कि उसकी पत्नी को उन सबको तैयार करने में काफी समय लग रहा है तो वह उसकी सहायता करने के लिये खुद ऊपर गया। वहॉ जा कर उसने भी जो कुछ देखा उससे वह खुद भी कोई कम आश्चर्यचकित नहीं हुआ।

वह रो कर बोला — "ओह यह मैंने क्या किया। मैंने तो अपनी ही बेटियों को मार दिया। उन कमीनों को इसका बहुत जल्दी बदला चुकाना पड़ेगा।"

फिर उसने अपनी पत्नी को होश में लाने के लिये उसके चेहरे पर ठंडा पानी फेंका। जैसे ही वह होश में आयी तो उससे बोला — "जल्दी से मेरे सात लीग वाले जूते[17] ले कर आ ताकि मैं उन सबको पकड़ सकूँ।"

ओगरे की पत्नी उसके सात लीग वाले जूते ले आयी। उनको पहन कर वह ओगरे उन लड़कों की तलाश में धरती पर चारों तरफ घूमता रहा। आखिर वह उस सड़क पर आ गया जिस पर वे बच्चे थे। वे बच्चे भी अब अपने घर से सौ कदम की दूरी पर भी नहीं थे।

बच्चों ने ओगरे को पहाड़ों के ऊपर से और नदी पार कर के ऐसे आते हुए देखा जैसे बच्चे कूदते फॉदते चले आते हैं। उसको इस तरह आता देख कर छोटा अँगूठा और उसके भाई वहीं पास की एक गुफा में छिप गये और ओगरे को देखते रहे।

[17] A league is a unit of length. It was long common in Europe and Latin America, but it is no longer an official unit in any nation. The word originally meant the distance a person could walk in an hour. On land, the league was most commonly defined as three miles, though the length of a mile could vary from place to place and depending on the era. At sea, a league was three nautical miles (6,076 yards; 5.556 kilometers). So it all depends on the era and place. Seven League shoes means that those shoes could take their wearer 7 leagues in one stride.

ओगरे अपनी इस लम्बी और बेकार यात्रा से इस समय बहुत थका हुआ था सो उसने वहॉ आराम करने का निश्चय किया। इत्तफाक से वह उसी चट्टान के ऊपर बैठ गया जिसकी गुफा में बच्चे छिपे हुए थे। वह इतना थक गया था कि बैठते ही उसको नींद आ गयी और वह सो गया।

सोते ही वह खर्राटे मारने लगा। उसके खर्राटों से तो बच्चे इतने डर गये जितना कि वे तब भी नहीं डरे थे जब उसने उनका गला काटने के लिये अपना चाकू निकाला था। पर छोटा अॅगूठा इतना ज़्यादा नहीं डर रहा था।

उसने अपने भाइयों से कहा कि वे तुरन्त ही अपने घर भाग जायें जब तक यह ओगरे यहॉ सोता है। और उनको उसके बारे में चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। वह भी घर जल्दी ही पहुॅच जायेगा। उसके भाई तुरन्त ही वहॉ से घर भाग गये।

छोटा अॅगूठा चुपचाप ओगरे के पास आया और उसने ओगरे के पैरों में से उसके सात लीग वाले जूते निकाले और उनको अपने पैरों में पहन लिया।

वे जूते बहुत लम्बे और बड़े थे पर क्योंकि वे जादुई जूते थे उसके पैरों आ कर वे उसी के पैरों के साइज़ के हो गये। उनको पहन कर वह तुरन्त ओगरे के घर गया जहॉ उसकी पत्नी अपनी बेटियों के मरने के गम में रो रही थी।

छोटा अॅगूठा वहॉ जा कर बोला — "आपके पति खतरे में हैं। उनको चोरों के एक गिरोह ने पकड़ लिया है। अगर उन्होंने उन चोरों को अपना सारा सोना चॉदी और अपना सारा कीमती सामान नहीं दिया तो वे उनको मार डालेंगे।

जब मैं वहॉ से चला तो वे उनकी गरदन पर अपना चाकू रखे हुए थे। उन्होंने मुझसे कहा कि मैं यह सब आपसे कह दूॅ। क्योंकि यह सब करना बहुत जल्दी था इसलिये उन्होंने मुझे आपके पति के ये जूते पहना कर यहॉ भेज दिया।"

वह भली स्त्री बेचारी तो पहले से ही बहुत दुखी थी और यह सुन कर तो और भी दुखी हो गयी।

हालॉकि उसके पति ने इसके बच्चों को मार डाला था फिर भी उसने उसको बचाने के लिये घर में जितना भी सोना चॉदी और कीमती सामान था सब उस छोटे अॅगूठे को दे दिया और वह छोटा अॅगूठा भी उस सब सामान को ले कर वहॉ से चला गया।

वह सब सामान ले कर छोटा अॅगूठा अपने घर पहुॅचा जहॉ उसके माता पिता उसको इतने सारे पैसे के साथ देख कर बहुत खुश हुए।

बहुत सारे लोग हैं जो इस बात को नहीं मानते कि छोटे अॅगूठे ने ओगरे को कभी लूटा। उनका कहना है कि छोटा अॅगूठा वहॉ से केवल सात लीग वाले जूते और अपना अच्छा दिल ले कर ही चला आया था क्योंकि उन सात लीग वाले जूतों को तो ओगरे केवल

छोटे बच्चों का पीछा करने के लिये ही इस्तेमाल करता था और वे उसने उस ओगरे से ले ही लिये थे।

इस बात को मानने वालों का यह भी दावा है कि वे यह बात इसलिये कह सकते हैं कि उन्होंने कई बार उस लकड़हारे के घर में खाया पिया है। वह इतना अमीर भी नहीं था कि जिसको देख कर यह सोचा जा सके कि उसको कहीं से काफी पैसा मिल गया है।

इन लोगों का यह भी कहना है कि घर आ कर छोटे अॅगूठे ने ओगरे के सात लीग वाले जूते निकाल दिये।

फिर वह शाही दरबार गया जहॉ किसी लड़ाई के नतीजे और किसी फौज के बारे में काफी बहस हो रही थी जो वहॉ से **200** लीग दूर थी।

वह राजा के पास गया और उससे कहा कि अगर वह चाहे तो रात होने से पहले पहले वह वहॉ जा कर उस फौज की खबर ला सकता है।

राजा ने खुश हो कर कहा कि अगर वह ऐसा कर सका तो वह उसको मालामाल कर देगा। छोटे अॅगूठे ने अपनी बात रखी और उस फौज की खबर ले कर रात होने से पहले पहले ही लौट आया।

उसके इस पहले काम ने उसको बहुत मशहूर कर दिया और फिर वह अपने कामों की अपनी कीमत मॉगने लगा।

राजा के हुक्म को फौज तक पहुॅचाने के लिये न केवल राजा ने ही उसको मनमाना पैसा नहीं दिया बल्कि शाही दरबार की कुलीन

स्त्रियों ने भी उसको अपने पति और प्रेमियों की खबरें लाने के लिये बहुत पैसा दिया।

कभी कभी वे कुलीन पत्नी स्त्रियॉ उसको अपनी चिट्ठियॉ लाने ले जाने के लिये भी कहती थीं पर इस काम के लिये वे उसको बहुत कम पैसा देती थीं। इतने कम पैसे का तो वह कोई हिसाब भी नहीं रखता था।

इस तरीके से सन्देशवाहक का काम करने के बाद वह फिर अपने पिता के पास चला गया। उसका पिता उसको देख कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने सारे परिवार को बहुत सुखी बना दिया था। अब सब लोग उसको बहुत प्यार करते थे और उसकी बहुत इज़्ज़त करते थे।

ज़्यादा बच्चों का होना कोई बुरी बात नहीं है अगर वे सुन्दर, ताकतवर और अक्लमन्द हों तो। ज़्यादातर ऐसा देखा गया है कि सबसे छोटा वाला बच्चा परिवार के लिये अच्छी किस्मत ले कर आता है।

5 छोटा पौसेट[18]

टौम थम्ब जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के ब्रिटेन देश की लोक कथाओं से ली है। यह लोक कथा इससे पहले की लोक कथा थम्ब जैसी ही है पर ब्रिटेन में यह इस तरह से कही सुनी जाती है।

बहुत समय पुरानी बात है कि ब्रिटेन में एक पति पत्नी अपने सात लड़कों के साथ किसी जंगल के पास रहते थे। वे लकड़ियॉ इकट्ठी कर के बाजार में बेचते और उसी से अपना और अपने बच्चों का गुजारा करते।

उनका सबसे बड़ा लड़का दस साल का था और सबसे छोटा सात साल का। सारे लोग आश्चर्य करते कि इतने कम समय में उनके इतने ज़्यादा बच्चे कैसे हो गये पर यह ऐसे हुआ कि उसके ये बच्चे जुड़वॉ थे।

ये लोग बहुत गरीब थे और इन लोगों से अपने बच्चों का पालन ठीक से नहीं हो पा रहा था। पर अगर उनको सबसे ज़्यादा चिन्ता थी तो अपने सबसे छोटे बेटे की क्योंकि वह बहुत ही नाजुक और शान्त स्वभाव का था।

[18] Little Paucett – a folktale of United Kingdom, Europe.
[This story is like “Thumb” told and heard in France.]

जब वह पैदा हुआ था तब वह केवल अॅगूठे के बराबर था सो उन्होंने उसका नाम छोटा पौसेट[19] रख दिया था जिसका मतलब होता है "छोटा अॅगूठा"।

हर समय लोग बेचारे छोटे पौसेट पर हॅसते रहते पर उसको इस बात की कोई परवाह नहीं थी। वह था बहुत अक्लमन्द। वह सोचता ज़्यादा था और बोलता कम था।

एक साल बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा। पति पत्नी बहुत घबराये और अपने बच्चों से छुटकारा पाने की कोई तरकीब सोचने लगे।

एक रात की बात है कि लकड़हारा अपनी पत्नी के साथ आग के पास बैठा था और बच्चे सो गये थे। वह लकड़हारा बड़े दुख के साथ बोला — "मैरी[20], देखो, हम अब अपने बच्चों को अपने साथ नहीं रख सकते क्योंकि मैं उनको अपने सामने भूखे मरते नहीं देख सकता।

मैं इन्हें कल जंगल में छोड़ आऊॅगा और यह काम बड़ी आसानी से हो सकता है। जब ये लोग लकड़ी के गट्ठर बॉधने में लगे होंगे तब हम लोग इनको वहीं छोड़ कर घर चले आयेंगे।"

यह सुन कर पत्नी की ऑखों में ऑसू आ गये। वह रोती हुई बोली — "धीरज रखो निकोलस[21], अभी इन्हें अपने साथ ही रखो।

[19] Little Paucett

[20] Mary – name of the wife of the woodcutter

[21] Nicholas – name of the woodcutter

तुम्हारा दिल इन प्यारे प्यारे बच्चों को जंगल में अकेला छोड़ने को कैसे करता है?"

निकोलस ने समझाया कि वह अपनी गरीबी की वजह से उनको अपने साथ नहीं रख सकता था वरना बच्चों को तो वह भी बहुत प्यार करता था। फिर यह सोच कर कि वह उनको अपने सामने भूखों मरते नहीं देख पायेगी मैरी भी इस बात पर राजी हो गयी।

छोटे पौसेट ने अपने माता पिता की ये बातें कुछ सुनी कुछ नहीं सुनी परन्तु वह यह समझ गया कि कल कुछ होने वाला है। माता पिता के सोने के बाद वह चुपके से उठा और पास की नदी के किनारे से कुछ छोटे छोटे पत्थर बीन लाया और आ कर सो गया।

छोटे पौसेट ने रात वाली घटना किसी को नहीं बतायी। सुबह को वे सभी लोग लकड़ी लाने जंगल गये। जब वे लोग जंगल जा रहे थे तो छोटा पौसेट रास्ते में वे नदी से उठाये हुए पत्थर कुछ कुछ दूरी पर डालता गया।

चलते चलते वे लोग इतने घने जंगल में पहुॅच गये कि जहॉ पर दस फुट की दूरी पर भी कोई किसी को नहीं देख सकता था।

लकड़हारे ने लकड़ियॉ काटनी शुरू कीं और बच्चों ने उनके गट्ठर बॉधने शुरू किये। माता पिता ने देखा कि बच्चे लकड़ियों के गट्ठर बॉधने में लगे हैं सो वे उनको वहीं छोड़ कर टेढ़े मेढ़े रास्तों से हो कर घर चले आये।

कुछ देर बाद बच्चों ने देखा कि उनके माता पिता का तो कहीं पता ही नहीं है। छोटे पौसेट को छोड़ कर सभी बच्चों ने रोना शरू कर दिया।

छोटे पौसेट ने अपने सब भाइयों को चुप कराया और बोला — "डरो नहीं, हमारे माता पिता हमें यहॉ छोड़ कर चले गये हैं मगर मैं तुम सबको घर वापस ले जाऊॅगा। आओ, मेरे पीछे पीछे आओ।"

क्योंकि वह जानता था कि उन पत्थरों के सहारे वह अपने घर का रास्ता ढूॅढ लेगा।

सो उसके सब भाई उसके पीछे पीछे चलते चलते उन पत्थरों के सहारे अपने घर वापस आ गये। परन्तु वे डर के मारे घर के अन्दर नहीं घुसे, घर के बाहर ही बैठे रहे।

लकड़हारा और उसकी पत्नी जैसे ही घर लौटे गॉव के मुखिया ने उन्हें दस सोने के सिक्के भिजवाये जो उसने कभी उन लोगों से उधार लिये थे। पर वे लोग क्योंकि उसको बिल्कुल ही भूल चुके थे इसलिये वे उस धन को देख कर बहुत खुश हुए।

लकड़हारे ने अपनी पत्नी को तुरन्त ही गोश्त की दूकान पर भेजा क्योंकि उन्होंने बहुत दिनों से पेट भर खाना नहीं खाया था। उसकी पत्नी अपनी आवश्यकता से तीन गुना अधिक गोश्त ले आयी और उसे पकाया।

खाने के बाद पत्नी बोली — "काश, इस समय मेरे बच्चे यहॉ होते। पता नहीं मेरे बच्चे इस समय उस घने जंगल में कहॉ भटक

रहे होंगे। कहीं उन्हें भेड़िया न खा गया हो। तुमने कितनी बेरहमी से मेरे बच्चों को जंगल में छोड़ दिया।"

यह बात वह बार बार कहती रही। आखिर लकड़हारे को गुस्सा आ गया तो उसने उसे पीटने की धमकी दी।

यह बात नहीं थी कि लकड़हारे को अपने बच्चों से प्यार नहीं था या अपने बच्चों को जंगल में छोड़ने का दुख नहीं था बल्कि यह बात उसे कुछ ज़्यादा ही खल रही थी कि पत्नी इस बात के लिये केवल उसी को जिम्मेदार ठहरा रही थी। अन्त में वह एक बार ज़ोर से यह कह कर चुप हो गयी "मेरे बच्चों तुम कहॉ हो?"

यह सुन कर दरवाजे पर बैठे सभी बच्चों ने रोना शुरू कर दिया — "हम यहॉ हैं मॉ, हम यहॉ हैं।"

पत्नी अपने बच्चों की आवाज सुन कर बहुत ही खुश हुई और दौड़ी दौड़ी दरवाजे तक जा कर दरवाजा खोला तो हर बच्चे को पुचकार कर खुशी से रो पड़ी।

फिर उसने अपने सब बच्चों को खाना खिलाया। सब बच्चों ने पेट भर कर खाना खाया और फिर सबने एक साथ बताया कि वे सब जंगल में कितना डर गये थे। माता पिता को बड़ी खुशी हुई कि उनके बच्चे वापस आ गये थे।

और यह खुशी तब तक चली जब तक वे सोने के सिक्के चले। परन्तु जैसे ही वह धन खत्म हो गया तो वे फिर परेशान हो

गये। अबकी बार उन्होंने बच्चों को और ज़्यादा घने जंगल में छोड़ने का विचार किया।

यह बात भी छोटे पौसेट ने सुन ली। उसने इस समस्या को पहले की तरह ही सुलझाने का निश्चय किया पर इस बार ऐसा न हो सका। क्योंकि अबकी बार जब वह रात को उठा तो घर का दरवाजा बन्द था सो वह बेचारा चुपचाप आ कर सो गया।

सुबह मॉ ने जब नाश्ते के लिये सब बच्चों को रोटी दी तो छोटे पौसेट को लगा कि वह इस रोटी से वह काम कर सकता था जो उसने पत्थरों से किया था।

तो सुबह सब बड़े बच्चों ने तो अपनी रोटी खा ली पर पौसेट ने अपनी रोटी बचा ली। जब वे सब जंगल गये तो वह अपनी रोटी के छोटे छोटे टुकड़े रास्ते में गिराता गया।

अबकी बार उनके माता पिता उनको और भी ज़्यादा घने जंगल में ले गये। पिछली बार की तरह जब बच्चे लकड़ियों के गट्ठर बॉध रहे थे तो उनके माता पिता उनको जंगल में छोड़ कर घर चले आये।

जब बच्चों ने देखा कि उनके माता पिता का कहीं अता पता नहीं है तो वे फिर ज़ोर ज़ोर से रोने लगे।

छोटे पौसेट ने उनको फिर समझाया कि वह आते समय रोटी के टुकड़े गिराता आया था सो वे लोग उसी के सहारे फिर से घर वापस

जा सकते हैं। पर जब छोटे पौसेट ने उन रोटी के टुकड़ों को ढूँढना शुरू किया तो उसे तो रोटी का एक टुकड़ा भी दिखायी नहीं दिया।

उन टुकड़ों को तो चिड़ियॉ खा गयी थीं। अब वे बड़ी कठिनाई में पड़े क्योंकि जितना ज़्यादा वे रास्ते की खोज में इधर उधर घूमते रहे उतना ही ज़्यादा वे जंगल में भटकते जा रहे थे।

अँधेरा होना शुरू हो गया था, तेज़ हवा भी चलने लगी थी और जंगली जानवरों की आवाजें जंगल को और भयानक बना रही थीं।

डर के मारे वे सब एक साथ बिना हिले डुले एक जगह पर बैठे हुए थे। इतने में बारिश भी होने लगी तो वे सबके सब भीग गये और डर और ठंड दोनों से कॉपने लगे।

फिर उन्होंने वहॉ से चलने का निश्चय किया। अँधेरी रात में बारिश के बाद वे जंगल में फिसलते फिसलते बच रहे थे। कभी उनका पैर गड्ढे में पड़ता तो कभी कॉटेदार झाड़ियों पर।

छोटा पौसेट बोला — "रुको भाइयो, मैं ज़रा देख लूँ अगर मुझे कहीं कुछ नजर आ जाये तो।"

कह कर वह एक पेड़ पर चढ़ गया और चारों ओर देखने लगा। दूर कहीं उसको एक झिलमिलाती रोशनी दिखायी दी तो वह खुशी से नीचे उतर आया और अपने सभी भाइयों को उधर की तरफ ले चला।

काफी दूर जाने के बाद वे एक घर के पास आ गये। उन्होंने दरवाजा खटखटाया तो एक भली सी औरत ने दरवाजा खोला और

उन बच्चों को अकेला देख कर पूछा — "अरे, इतनी रात में तुम लोग यहॉ कैसे? और यहॉ तुम कर क्या रहे हो? और क्या चाहते हो?"

पौसेट बोला — "हम लोग गरीब बच्चे हैं और जंगल में रास्ता भूल गये हैं। इस समय रात में ठहरने की जगह चाहते हैं।"

उस औरत ने देखा कि बच्चे बहुत ही सुन्दर और नेक हैं तो वह रोने लगी। फिर बोली — "ओह मेरे प्यारे बच्चो, तुम यहॉ क्यों आये? यहॉ तो एक राक्षस रहता है जो छोटे छोटे बच्चों को खा जाता है।"

छोटा पौसेट बोला — "मॉ, जंगल में भी क्या भरोसा है कि हमको भेड़िया नहीं खा जायेगा। अच्छा है अगर हमें राक्षस ही खा जाये और यह भी तो हो सकता है कि वह हमें दया कर के छोड़ ही दे।"

इस समय सभी भाई भीगे थे और ठंड से कॉप रहे थे। उनको इस हालत में देख कर उस औरत ने उन सबको अन्दर बुला लिया और रसोई में आग के पास बिठा दिया।

वहॉ उन लोगों को थोड़ा सा आराम मिला। उस आग पर राक्षस के खाने के लिये एक पूरी भेड़ भुन रही थी।

कुछ ही देर बाद राक्षस के भारी कदमों की आवाज सुनायी दी तो उस औरत ने बच्चों को पलंग के नीचे छिपा दिया और दरवाजा खोलने चली गयी।

राक्षस ने आ कर पूछा "खाना तैयार है?" और मेज पर बैठ गया। भेड़ अभी तक कच्ची थी परन्तु राक्षस को वही अच्छी लगी।

फिर उसने अपने बॉयी ओर को कुछ सूँघा और बोला — "मुझे आज यहॉ से आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

वह औरत बोली — "यह उस बछड़े की खुशबू होगी जो मैंने अभी अभी काटा और साफ किया है।"

"मैं फिर कहता हूँ कि मुझे आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है बछड़े की नहीं और तू कुछ सुन नहीं रही। यहॉ कुछ जरूर है।"

यह कह कर राक्षस अपनी मेज से उठा और सीधा पलंग के पास गया और उसके नीचे देखा तो उसको उस पलंग के नीचे सात बच्चे दिखायी दिये।

वह खुश हो कर बोला — "आहा, अब मुझे पता चला कि तू मुझे किस तरह धोखा देती है। चलो अच्छा हुआ ये बच्चे यहॉ हैं। एक दो दिन में मेरे यहॉ तीन राक्षस आने वाले हैं ये बच्चे उनके लिये अच्छा खाना है।"

गरीब बच्चे उस राक्षस के पैरों पर गिर कर अपनी जान की भीख मॉगने लगे। मगर उनके सामने तो एक कठोर राक्षस खड़ा था जिसके दिल में दया का नाम तक न था। वह राक्षस एक चाकू ले आया और उसे एक पत्थर पर घिस कर तेज़ करने लगा।

फिर उसने उन बच्चों में से एक बच्चे को पकड़ा और उसे मारने ही वाला था कि उसकी पत्नी बोली — "इसको अभी मारने की क्या

जरूरत है कल तक इन्तजार करो क्योंकि अभी हमारे पास एक बछड़ा और दो भेड़ें और हैं।"

"ठीक है, ठीक है। इनको पेट भर कर खाना खिलाओ और सुला दो।" यह कह कर राक्षस चला गया।

वह औरत यह सुन कर बहुत खुश हुई कि कम से कम इस समय तो उसने बच्चे को बचा लिया। उसने उन बच्चों को खूब अच्छा खाना खिलाया पर वे बच्चे इतने डरे हुए थे कि वे बेचारे ठीक से खाना भी न खा सके।

राक्षस फिर से शराब पीने बैठ गया। वह बहुत खुश था कि वह अब अपने मेहमानों की खातिरदारी अच्छी तरह से कर सकेगा। उसने दर्जनों गिलास शराब पी पी कर खाली कर दिये थे। फिर वह सोने चला गया।

इस राक्षस के सात लड़कियॉ थीं। वे सभी खूब गोरी और सुन्दर थीं क्योंकि उनको रोज ताजा मॉस खाने को मिलता था।

उनकी भूरी ऑखें बिल्कुल गोल थीं, मुड़ी हुई नाक थी, बड़े बड़े मुॅह थे और उनके बहुत तेज दॉत थे। वे बहुत जल्दी सो जाती थीं। वे सब एक ही पलंग पर सोतीं थीं और हमेशा उनके सिरों पर ताज रखा रहता था।

उन्हीं के कमरे में एक और बड़ा सा पलंग पड़ा हुआ था सो उस औरत ने उन सातों लड़कों को उस पलंग पर सुला दिया और फिर खुद भी सोने चली गयी।

छोटा पौसेट यह सब देख रहा था और सोच रहा था कि वह उस राक्षस से जरूर बदला लेगा। वह उठा और उसने राक्षस की लड़कियों के ताज उठा कर अपने और अपने भाइयों के सिर पर रख लिये और अपनी टोपियॉ राक्षस की लड़कियों को पहना दीं। ऐसा उसने इसलिये किया ताकि राक्षस धोखा खा जाये।

उसका यह सोचना ठीक था क्योंकि थोड़ी ही देर बाद राक्षस वहॉ आया। वह पहले लड़कों के बिस्तर की तरफ गया जहॉ छोटे पौसेट के सिवा सभी गहरी नींद सो रहे थे।

वहॉ उसने सोने के ताज देखे तो सोचा कि "शायद मैं रात को ज़्यादा पी गया था। वे बच्चे दूसरे पलंग पर सो रहे हैं।"

ऐसा सोच कर वह दूसरे पलंग के पास गया और वहॉ टोपियॉ देखीं तो सोचा — "हॉ अब मैं ठीक जगह पर आया हूँ। यहीं वे लड़के सो रहे हैं।" और तुरन्त ही उसने अपनी सातों लड़कियों का गला काट दिया और जा कर सो गया।

इधर छोटे पौसेट ने जैसे ही राक्षस के खर्राटों की आवाज सुनी। वह खुद उठा, उसने अपने भाइयों को उठाया और फिर वे सब धीरे से बगीचे की तरफ चले गये। रात भर वे भागते रहे। उनको यह ही नहीं पता था कि वे किस रास्ते पर जा रहे हैं।

सुबह जब राक्षस जागा तो अपनी पत्नी से बोला — "जाओ, कल रात जो बच्चे आये थे उन्हें तैयार करो।"

राक्षस की पत्नी बड़ी खुश हुई कि कम से कम अभी तक वे लड़के ज़िन्दा थे पर उसे आश्चर्य भी कम नहीं हुआ कि आज उसका पति बच्चों के प्रति इतना भला कैसे हो गया। उसको तो सपने में भी ख्याल नहीं था कि राक्षस के "तैयार करो" का क्या मतलब है।

वह तुरन्त दौड़ी दौड़ी कमरे में गयी और पछाड़ खा कर गिर पड़ी क्योंकि वहॉ तो उसके अपने बच्चे मरे पड़े थे।

उधर राक्षस गुस्सा हो रहा था कि उसकी पत्नी उन बच्चों को लाने में इतनी देर क्यों लगा रही थी सो वह भी उसकी सहायता के लिये उसके पास पहुॅचा। पर वहॉ पहुॅच कर वह भी अपनी पत्नी की तरह ही हक्का बक्का रह गया।

"ओह यह मैंने क्या किया। इसका बदला तो उन लड़कों को चुकाना ही पड़ेगा।" कहते हुए राक्षस ठंडा पानी ला कर अपनी पत्नी को होश में लाने की कोशिश करने लगा।

उसे होश में ला कर उसने उससे अपने जादुई जूते मॉगे ताकि जल्दी ही दौड़ कर वह उन लड़कों को पकड़ सके। उसकी पत्नी ने उसको उसके जादुई जूते ला दिये और वह उनको पहन कर उड़ चला और उसी जगह आ पहुॅचा जहॉ बच्चे छिपे हुए थे।

बच्चों ने राक्षस को देख लिया था जो एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर अपना पैर रखता चला जा रहा था। छोटे पौसेट को एक गुफा दिखायी दे गयी सो वे सब उस गुफा में घुस गये।

राक्षस भी उनको ढूँढते ढूँढते थक गया था सो वह भी उसी चट्टान पर आराम करने के लिये बैठ गया जिस पहाड़ की गुफा में बच्चे छिपे हुए थे। थके होने की वजह से वह वहीं सो गया और जल्दी ही खर्राटे भरने लगा।

छोटा पौसेट अपने भाइयों से बोला कि अब उनको घर वापस चले जाना चाहिये क्योंकि वहॉ से उनका घर बहुत पास था और वे उसकी चिन्ता न करें वह अपने आप आ जायेगा। सो वे तुरन्त ही वहॉ से घर भाग गये।

इधर छोटा पौसेट ऊपर पहाड़ी पर आया और उसने धीरे से राक्षस के जादुई जूते उसके पैरों से खींच लिये। वे जूते पौसेट के लिये बहुत बड़े थे परन्तु क्योंकि वे जूते जादू के थे इसलिये वे उसके पैरों में ठीक आ गये।

वह उन जूतों को पहन कर राक्षस के घर गया जहॉ उसने उस की पत्नी को रोते देखा। वह बेचारी अपने बच्चों के मर जाने पर बहुत दुखी थी और रो रही थी।

छोटा पौसेट उससे बोला कि राक्षस बहुत बड़े खतरे में है क्योंकि उसे चोरों के एक बहुत बड़े गिरोह ने पकड़ लिया है और वे उसे मारने वाले हैं।

अगर वह अपने पास से सारा सोना चॉदी दे दे तो वह बच सकता है इसी लिये उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। और सबूत के तौर पर उसने अपने जूते उसको पहना दिये हैं।

यह सुन कर वह भली औरत बहुत डर गयी सो उसने सब कुछ निकाल कर पौसेट को दे दिया।

राक्षस का सारा सोना चॉदी ले कर पौसेट अपने घर आ गया। उसके माता पिता उसको देख कर बहुत खुश हुए और फिर वे सब उस राक्षस के धन से बहुत दिनों तक आराम से रहे।

6 थम्बैलीना[22]

थम्ब एक अंग्रेजी शब्द है जिसका अर्थ होता है अॅगूठा। जैसे कि अॅगूठा हाथ की सब उॅगलियों में सबसे छोटा होता है इसी तरह से यहॉ यह थम्ब यानी यह बहुत ही छोटे जीव की लोक कथा है जिसका साइज़ केवल अॅगूठे के बराबर है।

कई समाजों में ऐसी लोक कथाऐं मौजूद हैं जिनके हीरो ऐसे छोटे बच्चे हैं। पर देखने वाली बात यह है कि ये सब लोक कथाऐं कितनी एक सी हैं और कितनी अलग अलग। कई समाजों में ऐसे बच्चों के नाम भी अलग अलग हैं।

जैसे जर्मनी में इसका नाम है थम्ब। इथियोपिया में इसका नाम है सिनज़ैरो। इटली की कहानियों में इसका नाम है डौन फ़िरीयूलीडू और इसकी इटली की टस्कन[23] की कहानियों में इसका नाम है चिचीनो।[24]

ये सब नाम लड़कों के हैं पर डैनमार्क की थम्बैलीना की यह लोक कथा एक इतनी ही छोटी लड़की की है।

[22] Thumbelina – a folktale of Denmark, Europe. By Hans Christian Andersen. He has written this story himself.

[23] Tuscany is a region in central Italy whose capital is Florence.

[24] In Germany his name is “Thumb”. In Ethiopia his name is “Cinzero”. In Italy his name is “Don Firriuleddu”. and in Italy his Tuscan verson gives his name as “Cecino”

एक बार एक स्त्री थी जिसको एक बहुत छोटे बच्चे की बहुत इच्छा थी पर उसकी इच्छा पूरी होने पर ही नहीं आ रही थी। आखिर वह एक परी के पास गयी और उससे बोली — "मुझे एक बहुत छोटा बच्चा चाहिये। क्या तुम मुझे बता सकती हो कि ऐसा बच्चा मुझे कहॉ मिलेगा?"

परी उसको एक जौ का दाना देते हुए बोली — "यह तो बहुत आसान है। लो यह जौ लो और देखो कि यह साधारण किस्म का जौ नहीं है।

यह एक दूसरी तरह का जौ[25] है जो तुम्हारे उस जौ से अलग है जो तुम लोग अपने खेतों में उगाते हो, या जो मुर्गियॉ खाती हैं। इसको तुम एक गमले में रख दो और फिर देखो कि क्या होता है।"

उस स्त्री ने उस परी को धन्यवाद दिया और बारह शिलिंग उस जौ की कीमत दी और खुशी खुशी घर आ कर उसको एक गमले में बो दिया।

जौ बोते ही उसमें से एक फूल निकल आया जो ट्यूलिप[26] के फूल से काफी मिलता जुलता था। पर उस फूल की पंखुड़ियॉ कस कर बन्द थीं जैसे कि वह अभी कली ही हो।

[25] Translated for the word "Barleycorn". It is like barley.

[26] Tulip flower. This is flower of cold climate. Amsterdam is famous for it. It comes in many colors and even in double colors. See its picture above.

उस फूल को देखते ही उस स्त्री के मुॅह से निकला — "ओह कितना सुन्दर फूल है।" और यह कह कर उसने उसकी लाल सुनहरी पंखुड़ियों को चूम लिया। जैसे ही उसने उस कली को चूमा तो वह कली खिल गयी।

उसने देखा कि वह फूल तो असली है और उस फूल के अन्दर तो उसके हरे पराग पर एक बहुत ही सुन्दर और कोमल लड़की बैठी है। वह लड़की मुश्किल से केवल आधे अॅगूठे के बराबर होगी।

क्योंकि वह बहुत ही छोटी थी इसलिये उन्होंने उसका नाम उसने थम्बैलीना, यानी "छोटी", रख दिया।

उन्होंने अखरोट का एक छिलका पौलिश कर के चमकाया और उसको उसमें लिटा दिया। वही उसका पालना था।

उसके बिस्तर के लिये उन्होंने नीले वायलेट के फूल की पंखुड़ी बिछा दीं और उसको गुलाब की पंखुड़ी ओढ़ा दी। इस तरह से वह उसमें रात भर सोती।

दिन में वह मेज पर खेलती जहॉ वह स्त्री उसके लिये एक प्लेट में पानी भर कर रख देती। इस प्लेट के चारों तरफ फूल रखे रहते जिनकी डंडियॉ उस प्लेट के पानी में पड़ी रहतीं। और उस पानी पर ट्यूलिप के फूल की एक पंखुड़ी तैरती रहती।

ट्यूलिप की वह पंखुड़ी उस छोटी के लिये एक नाव का काम करती। छोटी उस पंखुड़ी पर बैठी उसे सफेद घोड़े के दो बालों की पतवार से उस प्लेट में इधर से उधर नाव की तरह खेती रहती।

यह सब देखने में बहुत सुन्दर लगता। छोटी गाती भी बहुत मीठा थी। किसी ने उसके गाने की तरह का मीठा गाना कभी नहीं सुना था।

एक रात जब वह अपने सुन्दर बिस्तर में लेटी हुई थी तो खिड़की के टूटे हुए शीशे के रास्ते एक बड़ी बदसूरत मेंढकी अन्दर आ गयी और उसी मेज पर कूद गयी जिस मेज पर छोटी अपनी गुलाब की पंखुड़ी ओढ़े सो रही थी।

वह मेंढकी उसको देखते ही बोली — "यह तो मेरे बेटे के लिये बहुत सुन्दर पत्नी बनेगी।" बस उसने अखरोट का वह खोल उठाया जिसमें वह छोटी सो रही थी और उसको ले कर खिड़की में से बाहर बागीचे में कूद गयी।

बागीचे में एक नाला था और वह मेंढकी अपने बेटे के साथ वहीं उसकी गीली जमीन पर रहती थी। उस मेंढकी का बेटा उस मेंढकी से भी ज़्यादा बदसूरत था।

जब उसने एक बहुत ही सुन्दर लड़की को अपने बिस्तर में देखा तो वह चिल्लाया — "कोक कोक कोक।"

मॉ मेंढकी बोली — "इतनी ज़ोर से मत चिल्लाओ नहीं तो वह जाग जायेगी और फिर वह भाग भी सकती है। वह तो हंस के पंख की तरह से बहुत ही हल्की है।

हम इसको इस नाले में उगे एक कमल के फूल की पंखुड़ी पर रख देंगे। वह पंखुड़ी इसके लिये एक टापू का काम करेगी। यह इतनी छोटी और हल्की है कि यह वहॉ से भाग भी नहीं पायेगी।

और जब तक यह वहॉ रहेगी तब तक हम इसके लिये इस गीली जमीन पर एक बहुत अच्छा सा घर बना लेंगे। तुम जब उससे शादी कर लो तो तुम उसके साथ वहॉ रहना।"

उस नाले में बहुत सारे कमल के फूल खिले हुए थे जिनके आस पास बड़े बड़े हरे पत्ते फैले पड़े थे जो पानी के ऊपर तैरते लग रहे थे। पर जो उनकी सबसे बड़ी पत्ती थी वह आस पास की सब पत्तियों से सबसे ज़्यादा दूर थी।

बूढ़ी मेंढकी उस अखरोट के छिलके को ले कर जिसमें वह छोटी सोयी हुई थी उस दूर वाली पत्ती की तरफ तैर चली और उसका वह अखरोट का छिलका उस पत्ती पर रख दिया।

छोटी सुबह बहुत जल्दी ही जाग गयी। जब उसने देखा कि वह कहॉ थी तो उसने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। उसको अपने और अपनी हरी पत्ती के चारों तरफ पानी ही पानी

दिखायी दे रहा था। जमीन तक पहुॅचने का उसे कोई रास्ता ही नजर नहीं आ रहा था।

इस बीच वह बूढ़ी मेंढकी गीली जमीन में उसके लिये घर बनाने में लगी थी। उसको वह अपनी नयी बहू के लिये घास और जंगली पीले फूलों से सजा रही थी।

उसके बाद वह अपने बदसूरत बेटे के साथ बाहर निकल कर आयी और उस पत्ती की तरफ गयी जहॉ वह छोटी सोयी हुई थी। वह उस पत्ती से उसका वह पलंग उठाना चाह रही थी ताकि वह उसको उसके कमरे में रख सके।

वह पानी में ही उसके लिये काफी नीचे तक झुकी और बोली — "यह मेरा बेटा है। यह तुम्हारा पति होगा और तुम इसके साथ इस नाले की गीली जमीन में खुशी खुशी रहोगी।"

यह सुन कर उसका बेटा तो केवल "कोक कोक कोक" ही कह सका।

बूढ़ी मेंढकी ने छोटी का पलंग उठाया और उसको ले कर किनारे की तरफ तैर गयी और छोटी वहीं उसी पत्ती पर अकेली पड़ी रह गयी। वह वहॉ अकेली बैठी बैठी रोती रही।

वह तो यह सोच भी नहीं सकी कि वह उस बुढ़िया मेंढकी के साथ रहेगी और उसके उतने बदसूरत बेटे से शादी कर लेगी।

छोटी छोटी मछलियों ने जो वहीं कमल के पत्ते के नीचे तैर रही थीं मेंढकी को देखा भी और उसकी बात भी सुनी जो उसने कही।

सो उन्होंने अपना सिर पानी में से ऊपर निकाला और उस छोटी की तरफ देखा। जैसे ही उन्होंने उस लड़की को देखा तो उन्होंने देखा कि वह तो बहुत ही प्यारी छोटी सी लड़की थी।

इस बात ने उनको बहुत दुखी कर दिया कि वह इतनी सुन्दर लड़की उन मेंढकों के साथ जा कर रहेगी। "नहीं नहीं यह कभी नहीं हो सकता।"

यह सोच कर वे सब आपस में पानी के अन्दर उस डंडी के चारों तरफ मिलीं जिसके पत्ते पर वह छोटी बैठी हुई थी और उस डंडी को अपने दॉतों से काट दिया।

इससे वह पत्ती डंडी से अलग हो गयी और नाले के पानी के बहाव के साथ साथ जमीन से दूर जाने लगी।

उसने कई शहर पार किये। जहॉ जहॉ उसको चिड़ियों ने देखा तो वे बोलीं "कितनी सुन्दर लड़की है।" और इस तरह से वह पत्ती उसको एक नये देश में ले आयी।

एक बहुत ही शानदार सफेद नर तितली हमेशा से ही उसके चारों तरफ उड़ता चला आ रहा था। वहॉ आ कर वह उस पत्ती पर बैठ गया।

छोटी उसको देख कर बहुत खुश हो गयी और उस नर तितली ने भी सन्तोष की सॉस ली कि अब वह बदसूरत मेंढक उसके पास तक नहीं पहुॅच पायेगा।

वह जगह जहॉ से वह गुजर रही थी बहुत सुन्दर थी। सूरज वहॉ पर बराबर चमक रहा था जिससे उस नाले का पानी पिघले हुए सोने की तरह लग रहा था।

छोटी ने अपना कपड़ा उतारा और उसका एक सिरा उस तितली के चारों तरफ बॉध दिया और दूसरा सिरा पत्ते में बॉध दिया। अब वह पत्ता छोटी को लिये हुए पानी में जल्दी जल्दी तैर रहा था।

तभी एक बीटल[27] ऊपर से उड़ती जा रही थी। जब उसने उस सुन्दर लड़की को उस पत्ते पर देखा तो उसने उसको उसकी कमर से पकड़ लिया और उसको ले कर एक पेड़ की तरफ उड़ गयी।

उधर वह पत्ती बिना छोटी के पानी में नर तितली के साथ बहती चली गयी क्योंकि वह पत्ती तो उस नर तितली के साथ बॅधी थी। वह तो उससे अलग हो ही नहीं सकती थी।

जब वह बीटल छोटी को ले कर उड़ रही थी तो छोटी तो बहुत ही डर गयी थी पर वह उस नर तितली के लिये बहुत दुखी थी जिससे उसने अपनी वह पत्ती बॉध रखी थी।

क्योंकि उसने उस नर तितली को पत्ती से बॉध रखा था तो वह वहॉ से अलग नहीं हो सकता था सो वह तो बेचारा भूखा ही मर जाता। पर बेचारे बीटल को इस बात का क्या पता। वह तो छोटी के साथ एक बड़े पत्ते पर बैठा हुआ था।

[27] Used for the word “Cockchafer”.

खाने के लिये बीटल उसको फूलों का शहद देता जा रहा था और साथ में उसकी सुन्दरता की तारीफ करता जा रहा था कि वह कितनी सुन्दर है, पर उस बीटल की तरह से नहीं।

कुछ समय बाद सारे बीटलों ने कहा — "अरे, इसकी तो दो ही टॉगें हैं, कितनी बदसूरत है यह?"

"और इसके तो आगे के लम्बे वाले दो बाल भी नहीं हैं। इसकी तो कमर भी बहुत पतली है। ओह यह तो इन्सान जैसी है।"

हालॉकि छोटी बहुत ही सुन्दर थी फिर भी सब मादा बीटल एक साथ बोलीं — "उफ़ यह कितनी बदसूरत है।"

जो बीटल उसको ले कर आया था तब उसको उन मादा बीटलों का विश्वास हुआ और उसको लगा कि वह कितनी बदसूरत थी और फिर उसके पास उससे कुछ कहने के लिये नहीं रहा।

उसने उससे बस इतना ही कहा कि वह जहॉ चाहे जा सकती थी। फिर वह उसको ले कर पेड़ पर से उड़ा और उसको एक डेज़ी के फूल पर रख दिया।

वह वहॉ यह सोच कर रो पड़ी कि क्या वह इतनी बदसूरत है कि वे बीटल भी उससे बात नहीं करना चाहते? जबकि वह दुनियॉ की सबसे सुन्दर और गुलाब की पंखुड़ी जितनी कोमल लड़की थी।

बेचारी छोटी सारी गरमियॉ उस जंगल में अकेले रही। उसने खुद अपने लिये घास की एक चादर बुनी और बारिश से बचने के लिये उसे एक चौड़ी पत्ती से लटका दिया। खाने के लिये वह फूलों

से उनका शहद चूसती रही। और रोज़ सुबह उन पर पड़ी ओस पीती रही।

इस तरह से गर्मियॉ और पतझड़ दोनों निकल गये और फिर आया जाड़ा – लम्बा ठंडा जाड़ा। जो चिड़ियें पहले उसके लिये गाती थीं अब वे सब चली गयी थीं। पेड़ और फूल सभी मुरझा गये थे।

जिस बड़े पत्ते के नीचे वह रहती थी वह भी मुरझा कर सिकुड़ गया था। अब वहॉ पीले सिकुड़े हुए तने के अलावा कुछ भी नहीं था।

क्योंकि उसके कपड़े फट गये थे इसलिये वह ठंड से कॉपती रहती थी। इसके अलावा वह खुद भी बहुत ही पतली और कमज़ोर सी थी। बेचारी छोटी तो बस ठंड के मारे जमी जा रही थी।

अब बरफ भी पड़ने लगी थी। अगर बरफ का एक टुकड़ा भी उसके ऊपर पड़ता था तो उसको ऐसा लगता था जैसे किसी ने उसके ऊपर एक फावड़ा भर कर बरफ फेंक दी हो।

क्योंकि हम लोग तो बहुत लम्बे होते हैं बड़े होते हैं पर वह तो बेचारी केवल एक इंच ही लम्बी थी।

यह देख कर उसने अपने आपको एक सूखी पत्ती में लपेट लिया पर जब उसने उसे अपने चारों तरफ लपेटा तो वह पत्ती तो टूट गयी और वह उसको गरमी नहीं पहुॅचा सकी। और वह फिर ठंड से कॉपती रही।

जिस जंगल में वह रह रही थी उसके पास ही एक जौ का खेत था। इस खेत में से जौ तो बहुत पहले ही काट लिया गया था सो अब वहॉ कुछ भी नहीं बचा था सिवाय सूखी डंडियों के जो जमी हुई जमीन में खड़ी थीं।

वहॉ जाना तो उसके लिये एक बहुत बड़ा जंगल पार करने के बराबर था। फिर भी वह उस खेत में आयी तो उसको एक चुहिया का बिल दिखायी दे गया और वह उसके बिल के दरवाजे पर आयी।

उस चुहिया का बिल जौ की एक डंडी के नीचे था। वह चुहिया अपने उसी बिल में गरमी में आराम से रहती थी। उसका एक पूरा कमरा जौ के दानों से भरा था। उसके उस घर में एक रसोईघर था और एक खाने का कमरा भी था।

छोटी बेचारी उसके घर के दरवाजे पर एक भिखारी लड़की की तरह खड़ी हुई थी। उसने दो दिन से कुछ खाया नहीं था सो उस चुहिया से उसने खाने के लिये थोड़ा सा जौ मॉगा।

वह चुहिया एक बहुत ही भली चुहिया थी। छोटी को देख कर बोला — "ओह बेचारी। आओ मेरे गरम घर में आ जाओ और मेरे साथ खाना खालो।"

वह चुहिया छोटी को देख कर बहुत खुश हुई और उससे बोली — "आओ अन्दर आ जाओ। अगर तुम चाहो तो तुम मेरे घर में सारे जाड़े रह भी सकती हो।

पर एक बात का ध्यान रखना कि एक तो तुम मेरे कमरे साफ सुथरे रखना और दूसरे मुझे कहानी सुनाना क्योंकि मुझे कहानी सुनना बहुत अच्छा लगता है।"

और छोटी ने वह सब किया जो उस चुहिया ने उससे करने के लिये कहा था। वहॉ उसको बहुत आराम मिला।

एक दिन चुहिया ने छोटी से कहा — "जल्दी ही हमारे घर में एक मेहमान आने वाला है। वह मेरा पड़ोसी है और हर हफ्ते हमारे घर आता है। वह मुझसे ज़्यादा अमीर है। उसके मकान के कमरे भी बड़े बड़े हैं और वह बहुत सुन्दर काले मखमल का कोट पहनता है।

अगर तुम उससे शादी कर सकतीं तो तुम उसके साथ बहुत अच्छी तरह से रहतीं। पर वह अन्धा है सो तुमको उसको अपनी कुछ सुन्दर कहानियॉ सुनानी पड़ेंगी।"

पर छोटी को उसके इस पड़ोसी में कोई रुचि नहीं थी क्योंकि वह तो एक मोल[28] था। फिर भी वह उस चुहिया के घर अपना सुन्दर काले मखमल का कोट पहन कर आया।

चुहिया बाली — "यह बहुत अमीर है और पढ़ा लिखा है। इसका घर भी मेरे घर से बीस गुना बड़ा है।"

[28] Moles have cylindrical bodies, velvety fur, very small, inconspicuous ears and eyes. See its picture above

इसमें कोई शक नहीं कि मोल उस चुहिया से ज़्यादा अमीर भी था और ज़्यादा पढ़ा लिखा भी। पर वह हमेशा धूप और सुन्दर फूलों के बारे में बात किया करता था क्योंकि उसने उनको कभी देखा नहीं था।

छोटी को उसके सामने गाना पड़ता था — "लेडीबर्ड लेडीबर्ड, जा अपने घर उड़ जा।" वह और भी कई सुन्दर गीत उसके लिये गाती थी।

उसके गीत सुन कर मोल को उससे प्यार हो गया क्योंकि उसकी आवाज बहुत मीठी थी। पर उसने उससे कभी कुछ कहा नहीं क्योंकि वह बहुत सावधान था।

कुछ समय पहले ही मोल ने एक सुरंग खोदी थी जो इस चुहिया के घर से उसके अपने घर तक जाती थी। और यहॉ भी वह छोटी के साथ जहॉ चाहे वहॉ घूमने के लिये आज़ाद था।

उसने उन सबको सावधान कर रखा था कि वे उस मरी हुई चिड़िया से डरें नहीं जो उसी रास्ते में पड़ी थी जहॉ मोल ने अपनी सुरंग बनायी थी।

वह एक पूरी चिड़िया थी जिसकी चोंच भी थी और पंख भी। ऐसा लगता था कि उस चिड़िया को मरे हुए ज़्यादा समय नहीं हुआ था।

मोल ने अपने मुँह में एक चमकीली लकड़ी की डंडी ले रखी थी। वह अँधेरे में बहुत चमकती थी। सो वह वह डंडी ले कर उनको रास्ता दिखाता हुआ उनके आगे आगे जा रहा था।

जब वे उस जगह पर आये जहॉ वह मरी हुई चिड़िया पड़ी हुई थी तो मोल ने उस सुरंग की छत को अपनी नाक से ऊपर की तरफ धकेला। वहॉ की मिट्टी मुलायम थी सो वह नीचे गिर पड़ी और वहॉ एक बड़ा सा छेद बन गया और उस सुरंग में दिन का उजाला फैल गया।

नीचे फर्श पर एक चिड़िया पड़ी थी। उसके पंख उसके शरीर से चिपके हुए थे और उसका सिर और पैर उसके पंखों के अन्दर थे। इससे ऐसा लग रहा था कि वह बेचारी जाड़े की ठंड से मर गयी थी।

यह देख कर छोटी बहुत दुखी हो गयी। वह छोटी छोटी चिड़ियों को बहुत प्यार करती थी क्योंकि सारी गरमियॉ वे उसको अपना गाना सुनाती रही थीं।

पर मोल ने उसको अपने टेढ़ी टॉगों से एक तरफ कर दिया और बोला — "अब यह चिड़िया कभी नहीं गा पायेगी। एक छोटी चिड़िया बन कर पैदा होना भी कितनी बदकिस्मती की बात है।

मैं कितना खुशकिस्मत हूँ कि मेरा कोई भी बच्चा चिड़िया बन कर पैदा नहीं होगा क्योंकि वे तो रोने के अलावा और कुछ जानते ही नहीं और हमेशा ही जाड़ों में भूख से मर जायेंगे।"

चुहिया बोली — "होशियार होने के नाते तुम यह बात कह सकते हो मोल, पर चीं चीं करने से भी क्या फायदा क्योंकि जब जाड़ा आयेगा तब या तो वे भूख से मर जायेंगे या फिर जम कर मर जायेंगे। फिर भी चिड़ियें तो ऊँचे कुल में ही पैदा होती हैं।"

छोटी कुछ नहीं बोली पर जब मोल और चुहिया ने उस मरी हुई चिड़िया की तरफ से पीठ फेर ली तो उसने नीचे झुक कर चिड़िया के सिर के पंखों पर अपना हाथ फेरा और उसकी बन्द पलकों को चूमा और बोली — "शायद यही वह चिड़िया थी जो सारी गरमी मेरे लिये गाती रही। ओ सुन्दर चिड़िया तुमने मुझे कितनी खुशी दी।"

मोल अब उस छेद पर रुक गया था जहॉ से रोशनी आ रही थी। वहॉ से वह उन दोनों को अपने घर ले गया।

पर रात को छोटी वहॉ सो नहीं पायी। सारी रात वह उस चिड़िया के बारे में ही सोचती रही।

वह रात में अपने बिस्तर से उठी उसने, भूसे का एक बड़ा सा कालीन बुना और उसको उस मरी हुई चिड़िया के पास ले गयी। वह कालीन वहॉ ले जा कर उसने उसे उस चिड़िया को ओढ़ा दिया। उसने फूलों की कुछ पंखुड़ियॉ भी उसके ऊपर डाल दीं जो उसको चुहिया के घर में मिल गयी थीं।

वे पंखुड़ियॉ ऊन जितनी मुलायम थीं। कुछ पंखुड़ियॉ उसने उस चिड़िया के बराबर में भी डाल दीं ताकि उसको उस ठंडी ज़मीन पर थोड़ी सी गरमी मिल सके।

"विदा ओ सुन्दर छोटी चिड़िया विदा। तुमको सारी गरमी मेरे लिये गाने के लिये धन्यवाद। जब सारे पेड़ हरे थे और सूरज आसमान में खूब ऊँचा चमकता था।" कह कर उसने अपना सिर उस चिड़िया की छाती पर रख दिया।

पर तुरन्त ही वह चौंक गयी क्योंकि उसको लगा कि उस चिड़िया के अन्दर कुछ थम्प थम्प कर रहा था। यह तो चिड़िया का दिल था।

शायद वह पूरी तरह से अभी मरी नहीं थी केवल ठंड की वजह से सुन्न हो कर पड़ गयी थी। और अब उसके गरमी देने से उसमें जान आ रही थी।

पतझड़ में सारी चिड़ियें गरम देशों में चली जाती हैं। पर अगर किसी वजह से कोई चिड़िया वहॉ जाने से रह जाती है तो ठंड उसे पकड़ लेती है। वह जम जाती है और मरी सी पड़ जाती है। वह वहीं पड़ी रहती है जहॉ वह गिरती है और फिर बरफ उसे ढक देती है।

छोटी यह देख कर कॉप गयी क्योंकि चिड़िया बड़ी थी, कम से कम उससे तो वह बहुत बड़ी थी क्योंकि वह तो केवल एक इंच की ही थी। फिर भी उसने हिम्मत की और उसने उस चिड़िया के ऊपर और काफी ऊन रख दी।

फिर उसने एक पत्ती ली जिसको वह अपने ओढ़ने के लिये इस्तेमाल कर रही थी और उससे उसने उस पत्ती से उस चिड़िया का सिर ढक दिया।

अगली सुबह वह फिर चोरी छिपे चिड़िया को देखने आ गयी। उसने देखा कि वह चिड़िया ज़िन्दा तो थी पर बहुत कमजोर थी।

वह केवल अपनी ऑख खोल कर छोटी की तरफ देख ही सकी जो अपने हाथ में एक पुरानी लकड़ी का टुकड़ा लिये खड़ी थी क्योंकि उसके पास कोई लालटैन नहीं थी।

वह बीमार चिड़िया बोली — "धन्यवाद ओ सुन्दर लड़की। तुमने मुझे कितनी गरमी दी है। अब मैं जल्दी ही ठीक हो जाऊॅगी और फिर से धूप में उड़ने और गाने लायक हो जाऊॅगी।

छोटी बोली — "अभी तो बाहर ठंड बहुत है। बाहर बरफ पड़ रही है और मौसम जमा जमा सा हो रहा है। तुम अभी यहीं गरमी में ठहरो, यहॉ मैं तुम्हारी देखभाल करूॅगी।"

फिर वह उस चिड़िया के लिये फूल की एक पंखुड़ी में थोड़ा पानी ले कर आयी।

चिड़िया ने पानी पिया और उससे कहा कि उसके पंख में एक कॉटा चुभ गया है जिससे उसका वह पंख घायल हो गया है। इसलिये अब वह अपनी उन साथिन चिड़ियों की तरह से तेज़ नहीं उड़ सकती जो गरम देशों की तरफ जा रही थीं।

और वह फिर जमीन पर गिर पड़ी। उसे कुछ भी याद नहीं रहा कि वह कहॉ से आयी थी और उसे कहॉ जाना था।

सारे जाड़े वह चिड़िया जमीन के नीचे रही। छोटी बहुत प्रेम से उसकी देखभाल करती रही। इस बात का न तो मोल को और न ही चुहिया को पता चला क्योंकि उनको तो चिड़ियें पसन्द ही नहीं थीं।

कुछ समय बाद ठंड खत्म हो गयी, वसन्त आ गया, सूरज चमकने लगा। चिड़िया ने छोटी को विदा कहा और छोटी ने मोल के बनाये हुए छेद को खोल दिया।

चिड़िया ने छोटी से पूछा कि क्या वह भी उसके साथ आना चाहती थी। अगर वह आना चाहती थी तो वह उसके ऊपर बैठ कर उसके साथ चल सकती थी। वह उसको उड़ा कर हरे हरे जंगलों में ले जायेगी।

पर छोटी को मालूम था कि वह अगर इस तरह से चली गयी तो चुहिया बहुत दुखी होगी इसलिये उसने चिड़िया के साथ जाने को मना कर दिया।

चिड़िया बोली — "विदा ओ सुन्दर लड़की, विदा।" और वह धूप में बाहर उड़ गयी।

छोटी उसको दूर तक जाते देखती रही फिर उसकी ऑखों में ऑसू भर आये। उसको उस चिड़िया से प्यार हो गया था। वह चिड़िया चीं चीं गा रही थी और छोटी दुखी खड़ी थी। उसको बाहर धूप में जाने की इजाज़त नहीं थी।

चुहिया के घर के ऊपर की जमीन पर जौ बोये जा चुके थे। उनके पौधे भी ऊॅचे ऊॅचे हो गये थे। छोटी के लिये तो वह अब एक घना जंगल हो गया था क्योंकि वह तो केवल एक इंच ही लम्बी थी न।

चुहिया बोली — "छोटी, अब तुम्हारी शादी होने वाली है। हमारा पड़ोसी तुम्हें पूछ रहा था। तुम कितनी खुशकिस्मत हो जो हमारे पड़ोसी से शादी कर रही हो।

अब हम तुम्हारे लिये शादी की पोशाक बनायेंगे। उसमें लिनन और ऊन दोनों होनी चाहिये। जब तुम मोल की पत्नी बनोगी तब तुमको किसी भी चीज़ की कोई कमी नहीं होनी चाहिये।"

छोटी ने सूत काता। चुहिया ने चार मकड़े किराये पर बुलाये जो दिन रात उस सूत को बुनने पर लगे हुए थे। हर शाम मोल वहॉ आता ओर गरमियॉ खत्म होने के समय की बात करता।

उसके बाद ही उसको छोटी से शादी करनी थी। क्योंकि अभी तो सूरज की गरमी इतनी ज़्यादा थी कि वह सारी जमीन को जला रही थी। उसने उसको पत्थर की तरह सख्त बना दिया था। इसलिये जैसे ही गरमी खत्म हो जायेगी तभी यह शादी हो पायेगी।

पर छोटी खुश नहीं थी क्योंकि उसको थका थका सा मोल बिल्कुल पसन्द नहीं था।

हर सुबह जब सूरज निकलता और हर शाम जब वह डूबता तो वह दरवाजे से चुपचाप बाहर निकलती। और जब हवा के बहने से

जौ की बालियॉ हिलतीं तो उनमें बनी जगह से वह खुले आसमान को देखती।

वह सोचती कि आसमान कितना सुन्दर और चमकीला है और उस चिड़िया को देखने की इच्छा करती जिसको उसने ठीक किया था। पर वह तो फिर कभी वापस आयी ही नहीं। पता नहीं वह थी भी कहॉ।

और गरमी के बाद फिर पतझड़ आ गया। छोटी की शादी की पोशाक पूरी हो गयी थी। चुहिया उससे बोली — "अब चार हफ्ते में तुम्हारी शादी हो जानी चाहिये।"

छोटी यह सुन कर रो पड़ी। उसने चुहिया से कहा कि वह मोल को पसन्द नहीं करती। चुहिया बोली — "यह तुम क्या बेकार की बात करती हो। जिद मत करो वरना मैं तुमको अपने सफेद तेज़ दॉतों से काट लूॅगी।

वह तो बहुत सुन्दर मोल है। इतने सुन्दर मखमल और फ़र तो रानी के पास भी नहीं है जितने सुन्दर मखमल और फ़र उसके पास हैं।

इसके अलावा उसका रसोईघर और नीचे का कमरा भी हमेशा खाने के सामान से भरे पूरे रहते हैं। तुमको तो अपनी ऐसी खुशकिस्मती पर नाज़ करना चाहिये।"

सो शादी का दिन पक्का कर दिया गया और उस दिन मोल छोटी को अपने घर में अपने साथ रहने के लिये ले जाने वाला था।

और उसका घर तो जमीन में बहुत नीचे था। छोटी फिर सूरज की गरमी महसूस नहीं कर पायेगी क्योंकि मोल को तो वह पसन्द ही नहीं थी।

वह बच्ची बेचारी सूरज को विदा कहना नहीं चाहती थी क्योंकि उसको वह बहुत अच्छा लगता था। और क्योंकि चुहिया ने उसको घर के दरवाजे पर खड़े होने की इजाज़त दे रखी थी इसलिये वह सूरज को देखने के लिये एक बार फिर गयी।

उसने सूरज की तरफ अपने हाथ फैलाये और रो कर बोली — "विदा ओ चमकीले सूरज, विदा।" फिर वह घर से थोड़ी दूर चली गयी क्योंकि खेत में से जौ अब कट चुका था और वहॉ केवल सूखी डंडियॉ ही पड़ी रह गयी थीं।

उसने पास में उगे हुए एक लाल फूल को अपनी बाहों में लेते हुए बार बार कहा "विदा विदा ओ सूरज। अगर तुमको वह चिड़िया कहीं दिखायी दे जाये तो उससे मेरी नमस्ते कहना।"

तभी उसके सिर पर कोई चिड़िया बोली "चीं चीं"। उसने तुरन्त ही ऊपर देखा तो देखा कि वही चिड़िया उसके ऊपर पास में ही उड़ रही थी जिसकी उसने सेवा की थी।

जैसे ही उस चिड़िया ने छोटी को देखा तो वह बहुत खुश हुई। तब छोटी ने उसे बताया कि किस तरह से वह उस बदसूरत मोल से शादी नहीं करना चाहती थी और किस तरह सूरज को बिना देखे ज़मीन के अन्दर नहीं रहना चाहती थी।

यह कहते कहते वह रो पड़ी।

चिड़िया बोली — "जाड़ा आ रहा है और मैं गरम देशों मे रहने जा रही हूॅ। क्या तुम मेरे साथ चलोगी? तुम मेरी पीठ पर बैठ जाओ और अपने आपको मेरी पीठ से बॉध लो तब हम उस बदसूरत मोल और उसके अॅधेरे घर से बहुत दूर जा सकेंगे।

उन गरम देशों में हमेशा ही गरमी रहती है। हमेशा ही सूरज चमकीला चमकता है। वहॉ फूल भी बहुत सुन्दर होते हैं। ओ छोटी चलो तुम मेरे साथ उड़ चलो। तुमने मेरी जान बचायी थी जब मैं अॅधेरे रास्ते में ठंड में जमी पड़ी थी। आज मैं तुम्हारी सहायता करना चाहती हूॅ।

छोटी बोली — "ठीक है मैं तुम्हारे साथ चलूॅगी।"

और वह चिड़िया की पीठ पर बैठ गयी। उसने अपने पैर विड़िया के फैले हुए पंखों पर रख लिये और अपने आपको उसके एक सबसे मजबूत पंख से बॉध लिया।

चिड़िया उसको ले कर उड़ चली – ऊपर और ऊपर, जंगलों के ऊपर, समुद्र के ऊपर, उन ऊॅचे ऊॅचे पहाड़ों के ऊपर जिन पर हमेशा ही बरफ पड़ी रहती है।

छोटी तो उस ठंडी हवा में जम ही जाती पर वह चिड़िया के पंखों के नीचे दुबक गयी। वहॉ उसे थोड़ी सी गरमी मिली। बस उसका सिर बाहर निकला रहा ताकि वह बाहर की सुन्दरता देख सके।

आखिर वे उन गरम देशों में आ गये जहॉ सूरज हमेशा चमकता है। आसमान भी जमीन से ज़्यादा ऊॅचा दिखायी देता है।

यहॉ सड़क के किनारे हैजें लगी हुई थीं जिन पर हरे, सफेद और जामुनी रंग के अंगूर लगे हुए थे। जंगलों में पेड़ों से नीबू और सन्तरे लटके हुए थे। हवा में सब जगह फलों की खुशबू महक रही थी।

बच्चे शहरों की सड़कों पर खेल रहे थे। वे चमकीले रंगों की तितलियों के पीछे भाग रहे थे। जैसे जैसे चिड़िया आगे उड़ती जा रही थी आगे का दृश्य और भी अच्छा होता जा रहा था।

अब वे एक नीली झील के पास आ गये थे जिसके चारों तरफ हरी हरी घास लगी हुई थी। वहॉ एक चमकता हुआ संगमरमर का महल खड़ा हुआ था। उसके खम्भों के चारों तरफ बेलें चढ़ी हुई थीं और उनके ऊपर की तरफ उन बेलों में कई चिड़ियों के घोंसले थे।

उन घोंसलों में से एक घोंसला उस चिड़िया का था जो छोटी को वहॉ ले कर आयी थी।

उस घोंसले को छोटी को दिखा कर चिड़िया बोली — "देखो यह मेरा घर है। मैं तुम्हें यहॉ अपने साथ रख लेती पर तुम यहॉ रह नहीं पाओगी।

तुमको यहॉ आराम नहीं मिलेगा। तुम अपने लिये उन सुन्दर फूलों में से एक फूल चुन लो तो फिर मैं तुमको उस पर बिठा दूँगी। फिर तुम वहॉ आराम से रह सकोगी।"

छोटी ने ताली बजाते हुए कहा — "यह तो बड़ी अच्छी बात होगी।"

जमीन पर संगमरमर का एक बहुत बड़ा खम्भा पड़ा था जो जब वहॉ गिरा था तो उसके तीन टुकड़े हो गये थे। उन टुकड़ों के बीच की जगह में बहुत सुन्दर सफेद फूल उगे हुए थे। चिड़िया ने छोटी को उन सफेद फूलों में से एक फूल की एक चौड़ी पंखुड़ी पर बिठा दिया।

पर छोटी तो यह देख कर दंग रह गयी कि उस फूल के बीच में किस्टल की तरह पारदर्शी एक छोटा सा आदमी बैठा हुआ था। उसने अपने सिर पर सोने का ताज पहना हुआ था। उसके कन्धों पर छोटे छोटे पंख लगे हुए थे और वह भी छोटी से ज़्यादा बड़ा नहीं था।

वह फूल का देवदूत[29] था क्योंकि वहॉ के हर फूल में एक छोटी स्त्री और एक छोटा आदमी रहते थे। और यह उन सबका राजा था।

उसको देख कर छोटी चिड़िया के कान में फुसफुसायी — "कितना सुन्दर है यह।"

[29] Translated for the word "Angel".

वह छोटा राजकुमार पहले तो चिड़िया को देख कर डर गया क्योंकि उसके लिये तो वह उसकी अपनी तुलना में बहुत बड़ी थी पर जब उसने छोटी को देखा तो वह बहुत खुश हुआ। उसको लगा कि वह तो दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की थी।

उसने अपना सोने का ताज अपने सिर से उतारा और उसके सिर पर रखते हुए उससे पूछा कि उसका नाम क्या है। और क्या वह उसकी पत्नी और सब फूलों की रानी बनना पसन्द करेगी।

छोटी ने सोचा कि यह तो उस बदसूरत मेंढक और काले मखमल के कोट वाले मोल की तुलना में बहुत ही अलग किस्म का पति है सो उसने उस सुन्दर राजकुमार को हॉ कर दी।

सारे फूल खिल गये और उन सब फूलों में से एक एक लड़की और एक एक लड़का निकल आये। वे सब इतने सुन्दर थे कि उनको देखने में ही उसको बहुत अच्छा लग रहा था।

उनमें से हर एक छोटी के लिये कोई न कोई भेंट ले कर आया था। पर उनमें से सबसे अच्छी भेंट थी छोटे से पंखों का एक जोड़ा। वे पंख एक बड़ी सफेद मक्खी के थे जिनको पहन कर वह एक फूल से दूसरे फूल पर उड़ कर जा सकती थी।

सबने बहुत खुशियॉ मनायीं और वह छोटी चिड़िया जो उनके ऊपर अपने घोंसले में बैठी थी उसको इस मौके पर गाने के लिये कहा गया।

उस चिड़िया ने अपनी तरफ से बहुत मीठा गाना गाया पर दिल ही दिल में वह छोटी के लिये बहुत दुखी थी। वह उसको बहुत प्यार करती थी और उससे अलग नहीं होना चाहती थी।

फूलों की आत्मा ने कहा — "अब कोई तुमको "छोटी" नहीं बुलायेगा। यह कोई अच्छा नाम नहीं है। तुम तो इतनी सुन्दर हो। हम सब तुमको अबसे माया[30] कहेंगे।"

चिड़िया जब वहॉ से डेनमार्क वापस आ रही थी तो भारी दिल से बोली — "विदा विदा।" वहॉ आ कर उसने एक ऐसे मकान की खिड़की पर अपना घोंसला बनाया जिसमें एक परियों की कहानी लिखने वाला रहता था।

फिर उसने वहॉ एक गीत गाया जिससे यह कहानी निकली।

[30] Spelt as Maia

7 छोटा चना[31]

टौम थम्ब जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि इटली में एक पति पत्नी रहते थे। उनके कोई बच्चा नहीं था। पति बढ़ई का काम करता था और पत्नी उसका घर सॅभालती थी। वह जब घर आ जाता था तो उसे कोई काम नहीं होता था सिवाय अपनी पत्नी को डॉटने के क्योंकि उसके कोई बच्चा नहीं था।

वह स्त्री भी बच्चा न होने की वजह से बहुत दुखी रहती थी और अक्सर रोती रहती थी। वह बहुत दान देती थी। चर्च में बहुत सारे त्यौहार मनाती थी पर फिर भी उसके कोई बच्चा नहीं था।

एक दिन एक स्त्री उसके दरवाजे पर भीख मॉगने आयी तो बढ़ई की पत्नी ने उससे कहा — "मैं तुम्हें कुछ नहीं दूॅगी क्योंकि मैंने बहुत सारा दान दिया है, चर्च में बहुत दिनों तक बहुत सारी पूजा की हैं और वहॉ के त्यौहार मनाये हैं और फिर भी मेरे कोई बेटा नहीं है।"

"तुम मुझे दान दो तुम्हारे बच्चे हो जायेंगे।"

---

[31] Little Chickpea – a folktale from Italy, Europe.
Aadapted from the book: "Italian Popular Tales". By Thomas Frederick Crane. London, 1885.
[It is the Tuscan version of the "Tom Thumb".] Available free at the Web Site :
https://books.google.ca/books?id=RALaAAAAMAAJ&pg=PR1&redir_esc=y#v=onepage&q&f=false

"अगर ऐसा है तो मैं तुम्हें उतना दूँगी जितना तुम चाहोगी।"

"तुम मुझे एक पूरी डबल रोटी दो और फिर मैं तुमको कुछ दूँगी जिससे तुम्हारे बच्चे होंगे।"

"अगर ऐसा है तो मैं तुमको दो डबल रोटियॉ दूँगी।"

"नहीं नहीं। इस समय तो मुझे केवल एक ही डबल रोटी चाहिये। तुम मुझे दूसरी डबल रोटी तब दे देना जब तुम्हारे बच्चे हो जायें।"

सो बढ़ई की पत्नी ने उसको एक डबल रोटी दे दी। वह स्त्री बोली — "ठीक है अब मैं अपने घर जाती हूँ। मुझे अपने बच्चों को भी खाना खिलाना है वे भूखे होंगे। उसके बाद मैं तुम्हारे लिये वह चीज़ ले कर आती हूँ जिससे तुम्हारे बच्चे होंगे।"

"ठीक है।"

कह कर वह स्त्री घर चली गयी। उसने अपने बच्चों को खाना खिलाया। एक थैला उठा कर उसमें कुछ सफेद चना[32] भरा और बढ़ई की पत्नी के घर चल दी।

वहॉ जा कर उसने बढ़ई की पत्नी से कहा — "लो यह चनों का थैला है। इनको तुम अपने आटा मलने वाले बरतन में रख दो। अगले दिन इनमें से इतने ही बच्चे निकल आयेंगे।"

[32] Translated for the word "Chickpeas" – it is called "Chanaa" or "Chholaa" or "Kaabulee Chanaa" too in North India

बढ़ई की पत्नी ने उस थैले में झॉक कर देखा तो उसमे तो चने के सौ दाने थे। उसने आश्चर्य से पूछा — "पर चने के सौ दाने बच्चों में कैसे बदल सकते हैं?"

"यह तुम कल देखना।"

बढ़ई की पत्नी ने सोचा "मैं इस सबके बारे में अपने पति को कुछ नहीं बताऊॅगी क्योंकि अगर किसी वजह से इन दानों में से बच्चे नहीं निकले तो वह तो मुझे बहुत डॉटेगा।"

पर उसने उन चनों को अपने आटा मलने वाले बरतन में रख दिया और बेचैनी से सुबह का इन्तजार करने लगी।

रोज की तरह से बढ़ई घर वापस लौटा तो उसने अपनी पत्नी को खूब डॉटा। पर उस रात वह कुछ नहीं बोली और यह कहती हुई सोने चली गयी "कल देखना।"

अगली सुबह तो उसके वे चनों के सौ दाने उसके सौ बेटे बन चुके थे।

एक चिल्लाया — "पिता जी, मुझे कुछ पीने को चाहिये।"

दूसरा चिल्लाया — "पिता जी, मुझे कुछ खाने को चाहिये।"

एक दूसरा बोला — "पिता जी, मुझे गोद में उठा लो।"

इस सबको देख कर बढई ने एक डंडी उठायी, उस बरतन की तरफ दौड़ा गया जिसमें वे सब बच्चे थे और उन सबको मार दिया। यह तो तुमको मालूम ही है कि वे सब कितने छोटे थे – केवल चने जितने बड़े।

पर किस्मत से उनमें से एक बच्चा बाहर कूद गया और जा कर उनके सोने वाले कमरे में एक घड़े के हैन्डिल पर जा कर छिप गया।

जब बढ़ई अपनी दूकान पर चला गया उसकी पत्नी बोली — "यह भी क्या गधा है। अब तक तो वह मेरे बच्चे न होने पर नाराज था और आज जब बच्चे हुए तो उसने उन सबको मार दिया।"

यह सुन कर उस बच्चे ने जो बच कर भाग गया था अपनी मॉ से पूछा — "मॉ, क्या पिता जी गये?"

"हॉ गये।" पर यह आवाज सुन कर तो वह खुद भी चौंक गयी कि यह आवाज कहॉ से आयी क्योंकि उसके पति ने तो उसके सब बच्चों को मार डाला था।

उसने आश्चर्य से पूछा — "अरे तुम कैसे बच गये। कहॉ हो तुम?"

"ओह चुप मॉ चुप, मैं यहॉ घड़े के हैन्डिल पर बैठा हूॅ। बस तुम मुझे यह बता दो कि पिता जी गये क्या?"

मॉ बोली — "हॉ गये। अब तुम बाहर निकल आओ।"

सो वह बच्चा बाहर निकल आया। उसको देखते ही मॉ के मुॅह से निकला — "अरे तुम कितने सुन्दर हो। मै तुम्हें क्या कह कर पुकारूॅ?"

बच्चा बोला — "चिचीनो[33]।"

मॉ बोली — "बहुत अच्छे चिचीनो। तुम्हें पता है चिचीनो कि अब तुम्हारे पिता के खाने का समय हो गया है सो अब तुम अपने पिता को उनकी दूकान पर खाना दे आओ।"

"ठीक है। तो तुम मेरे सिर पर खाने की टोकरी रख दो मैं उनको उनकी दूकान पर खाना दे आता हूॅ।"

जब खाने का समय हुआ तो बढ़ई की पत्नी ने उसके सिर पर खाने की टोकरी रख दी और उसको अपने पति की दूकान पर उसका खाना ले कर भेज दिया।

जब चिचीनो दूकान के पास पहुॅचा तो उसने अपने पिता को ज़ोर ज़ोर से बुलाना शुरू कर दिया — "पिता जी, आइये और मुझसे मिलिये। मैं आपका खाना ले कर आ रहा हूॅ।"

उसको देख कर बढ़ई ने सोचा "क्या मैंने सबको मार नहीं दिया था या फिर उनमें से कोई बच गया?"

सो वह चिचीनो के पास गया और उससे पूछा — "अरे मेरे अच्छे बेटे, तुम मेरी मार से कैसे बच गये?"

"मैं उस बरतन में से बाहर गिर गया था पिता जी और फिर वहॉ से सोने वाले कमरे में चला गया। वहॉ मैं घड़े के हैन्डिल के ऊपर जा कर छिप कर बैठ गया इसी लिये मैं बच गया।"

[33] Cecino – name of the remaining child

"बहुत अच्छे चिचीनो। अब तुम ऐसा करो कि तुम देश की जनता में जाओ और वहॉ जा कर पता करो कि किसी के पास ऐसी कोई टूटी चीज़ है क्या जो वह मरम्मत करवाना चाह रहा हो।"

"ठीक है।"

कह कर बढ़ई ने चिचीनो को अपनी जेब में रख लिया और घर की तरफ चल दिया।

जब वह घर जा रहा था तो वह रास्ते भर उससे बात करता रहा। उसके आस पास किसी को न देख कर लोगों ने समझा कि वह पागल हो गया है क्योंकि उनको तो यह पता ही नहीं था कि उसकी जेब में उसका बेटा बैठा था।

जब वह घर जा रहा था तो उसको बहुत सारे लोग मिले। उसने उनसे पूछा — "क्या आपके पास कुछ मरम्मत कराने के लिये है?"

"हॉ है तो। हमारे पास हमारे बैलों की कुछ चीज़ें हैं मरम्मत कराने के लिये पर वे चीज़ें हम तुमको नहीं देंगे क्योंकि तुम तो हमको कुछ पागल से लगते हो।"

बढ़ई बोला — "तुम्हारा यह कहने का क्या मतलब है कि मैं तुम्हें कुछ पागल सा लगता हूॅ? मैं तुम सबसे बहुत होशियार हूॅ। तुम मुझसे यह क्यों कहते हो कि मैं पागल सा लगता हूॅ?"

"ऐसा हम इसलिये कहते हैं कि तुम्हारे पास कोई है तो नहीं पर फिर भी तुम बात किये जा रहे हो।"

"मेरे पास मेरा बेटा है। मैं उसी से बात कर रहा था।"

"तुम्हारा बेटा? पर वह है कहॉ?"

"वह मेरी जेब में है।"

"अरे वाह। यह तो बेटे को रखने की बड़ी अच्छी जगह है।"

"हॉ वह तो है। मैं तुमको अभी दिखाता हूॅ।"

कह कर उसने अपनी जेब से चिचीनो को निकाला जो इतना छोटा था कि वह अपने पिता की एक उॅगली पर खड़ा हुआ था।

"ओह कितना प्यारा बच्चा है तुम इसको हमें बेच दो।

"क्या? तुम क्या सोचते हो कि मैं अपना वह बेटा तुमको बेचूॅगा जो मेरे लिये इतना कीमती है? नहीं नहीं कभी नहीं।"

"ठीक है मत बेचो।"

तब वह क्या करेगा? उसने चिचीनो को उसके बैल के एक सींग पर बिठा दिया और उससे कहा — "तुम यहॉ थोड़ी देर बैठो मैं ज़रा घर से इसके बैलों के सामान की मरम्मत का सामान ले कर आता हूॅ।"

"हॉ हॉ आप डरिये नहीं। मैं यहॉ इस बैल के सींग पर ही बैठा रहूॅगा।"

बढ़ई चिचीनो को बैल के सींग पर बिठा कर उनके बैलों के सामान की मरम्मत करने का सामान लेने घर चला गया।

इस बीच दो चोर वहॉ से गुजरे तो उन्होंने रास्ते में दो बैलों को देखा तो उनमें से एक चोर बोला — "तुम उन दो बैलों को वहॉ खड़े देख रहे हो न। चलो उनको चुरा लेते हैं।"

यह सोच कर जैसे ही वे उनके पास गये तो चिचीनो चिल्ला पड़ा — "पिता जी देखिये, यहॉ तो चोर हैं। वे आपके बैल चुरा रहे हैं।"

यह सुन कर एक चोर बोला — "अरे यह आवाज कहॉ से आयी?"

यह देखने के लिये कि यह कौन बोला वे उन बैलों के और पास गये तो उनको और पास आता देख कर चिचीनो ने और ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया — "पिता जी अपने बैल देखिये, चोर आपके बैलों को चुराने आ रहे हैं।"

पर फिर भी उनकी समझ में नहीं आया कि वह आवाज कहॉ से आ रही थी।

तभी बढ़ई वहॉ आ गया तो चोरों ने उससे पूछा — "ओ भले आदमी यह आवाज कहॉ से आ रही थी?"

"यह मेरे बेटे की आवाज है।"

"पर तुम्हारा बेटा तो हमको कहीं दिखायी नहीं दे रहा। वह है कहॉ?"

"अरे तुमको दिखायी नहीं दे रहा वह? वह बैठा है एक बैल के सींग के ऊपर।"

जब उसने उनको अपना बेटा दिखाया तो वे भी बोले — "तुम हमको अपना बेटा बेच दो। हम इसके लिये तुमको जितना तुम चाहोगे उतना पैसा देंगे।"

बढ़ई बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो? मैं तो तुम्हें इसे बेच भी दूँ पर तुम नहीं जानते कि अगर मैंने इसे तुम्हें बेच दिया तो मेरी पत्नी कितनी नाराज होगी।"

"मैं बताऊँ कि तुम अपनी पत्नी से क्या कहना। तुम कहना कि वह रास्ते में मर गया।"

उन चोरों ने उसको इतना ज़्यादा लालच दिया कि उसने उनसे दो थैले भर कर पैसे ले कर चिचीनो को उन्हें बेच दिया। उनमें से एक चोर ने चिचीनो को अपनी जेब में रखा और वे आगे चल दिये।

चिचीनो और चोर

जब वे चोर चिचीनो को ले कर जा रहे थे तो वे राजा के अस्तबल के सामने से गुजरे। उनमें से एक बोला — "चलो ज़रा देखते हैं कि राजा के अस्तबल में क्या है और हम वहॉ से एक घोड़े का जोड़ा चुरा सकते हैं या नहीं।"

"हॉ ठीक है।"

फिर उन्होंने चिचीनो से कहा — "देखो तुम हमको धोखा मत देना।"

"डरो नहीं, मैं तुम्हें धोखा नहीं दूँगा।"

सो वे दोनों राजा के अस्तबल में जा पहुँचे और वहॉ से उन्होंने तीन घोड़े चुरा लिये। उनको वे अपने घर ले गये और उनको अपने अस्तबल में बॉध दिया।

बाद में उन्होंने चिचीनो से कहा — "देखो हम लोग बहुत थक गये हैं। तुम हमारा एक काम कर दो कि तुम नीचे जाओ और घोड़ों को ओट्स[34] खिला दो।"

सो चिचीनो उन घोड़ों को ओट्स खिलाने के लिये नीचे चला गया। वहॉ जा कर वह एक घोड़े के सिर के ऊपर लगे चमड़े के साज पर सो गया। इस बीच में एक घोड़ा उसको खा गया।

जब चिचीनो घोड़ों को ओट्स खिला कर वापस नहीं लौटा तो चोरों ने सोचा कि वह शायद अस्तबल में ही सो गया होगा सो वे उसको वहॉ देखने गये।

वहॉ जा कर उन्होंने उसको पुकारा — "चिचीनो तुम कहॉ हो?"

चिचीनो घोड़े के पेट के अन्दर से ही बोला — "मैं काले घोड़े के अन्दर हूँ।"

[34] Oats is kind of grain – see its picture above.

यह सुन कर चोरों ने काले घोड़े को मार दिया पर चिचीनो तो उनको वहॉ पर कहीं भी नहीं मिला

उन्होंने उसको फिर पुकारा — "चिचीनो तुम कहॉ हो?"

अबकी बार चिचीनो बोला — "मैं कत्थई घोड़े के अन्दर हूॅ।" यह सुन कर चोरों ने कत्थई घोड़े को भी मार दिया पर चिचीनो उनको वहॉ पर भी कहीं नहीं मिला।

वहॉ जा कर उन्होंने उसको फिर पुकारा — "चिचीनो तुम कहॉ हो?" पर इस बार चिचीनो चुप ही रहा बोला नहीं।

चोर बहुत दुखी हो गये। वे बोले — "कितने दुख की बात है कि वह बच्चा हमारे कितने काम का था और वह अब हमें नहीं मिल रहा।" तब उन्होंने अपने दोनों मारे गये घोड़ों को अस्तबल से खींच कर बाहर निकाल लिया।

तभी वहॉ से एक बहुत ही भूखा भेड़िया जा रहा था। उसने उन दोनों घोड़ों को वहॉ पड़ा देखा तो उसने सोचा कि आज तो उसकी अच्छी दावत रहेगी।

सो उसने वहॉ उन घोड़ों का मॉस खूब पेट भर कर खाया। इसी खाने के साथ साथ चिचीनो भी उसके पेट में चला गया। उसके बाद वह भेड़िया वहॉ से चला गया। दोबारा भूख लगने पर उसने सोचा कि अबकी बार वह बकरा खायेगा।

जब चिचीनो ने भेड़िये को बोलते सुना तो वह ज़ोर से चिल्लाया — "ओ बकरियों के रखवालों, देखो यह भेड़िया तुम्हारी बकरियॉ खाने आ रहा है।"

भेड़िये ने जब यह सुना तो उसको लगा कि हो सकता है कि शायद कुछ हवा उसके पेट के अन्दर चली गयी है यह वही बोल रही है।

उसने खुद को एक पत्थर से टकराया ताकि उससे उसकी हवा निकल जाये। इससे उसकी हवा और चिचीनो दोनों ही बाहर आ गये। चिचीनो एक पत्थर के नीचे छिप गया ताकि भेड़िया उसे देख न ले।

चिचीनो और डाकू

उसी समय तीन डाकू पैसों का एक थैला ले कर उधर से जा रहे थे तो वे वहीं अपने पैसों का बॅटवारा करने के लिये रुक गये।

उनमें से एक बोला — "अब देखो मैं एक एक कर के गिनता हूॅ और तुम सब लोग चुप रहना। अगर कोई बोला तो मैं उसकी जान ले लूॅगा।"

अब तुम सोच सकते हो कि सभी चुप हो कर बैठ गये क्योंकि कोई मरना नहीं चाहता था। अब उसने गिनना शुरू किया — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

तभी चिचीनो बोला — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

यानी उसने उस डाकू के शब्द दोहरा दिये।

गिनने वाला डाकू बोला — "तो तुम लोग चुप नहीं रहोगे। बस अब मैं तुम्हें मारने वाला हूँ।" और यह कह कर उसने एक आदमी को मार दिया।

"मैं अब देखता हूँ कि अब तुम चुप रहते हो कि नहीं। अगर अब भी तुम बोले तो मैं तुम्हारी भी जान ले लूँगा।"

कह कर उसने फिर से गिनना शुरू कर दिया — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

चिचीनो ने फिर से डाकू के शब्द दोहरा दिये — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

"ध्यान रखना अगर मुझे तुमसे फिर से कहना पड़ा कि चुप रहो तो मैं तुम्हें जान से मार दूँगा।"

"तुम क्या सोचते हो कि क्या मैं बोलना चाहूँगा? मैं मरना नहीं चाहता।"

उसने फिर से गिनना शुरू कर दिया — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

चिचीनो ने फिर से डाकू के शब्द दोहरा दिये — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

डाकू बोला — "तुम चुप नहीं रहोगे। अब मैं तुम्हें मारता हूँ।" और उसने दूसरे आदमी को भी मार दिया।

वह फिर बोला — "अब तो मैं अकेला हूॅ अब मैं अपने आप गिन सकता हूॅ। अब मेरे बीच में कोई नहीं बोलेगा।"

सो उसने फिर से गिनना शुरू किया — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

और चिचीनो ने फिर से डाकू के शब्द दोहरा दिये — "एक, दो, तीन, चार और पॉच।"

डाकू बोला — "लगता है कि यहॉ कोई छिपा हुआ है। मुझे यहॉ से भाग जाना चाहिये नहीं तो वह मुझे मार देगा।"

यह सोचते ही डर के मारे उसने अपना पैसे का थैला तो वहीं छोड़ा और वहॉ से भाग लिया।

जब चिचीनो ने यह पक्का कर लिया कि अब वहॉ कोई नहीं है तो वह पत्थर के नीचे से निकला, पैसे का थैला अपने सिर पर रखा और अपने घर की तरफ चल दिया।

जब उसकी मॉ ने उसे आते हुए सुना तो वह उसको बाहर तक लेने के लिये आयी। उसके सिर से पैसे का थैला उतारा और बोली — "ज़रा ध्यान से चिचीनो। देखना तू कहीं इस बारिश के पानी में न डूब जाना।"

कह कर मॉ घर के अन्दर चली गयी पर वह चिचीनो को देखने के लिये मुड़ी कि वह उसके पीछे आ रहा है या नहीं तो वह तो उसे कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

उसने अपने पति को बताया कि चिचीनो ने क्या किया था। फिर उन दोनों ने उसको इधर उधर बहुत खोजा तब कहीं जा कर वह उनको बारिश के पानी के एक छोटे से गड्ढे में डूबा हुआ मिला।

उसने उसको गड्ढे में से बाहर निकाला और घर में अन्दर ले कर आयी।

8 थम्बिकिन[35]

टौम थम्ब जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के नौर्स देशों[36] की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक स्त्री रहती थी जिसके बस एक ही बेटा था और उसका वह बेटा भी तुम्हारे अॅगूठे से बड़ा नहीं था। इसलिये वे उसको थम्बिकिन कह कर बुलाते थे।

जब वह इतना बड़ा हो गया कि वह अच्छा बुरा समझ सके तो उसकी मॉ ने उससे कहा कि वह अब दुनियॉ में जाये और अपने लिये एक लड़की ढूॅढे ताकि वे उसकी शादी उससे कर सकें।

उन्होंने उससे यह भी कहा कि अब वह इतना बड़ा हो गया है कि उसको अब शादी कर लेनी चाहिये।

जब थम्बिकिन ने यह सुना तो वह तो बहुत खुश हो गया। उसकी मॉ ने उसको अपनी छाती में रख लिया और दोनों एक घोड़े पर सवार हो कर उसके लिये लड़की ढूॅढने चल दिये।

वे एक ऐसे रास्ते पर जा रहे थे जो एक ऐसे महल की तरफ जाता था जहॉ एक बहुत सुन्दर और बहुत बड़ी राजकुमारी रहती

---

[35] Thumbikin – a folktale from Norse countries, Europe. Adapted from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/neu/ptn/ptn61.htm
Taken from the Book : "Popular Tales from the Norse", by George Webbe. This complete book is available at the above Web Site.

[36] There are five countries situated in the far Northern part of the Europe continent – Denmark, Iceland, Finland, Sweden and Norway. All these five countries are jointly called Norse, or Nordic, or Scandinavian countries.

थी। पर जब वे उस रास्ते पर थोड़ी ही दूर गये थे कि मॉ के पास से थम्बिकिन खो गया।

उसकी मॉ बेचारी ने उसको इधर उधर बहुत ढूँढा बहुत पुकारा बहुत रोयी पर वह तो उसको कहीं दिखायी ही नहीं दिया।

तभी थम्बिकिन बोला — "पिप पिप। मैं यहॉ हूँ मॉ।" थम्बिकिन घोड़े की गरदन के लम्बे बालों में छिपा हुआ था। वह वहॉ से बाहर निकला और उसने अपनी मॉ से वायदा किया कि आगे से वह फिर ऐसा कभी नहीं करेगा।

पर वे लोग अभी थोड़ी दूर ही और चले होंगे कि थम्बिकिन ने फिर वैसा ही किया। वह फिर खो गया। उसकी मॉ बेचारी ने उसको फिर इधर उधर बहुत ढूँढा बहुत पुकारा बहुत रोयी पर वह तो उसको फिर कहीं दिखायी ही नहीं दिया। अबकी बार तो वह उसको मिला ही नहीं।

आखिर फिर उसकी आवाज आयी — "पिप पिप। मैं यहॉ हूँ मॉ।"

फिर उसने उसकी हँसी की आवाज तो सुनी पर वह अबकी बार तो वह उसको अपनी सारी ज़िन्दगी नहीं पा सकती थी।

इस बार वह घोड़े के कान में था। वह वहीं से चिल्लाया — "पिप पिप। मैं यहॉ हूँ मॉ।" और फिर वहॉ से बाहर निकल आया। अबकी बार उसको पक्का वायदा करना पड़ा कि वह अब फिर से कहीं छिपेगा नहीं।

पर वे फिर से कुछ दूर ही गये होंगे कि वह फिर से गायब हो गया। वह कुछ कर ही नहीं सकता था। और उसकी मॉ बेचारी ने भी उसको फिर इधर उधर बहुत ढूँढा बहुत पुकारा बहुत रोयी पर वह तो उसको कहीं दिखायी ही नहीं दिया। वह बेचारी जितना ज़्यादा उसको ढूँढती उतना ही वह उसको नहीं मिलता।

पर फिर एक आवाज आयी — "पिप पिप। मैं यहॉ हूँ मॉ।"

पर अबकी बार तो वह यह पता ही नहीं कर सकी जहॉ से वह बोल रहा था क्योंकि उसकी आवाज बहुत गहरी आ रही थी।

लेकिन फिर भी उसने इधर उधर देखना शुरू किया और थम्बिकिन बार बार वहीं से चिल्लाता रहा "मैं यहॉ हूँ मॉ मैं यहॉ हूँ।" और यह देख कर कि उसकी मॉ उसको ढूँढ नहीं पा रही है वह हॅसता रहा और खुश होता रहा।

पर तभी घोड़े ने अपनी सॉस ज़ोर से बाहर निकाली तो थम्बिकिन भी उसकी सॉस के साथ साथ बाहर आ गया क्योंकि वह उसके एक नथुने में घुस गया था।

यह सब देख कर अबकी बार उसकी मॉ को और कुछ नहीं सूझा तो उसने उसको एक थैले में रख लिया। वह उसके इस छिपने से बहुत तंग आ गयी थी।

चलते चलते अब वे लोग एक दूसरे राजा के महल आ पहुँचे थे। क्योंकि राजकुमारी को वह एक छोटा सा लड़का बहुत ही सुन्दर लगा सो राजा की बेटी ने उससे शादी के लिये तुरन्त ही हॉ कर दी

और उससे उसकी शादी पक्की हो गयी। शादी का दिन भी पास आ गया।

जब वे लोग शादी की दावत खाने के लिये बैठे तो थम्बिकिन राजकुमारी के बराबर वाली मेज पर बैठा।

पर यह सीट उसके लिये सीट न होने से भी बुरी थी। क्योंकि जब भी वह खाना खाने के लिये मेज की तरफ हाथ बढ़ाता उसका हाथ वहॉ तक पहुँचता ही नहीं। अगर राजकुमारी उसकी खाना खाने में सहायता नहीं करती तब तो शायद उसको खाना ही नहीं मिलता।

खैर जब तक उसको प्लेट में से खाना मिलता रहा तब तक तो सब ठीक चलता रहा पर फिर उसके सामने एक दलिये का कटोरा आया। अब वह उसके पास तक नहीं पहुँच सकता था।

पर उसने जल्दी ही एक तरकीब ऐसी सोच ली जिससे वह उसे अपने आप खा सकता। वह तुरन्त ही दलिये के कटोरे के किनारे पर बैठ गया।

पर उसके बीच में मक्खन का एक टुकड़ा पड़ा था जो पिघल रहा था। अब वह अपना दलिया उस मक्खन में डुबो नहीं पा रहा था। सो वह दलिये के कटोरे के किनारे पर से उठा और उस पिघलते हुए मक्खन के टुकड़े पर जा बैठा।

पर तभी वहॉ कौन आ गया? वहॉ राजकुमारी एक बड़ी सी चम्मच भरे दलिया मक्खन में डुबोये हुए आ गयी। पर अफसोस

जैसे ही वह थम्बिकिन के बहुत पास तक पहुॅची वह उससे टकरा गयी।

इस टकराने से थम्बिकिन सिर के बल उस पिघलते हुए मक्खन में गिर पड़ा और उसी में डूब गया।

9 अली थम्ब[37]

टौम थम्ब जैसी यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के तुर्की देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक पति पत्नी रहते थे उनके एक बेटा था जिसका नाम उन्होंने अली रखा। यह बच्चा उनको एक आश्चर्य के रूप में मिला था क्योंकि जब वह पैदा हुआ था तब वह एक अॅगूठे से ज़्यादा बड़ा नहीं था।

शुरू शुरू में तो उसके माता पिता दोनों ही बहुत परेशान थे क्योंकि इतना छोटा बच्चा उन्होंने पहले कभी देखा नहीं था पर फिर दोनों ने सोचा कि जब इसे हमें भगवान ने दिया है तो बड़ा हो कर यह जरूर ही बड़ा और ताकतवर आदमी बनेगा।

पर कई साल बीत जाने के बाद भी अली नहीं बढ़ा वह बस एक अॅगूठे के बराबर ही रहा।

उसकी मॉ हर शाम अपने बेटे के खाने के लिये एक थाली लगाती पर उसकी वह थाली बहुत छोटी सी होती। उसमें वह उसके लिये एक छोटा चाय का चम्मच सूप भर देती। उसके पास एक बहुत छोटा सा प्याला भी था जिसको उसकी मॉ एक बूॅद पानी से भर देती।

[37] Ali Thumb – a folktale from Turkey, Europe. By Anonymous. Adapted from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/451/preview

जब तक परिवार घर में रहता तब तक तो सब कुछ ठीक रहता पर माता पिता को अपने बच्चे को देख कर यही सोच सोच कर शर्म आती थी कि अगर किसी ने उसको देख लिया तो वे उस छोटे से बच्चे को चिढ़ायेंगे और तंग करेंगे। वे ऐसा नहीं चाहते थे इसलिये वे उसको दूसरों की नजरों से छिपा कर घर के अन्दर ही रखते थे।

और कई साल बीत गये। आखिर अली की बीसवीं सालगिरह मनाने का समय भी आया पर वह अभी भी अॅगूठे के बराबर ही छोटा था। पर उसकी आवाज बहुत भारी और तेज़ हो गयी थी।

असल में अगर कोई उनके बेटे की आवाज सुनता तो कहता कि यह तो किसी बड़े साइज़ के आदमी[38] की आवाज है।

अली एक बहुत ही दुखी नौजवान था क्योंकि उसका कोई दोस्त नहीं था क्योंकि उसको अपना सारा समय अपने माता पिता के घर में छिप कर ही बिताना पड़ता था।

एक दिन अली के पिता पास के एक शहर के बाजार जाने के लिये तैयार हो रहे थे। उसका पिता वहॉ एक रात होटल में गुजारना चाह रहा था क्योंकि वह वहॉ से एक दिन में अपना काम खत्म कर के वापस घर नहीं आ सकता था।

अली ने अपने पिता से प्रार्थना की कि वह उसको भी अपने साथ ले चले पर उसका पिता उसके इस विचार से कुछ ज़्यादा खुश नहीं था।

[38] Translated for the word “Giant”

उसने कहा — "बेटा हम आज तक तुम्हें कभी बाहर नहीं ले गये और मुझे नहीं लगता कि यह काम हम आज भी कर सकते हैं या नहीं। क्योंकि हमको नहीं मालूम कि हम दूसरे लोगों से तुम्हें कैसे छिपायेंगे या फिर उनसे तुम्हारी रक्षा कैसे करेंगे।"

अली तुरन्त ही अपनी भारी तेज़ आवाज में बोला — "यह तो बड़ा आसान है पिता जी। आप मुझे अपनी जेब में रख लीजियेगा इससे किसी को भी पता नहीं चलेगा कि मैं वहॉ पर हूँ। इसके बाद आप अपनी जेब में एक छोटा सा छेद कर लीजियेगा ताकि मैं उसमें से सॉस ले सकूँ।

इसके अलावा मैं उसमें से बाहर देख भी सकूँ कि बाहर क्या हो रहा है और दुनियॉ के नये नये दृश्य भी देख सकूँ।"

अली के पिता ने देखा कि यह सब बात करते हुए अली कितना खुश है। जब वह यह सोच कर ही इतना खुश है तो वह घर से बाहर जा कर कितना खुश होगा। इसको देखते हुए वह अली को ना नहीं कह सका।

सो अली के पिता ने अपनी कमीज की जेब में एक छोटा सा छेद किया और अली को अपनी जेब में रख लिया। मॉ ने यात्रा के लिये पिता को थैले थमाये और दोनों को शुभ यात्रा कहा। इस तरह अली और उसके पिता पास के शहर की ओर चल दिये।

वे सारा दिन चल कर शाम को सड़क के किनारे वाले एक होटल में आये। पिता ने कहा — "हम यहॉ पर रात भर के लिये

एक कमरे में ठहरेंगे। कल सुबह ही हम बाजार के लिये निकल जायेंगे और फिर उसके बाद हम अपने घर वापस लौट जायेंगे।"

अली बोला — "मुझे तो विश्वास ही नहीं रहा है पिता जी कि मैं किसी होटल में ठहर रहा हूॅ।" वह यहॉ आ कर बहुत ही खुश था। उसने तो अपनी यात्रा में ही काफी देख लिया था और इसके अलावा वह अपने घर के अलावा तो कहीं और सोया भी नहीं था। अपनी इस यात्रा से बहुत खुश था।

अली के पिता ने एक कमरे का किराया दिया और अपने थैले उठा कर शाम का खाना खाने के लिये तैयार होने के लिये चल दिया।

अली के पिता ने मुॅह हाथ धोये अपना सामान खोला और फिर अली को अपनी कमीज की जेब में छिपाये हुए ही इस आशा में खाना खाने के लिये नीचे खाने के कमरे में चला गया कि शायद वह वहॉ से अपने छोटे से बेटे के लिये कुछ खाना चुरा सके।

और फिर अचानक से कुछ अजीब सा घटा। जब वहॉ सारे लोग अपना अपना खाना खाने के लिये बैठ गये तो वहॉ डाकुओं का एक झुंड घुस आया। नीच दिखायी देने वाले वे तीन लोग थे।

उन्होंने अपनी अपनी बन्दूकें सब बैठे हुए लोगों की तरफ तान कर कहा कि वे लोग अपने अपने पैसे और सब कीमती चीज़ें उनको सौंप दें नहीं तो वे उन सबको मार देंगे।

यह देख कर वहॉ बैठे सब लोग बहुत डर गये। यहॉ तक कि अली के पिता भी डर गये। पर उन सभी ने वही किया जो उनसे करने को कहा गया था।

सबने अपने अपने बटुए और कीमती चीज़ें निकाल कर अपने सामने मेज पर रखनी शुरू कीं ताकि वे डाकू उनको ले जा सकें।

अभी वे लोग यह सब कर ही रहे थे कि कहीं से एक भारी और तेज़ आवाज आयी। आवाज बोली — "अपनी अपनी बन्दूकें नीचे रख दो। मैं तुम सबको पकड़ने और फिर तुमको पुलिस के हवाले करने के लिये अन्दर आ रहा हूँ।"

किसी को यह पता नहीं चला कि यह आवाज कहॉ से आयी। डाकुओं ने कमरे में चारों तरफ देखा कि उनको कहीं कोई दिखायी दे जाये पर उनको कहीं कोई दिखायी ही नहीं दिया।

उसके बाद वही आवाज फिर से आयी। इस बार वह और ज़्यादा गहरी और ज़्यादा तेज़ थी — "तुम लोगों को अपने इस बुरे काम के लिये पछताना पड़ेगा। मैं देखूँगा कि तुम सब लोग जेल में कई साल तक सड़ो।"

अब क्योंकि डाकू यह पता नहीं चला सके कि यह आवाज कहॉ से आ रही थी सो उन्होंने बस यह कह कर अपने आपको सन्तुष्ट कर लिया कि जरूर ही यह कोई भूत बोल रहा है और अगर वे डाकू वहॉ पुलिस से भी ज़्यादा किसी चीज़ से डरते थे तो वह थे भूत।

बस यह सोचते ही कि यह भूत की आवाज होगी डाकुओं ने अपनी अपनी बन्दूकें वहीं फेंक दीं और होटल से बाहर भाग कर बाहर अॅधेरे में गायब हो गये।

हालॉकि डाकुओं के वहॉ से भाग जाने पर वहॉ बैठे सारे लोग बहुत खुश थे पर क्योंकि वे भी किसी को देख नहीं पाये थे कि वहॉ कौन बोल रहा था तो उनको भी वह भूत ही लगा और वे भी डर गये।

वे भी अपने अपने कमरों में जाने के लिये उठे तो अली के पिता ने कहा — "आप लोग चिन्ता न करें यह कोई भूत वूत बात नहीं कर रहा था बल्कि यह तो मेरा बेटा था।"

कह कर उसने अपनी जेब में हाथ डाल कर अली को मेज पर बाहर निकाल कर खड़ा कर दिया ताकि सब लोग उसको देख सकें।

अली अपने गहरी और तेज़ आवाज में बोला — "मुझे पूरा विश्वास है कि डाकू अब यहॉ लौट कर नहीं आयेंगे इसलिये अब आप लोग बिल्कुल नहीं डरें और आराम से खाना खायें।" इस सब घटना से उसके चेहरे पर एक बहुत ही बड़ी मुस्कुराहट थी। वह यह काम कर के बहुत खुश था।

वहॉ बैठे लोग भी अली से मिल कर बहुत खुश थे क्योंकि उन्होंने इससे पहले अॅगूठे के बराबर का कोई बच्चा नहीं देखा था।

पर सबसे ज़्यादा तो वे उसके कृतज्ञ थे कि उसने उनकी उन डाकुओं से जान और माल दोनों बचाये।

उन्होंने उससे हाथ मिलाये उसको धन्यवाद दिया और उसके पिता से कहा कि उसको तो ऐसे बेटे को पाने पर बहुत ही गर्व होना चाहिये।

सुबह को जब वे होटल छोड़ कर बाजार जाने लगे तो अली के पिता ने अपने छोटे से बेटे को अपनी जेब से बाहर निकाला और अपने कन्धे पर बिठा लिया।

सारी सुबह बाजार में और फिर घर लौटते समय अली के पिता को राह चलते लोगों को अपने बेटे का परिचय देने के लिये कई बार रुकना पड़ा।

इसके अलावा जो कुछ उसके बेटे ने शहर में होटल में किया वह भी वह उन सबको बताने में बहुत गर्व महसूस कर रहा था कि किस तरह से उसके बेटे ने तीन डाकुओं को डरा कर वहॉ बैठे सब लोगों की जान बचायी।

शाम को जब पिता और बेटा घर लौटे तो अली की मॉ ने देखा कि अली तो अपने पिता के कन्धे पर बैठा हुआ है। यह देख कर तो वह बहुत चिन्ता में पड़ गयी।

इससे पहले कि अली या अली का पिता कोई कुछ बोलता या वह भी अपने पति से उसकी यात्रा का हाल पूछती उसने उससे

पहला सवाल यही पूछा — "अगर किसी ने इसे देख लिया होता तो क्या होता?"

यह सुन कर उसका पति मुस्कुराया और उसने अपनी पत्नी को बताया कि उन दोनों ने उस दिन होटल में क्या क्या किया। कैसे अली ने उस दिन सब होटल वालों को तीन डाकुओं से बचाया।

फिर वह बोला — "अली की मॉ, यह हमारी बहुत बड़ी गलती थी जो हम इतने साल तक अली को घर में छिपाये रखे रहे। हमको तो अली पर और वह जो कुछ भी कर सकता है उस सब पर गर्व होना चाहिये।"

जब अली की मॉ ने अपने बेटे की बहादुरी की कहानी सुनी तो उसको भी अपने बेटे पर गर्व महसूस होने लगा। उसने भी सोच लिया कि वह अब कभी अली को अपना बेटा बताने में शरमिन्दगी महसूस नहीं करेगी और आगे से उसको कभी घर में छिपा कर भी नहीं रखेगी।

उस दिन के बाद से अली हमेशा जहॉ भी उसके माता पिता आते जाते हैं वह अपने माता पिता के कन्धे पर बैठ कर ही आता जाता रहा है। तबसे अली ने दुनियॉ की बहुत सारी चीज़ें भी देख ली हैं और बहुत सारे बहादुरी के काम भी किये हैं।

10 सर पैपरकौर्न[39]

एक बार तीन भाई एक जंगल में गये जहॉ से उनको बिल्डिंग बनाने के लिये पेड़ चुन कर काट कर लाने थे। जाने से पहले उन्होंने अपनी मॉ से कहा कि वह उनकी बहिन को उनका खाना ले कर उस जंगल में भेजना नहीं भूले।

मॉ ने उससे जैसा कहा गया था वैसा ही किया। उसने अपनी बेटी को खाना ले कर जंगल में भेज दिया। लड़की जब जंगल की तरफ जा रही थी तो रास्ते में उसको एक बड़े साइज़ का आदमी[40] मिल गया। वह उसे उठा कर एक गुफा में ले गया जहॉ वह रहता था।

भाइयों ने सारा दिन अपनी बहिन का इन्तजार किया पर वह नहीं आयी। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि उनकी मॉ ने उसके हाथ उनके लिये खाना क्यों नहीं भेजा।

आखिर दो दिन जंगल में रहने के बाद वे इस देर के लिये बहुत चिन्तित और गुस्सा हो गये तो घर गये। घर जा कर उन्होंने अपनी मॉ से पूछा कि उसने उनकी बहिन को खाना ले कर जंगल क्यों नहीं भेजा।

[39] Sir Peppercorn – a folktale from Serbia.
[40] Translated for the word “Giant”

मॉ ने बताया कि उसने तो उसको तीन दिन पहले ही उनके लिये खाना ले कर भेजा था बल्कि वह तो आश्चर्य कर रही थी कि वह अभी तक वापस क्यों नहीं आयी।

जब उन तीनों ने यह सुना तो वे भी अपनी बहिन के लिये बहुत परेशान हुए। सबसे बड़े भाई ने कहा — "ठीक है मैं जंगल जाता हूॅ और अपनी बहिन को ढूॅढ कर लाता हूॅ।" सो वह वहॉ से उसकी खोज में चल दिया।

कुछ देर तक इधर उधर घूमने के बाद उसको एक जानवर चराने वाली स्त्री मिली जो भेड़ चरा रही थी। उसने भेड़ चराने वाली से बड़ी उत्सुकता से पूछा कि क्या उसने उसकी बहिन को जंगल में कहीं देखा है। या फिर क्या वह यह बता सकती है कि उसकी बहिन कहॉ है।

भेड़ चराने वाली ने कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। मैंने एक लड़की को यहॉ से खाना ले जाते देखा था। पर रास्ते में उसको एक बड़े साइज़ का आदमी मिल गया जो उसको उठा कर अपनी गुफा में ले गया।"

इस पर नौजवान ने उस बड़े साइज़ के आदमी की गुफा का रास्ता पूछा जो उस स्त्री ने उसे बता दिया। उसकी गुफा एक गहरी घाटी में छिपी पड़ी थी। भाई तुरन्त ही वहॉ गया और अपनी बहिन का नाम ले कर उसे पुकारने लगा।

कुछ ही देर में लड़की गुफा के दरवाजे पर आ गयी।

अपने बड़े भाई को सामने खड़ा देख कर उसने उसको घर के अन्दर बुलाया। जब वह इस गुफा में अन्दर घुसा तो वह तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया कि वह केवल गुफा ही नहीं वह तो एक बहुत बड़ा शानदार महल था।

जब वह वहॉ खड़ा खड़ा अपनी बहिन से बात कर रहा था कि उसको अपन नया घर कैसा लगा कि तभी उसने अपने सिर के ऊपर घिर्र की आवाज सुनी और उसके बाद एक बहुत भारी गदा गुफा के सामने ऊपर से नीचे फर्श पर गिरती हुई सुनी।

पहले तो वह डर गया पर फिर उसकी बहिन ने उसे बताया कि यह उस बड़े साइज़ के आदमी के घर लौटने के बताने का तरीका था कि वह अपने आने के समय से तीन घंटे पहले अपनी गदा यहॉ फेंक देता था ताकि वह उसके लिये खाना बनाना शुरू कर दे।

जब अॅधेरा होने लगा तो बड़े साइज़ का आदमी घर आया। उसको तुरन्त ही पता चल गया कि कोई अजनबी उसके घर में है। उसके गुस्से भरे सवाल के जवाब में लड़की ने जवाब दिया कि वहॉ केवल उसका भाई था जो उससे मिलने आया था।

जब बड़े साइज़ के आदमी ने यह सुना तो गुफा के दरवाजे पर गया और एक चरवाहे से अपनी भेड़ों के झुंड में से एक सबसे मोटी भेड़ भूनने के लिये कहा।

जब उसका मॉस तैयार हो गया तो उसने अपने साले को बुलाया भेड़ को दो बराबर हिस्सों में बॉटा और उससे कहा — "मेरे

प्यारे साले साहब। अब जो मैं आपसे कह रहा हूॅ आप उसे ध्यान से सुनिये। अगर आप मेरे खाने से पहले अपना खाना खत्म कर लेंगे तो मैं आपको इजाज़त देता हूॅ कि आप मुझे मार सकते हैं।

पर अगर मैं अपना खाना आपसे पहले खत्म कर लेता हूॅ तो मैं निश्चित रूप से आपको मार दूॅगा।"

यह सुन कर तो साले साहब डर के मारे थर थर कॉपने लगे। बुरा सोचते हुए उसने जल्दी जल्दी खाना शुरू किया। उसने अभी तीन कौर ही खाये होंगे कि उसने देखा कि बड़े साइज़ के आदमी ने तो अपने हिस्से का खाना खत्म कर लिया था।

अब तो वह कुछ नहीं कर सकता था। अपनी धमकी के अनुसार उसने अपने साले साहब को खा लिया।

अब कुछ समय तक तो दोनों भाइयों और उनकी मॉ ने उस लड़के का बेचैनी से इन्तजार किया कि वह आता होगा पर फिर जब भाई और बहिन दोनों में से किसी का पता नहीं चला तो दूसरा भाई बोला कि अबकी बार वह उन दोनों की तलाश में जायेगा।

सो वह भी उसी जंगल की तरफ चल पड़ा जिधर उसका भाई गया था। उसी रास्ते में उसको भी वही भेड़ चराने वाली स्त्री मिली। उसने उससे पूछा कि क्या उसने किसी आदमी या लड़की को देखा था।

उसने इस भाई को भी वही जवाब दिया जो उसने उसके बड़े भाई को दिया था कि लड़की को एक बड़े साइज़ का आदमी उठा

कर अपनी गुफा में ले गया था। उसने भी उससे उस बड़े साइज़ के आदमी की गुफा का रास्ता पूछा। चरवाहिन ने उसको रास्ता बता दिया तो वह भी उधर ही की तरफ चल दिया। और गुफा तक पहुॅच गया।

वहॉ पहुॅच कर उसने अपनी बहिन को उसके नाम से पुकारा। बहिन बाहर निकल कर आयी और उसको घर के अन्दर ले गयी। वहॉ पहुॅच कर उसका भी वही हाल हुआ जो उसके बड़े भाई का हुआ था।

क्योंकि वह भी अपने हिस्से का खाना बड़े साइज़ के आदमी से जल्दी नहीं खा सका सो उसने अपने इन दूसरे साले साहब को भी मार दिया।

जल्दी ही तीसरे भाई ने कहा कि अबकी बार अपने भाइयों और बहिन को ढूॅढने के लिये वह जायेगा। सो वह भी चला और चरवाहिन के बताये रास्ते पर चल कर अपनी बहिन के घर पहुॅच गया। बहिन ने उसको भी घर में अन्दर बुला लिया।

उसको भी आधी भेड़ खाने के लिये कहा गया या फिर उसे मार दिया जायेगा। अपने दूसरे भाइयों की तरह से वह भी अपने हिस्से का खाना बड़े साइज़ के आदमी से जल्दी नहीं खा सका सो उसका भी वही हाल हुआ जो उसके दोनों भाइयों का हुआ था।

इस तरह लड़की के तीनों भाई मारे गये। सो जब कोई भी लौट कर नहीं आया तो मॉ ने भगवान से प्रार्थना की कि अब अपने तीनों

बेटों के खो जाने के बाद भगवान उसको एक बेटा और दे दे चाहे वह एक काली मिर्च के दाने[41] के बराबर ही बड़ा क्यों न हो।

जैसे ही माता पिता ने प्रार्थना की कि उनकी इच्छा पूरी हुई। कुछ दिनों बाद उनके एक बेटा हुआ। वह साइज़ में इतना छोटा था कि उन्होंने उसका नाम ही काली मिर्च[42] रख दिया।

जब वह लड़का कुछ बड़ा हो गया तो वह दूसरे लड़कों के साथ खेलने के लिये बाहर जाने लगा। एक दिन बच्चों में आपस में कुछ झगड़ा हुआ तो एक लड़के ने उससे कहा — "भगवान करे तेरे साथ भी वही हो जो तेरे तीनों बड़े भाइयों के साथ हुआ।"

यह सुन कर काली मिर्च तुरन्त ही घर दौड़ गया और अपनी मॉ से पूछा कि जो कुछ उस लड़के ने उससे कहा उसका क्या मतलब था। सो मॉ को मजबूरन अपने चारों बच्चों की कहानी उसको बतानी पड़ी।

उसने कहा कि तुम्हारे तीन बड़े भाई अपनी खोयी हुई बहिन के ढूँढने गये थे और फिर कभी नहीं लौटे। जैसे ही काली मिर्च ने यह सुना तो उसने सारे घर में पुराने लोहे के टुकड़ों को ढूँढना शुरू कर दिया।

[41] Translated for the word "Peppercorn"

[42] Mr Peppercorn

जब उसे कुछ टुकड़े मिल गये तो वह उनको एक लोहार के पास ले गया ताकि वह उनसे एक गदा बनवा सके। लोहार ने कहा कि वह कल आ कर अपनी गदा ले जाये।

अगले दिन जब वह अपनी गदा लेने गया तो लोहार ने उसको जो गदा उसने बनायी थी दे दी और बोला "अब इसके बनाने की मजदूरी दो।"

इस पर काली मिर्च ने कहा — "पहले मुझे यह तो देख लेने दो कि यह गदा मजबूत भी है या नहीं।"

कह कर उसने वह गदा ऊपर हवा में उछाल दी और अपना सिर आगे कर दिया ताकि वह उसे अपने सिर पर सॅभाल ले। जैसे ही वह उसके सिर पर गिरी वह टूट गयी। काली मिर्च ने जब उसे इस तरह टूटते हुए देखा तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उस लोहार को मार दिया।

फिर उसने लोहे के उन टुकड़ों को बटोरा और उन्हें एक उससे ज़्यादा अच्छे लोहार के पास ले गया। जल्दी ही उसको एक और अच्छा लोहार मिल गया पर वह उससे गदा बनाने का एक डकैट[43] मॉग रहा था।

काली मिर्च बोला कि वह उसको गदा बनाने का एक डकैट जरूर दे देगा अगर उसने उसको सचमुच मजबूत गदा बना कर दे दी

[43] Ducat – European currency in those times

तो। सो अगली सुबह वह अपनी गदा लेने के लिये वहा पहुॅचा और गदा मॉगी।

लोहार बोला "पर पहले तुम मुझे एक डकैट दो तब मैं तुम्हें तुम्हारी गदा दूॅगा।"

काली मिर्च बोला — "तुम्हारा डकैट मेरी जेब में रखा है। पर उसे तुम्हें देने से पहले मैं यह तो देख लूॅ कि मेरी यह गदा मजबूत भी बनी है या नहीं।"

कह कर उसने उससे गदा ली और हवा में ऊपर उछाल दिया और फिर उसको अपने सिर पर लेने के लिये अपना सिर आगे कर दिया। जैसे ही वह उसके सिर से टकरायी उसके टुकड़े टुकड़े हो गये। यह देख कर उसे बहुत गुस्सा आया और उसने इस दूसरे लोहार को भी मार दिया।

उसने अपने लोहे के टुकड़े फिर से उठाये और उनको ले कर एक तीसरे लोहार के पास ले गया। उसने वायदा किया कि वह उसके लिये एक बहुत ही मजबूत गदा बना देगा पर इसके लिये उसको उसे एक डकैट देना पड़ेगा।

अगले दिन जब काली मिर्च अपनी गदा लेने गया तो उसने उसकी बनायी हुई गदा को तीन बार ऊपर उछाला और तीनों बार उसे अपने सिर पर लिया। तीनों बार उसने उसके सिर पर गूमड़[44] डाल दिया पर वह खुद नहीं टूटी।

[44] Translated for the word "Bump"

काली मिर्च ने उसको एक डकैट दिया और अपनी गदा ले कर वहॉ से चल दिया। अब तो उसके पास बहुत अच्छी गदा थी सो वह सीधा उसी जंगल की तरफ चल दिया जिसमें उसके तीनों भाई और बहिन खो गये थे।

कुछ देर बाद वह भी उसी जगह आ गया जहॉ वह चरवाहिन भेड़ें चरा रही थी। उसने उससे अपने भाइयों और बहिन के बारे में पूछा तो वह बोली कि लड़की को तो एक बड़े साइज़ वाला आदमी उठा कर ले गया है। और तीन भाइयों को उसने उधर जाते तो देखा है पर वापस आते नहीं देखा।

काली मिर्च की समझ में कुछ नहीं आया तो वह भी उसी गुफा में जा पहुॅचा और अपनी बहिन का नाम ले कर पुकारा। बहिन ने सोचा "मेरे तो तीन भाई थे तीनों इस राक्षस ने मार डाले हैं तो अब कौन है जो मुझे मेरे नाम से पुकार रहा है।"

वह गुफा के दरवाजे तक गयी और पूछा — "यह कौन है जो मुझे बुला रहा है। मेरा तो कोई भाई ही नहीं है।"

काली मिर्च बोला — "मैं तुम्हारा भाई हूॅ मैं तुम्हारे घर छोड़ने के बाद पैदा हुआ था। मेरा नाम काली मिर्च है।"

अब सब जानने के बाद तो उसके बाद बिल्कुल ही समय नहीं था कि वह अपनी बहिन से कुछ बात कर पाता। कि इतने में ही उसने घिर्र की आवाज सुनी और बड़े साइज़ के आदमी की गदा गुफा के सामने आ पड़ी।

एक पल को तो काली मिर्च बहुत डर गया पर जल्दी ही सॅभल भी गया। उसने जमीन में से राक्षस की गदा खींच ली और पलट कर उसी को मारी। राक्षस को तो यही समझ में नहीं आया कि यह कौन था जो उसकी गदा से उसी को मार रहा था। उसने सोचा कि शायद आज उसे उसी की टक्कर का कोई आदमी लड़ने के लिये मिल गया है।

जव वह बड़े साइज़ का आदमी घर में घुसा तो उसने उससे पूछा "घर में कौन है?"

लड़की बोली — "यह मेरा सबसे छोटा भाई है।"

जैसे उसने पहले उसके भाइयों के लिये एक मोटी भेड़ काटने और भूनने का हुक्म दिया था इस बार उसने इसके लिये एक भेड़ लाने का हुक्म दिया।

जब भेड़ उसके पास आ गयी तो उसने उसे अपने हाथों से मारा और उसे भूनने के लिये तैयार करने लगा। जब वह यह कर रहा था तो वह काली मिर्च से बोला — "क्या तुम मॉस को उलट पलट दोगे? आग को ज़रा सा ठीक से देख लोगे?"

काली मिर्च बोला — "मैं जंगल से लकड़ी लाना और फिर आग जलाना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

कह कर वह चला गया और अपनी गदा से उसने कई बड़े बड़े पेड़ गिरा दिये। उनको ला कर उसने गुफा के मुँह पर ला कर रख दिया और उन्हें जला कर एक बहुत बड़ी आग सुलगा दी।

जब भेड़ भुन गयी तो बड़े साइज़ के आदमी ने उसे दो हिस्सों में बॉट दिया। उनमें से एक हिस्सा उसने काली मिर्च को देते हुए कहा — "लो यह आधा हिस्सा तुम लो और इसका दूसरा आधा हिस्सा मैं लेता हूॅ। अगर इसको तुम मेरे खाने से पहले खा गये तो तुम मुझे मारने के लिये आजाद हो और अगर नहीं खा पाये तो मैं निश्चित रूप से तुम्हें मार दूॅगा।"

सो काली मिर्च और बड़े साइज़ का आदमी दोनों अपना अपना खाना खाने बैठे – जितना जल्दी वे खा सकते थे उतनी जल्दी खाते हुए बड़े बड़े टुकड़े निगलते हुए गले में फॅसते हुए।

आखिर काली मिर्च ने एक चाल खेली। वह अपना हिस्सा जल्दी खाने में सफल हो गया सो शर्त के अनुसार उसने बड़े साइज़ के आदमी को मार दिया। इसमें उसकी बहिन ने उसकी सहायता की।

फिर उसने उसका सारा खजाना उठाया और उसके महल में एक जगह पर इकट्ठा कर के रख दिया और फिर वह खजाना और अपनी बहिन को साथ ले कर घर लौट आया। उनके माता पिता उन लोगों को देख कर बहुत खुश हुए।

काली मिर्च कुछ समय तक अपने माता पिता और बहिन के साथ बड़े साइज़ के आदमी के खजाने पर रहा। जब उसने देखा कि उसका खजाना खत्म होने पर आ रहा है तो वह अपनी किस्मत आजमाने के लिये दुनियॉ में निकल पड़ा।

काफी जगह घूमने के बाद वह एक बड़े से शहर में आया। वहॉ उसने देखा कि एक जगह बहुत सारी भीड़ इकट्ठी हो रखी है। उस भीड़ के बीच में एक आदमी था जिसके हाथ में लोहे का एक भाला सा था।[45] वह जब तब उस लोहे को दबा कर उसमें से पानी निचोड़ देता था।

उसकी यह ताकत देख कर पास खड़े लोग उसकी बहुत प्रशंसा कर रहे थे और आश्चर्य प्रगट कर रहे थे। काली मिर्च उसके पास गया और उससे बोला — "क्या तुम किसी ऐसे आदमी को जानते हो जो दुनियॉ में तुमसे ज़्यादा ताकतवर है?"

वह बोला — "हॉ। ऐसा केवल एक आदमी ज़िन्दा है जो मुझसे ज़्यादा ताकतवर है और वह है काली मिर्च। उसके सिर पर अगर कोई गदा भी मार दो तो उसके सिर पर कोई असर नहीं पड़ता।"

यह सुन कर काली मिर्च ने उसको बताया कि वह कौन था और उससे कहा कि अच्छा होगा कि वे दोनों साथ साथ दुनियॉ घूमें।

भाले वाला आदमी इस बात पर राजी हो गया और बोला — "इससे ज़्यादा खुशी की बात मेरे लिये और क्या हो सकती है कि मुझे तुम्हारे जैसा भरोसे वाला आदमी मिल जाये।"

[45] Translated from the word "Pikeman"

और वे दोनों निकल पड़े। चलते चलते वे एक और शहर में आ पहुँचे। एक जगह भीड़ इकट्ठी देख कर वे उधर की तरफ चल दिये कि "देखें यहॉ क्या मामला है।"

वहॉ पहुँच कर उन्होंने देखा कि एक आदमी एक नदी के किनारे बैठा है और नौ चक्कियों के पहियों को अपनी छोटी उँगली से घुमा रहा है।

उन्होंने उससे पूछा — "क्या कोई और आदमी भी है जो तुमसे भी ज़्यादा ताकतवर हो?"

वह बोला — "हॉ है। मुझसे ज़्यादा ताकतवर दो आदमी है – एक तो काली मिर्च और दूसरा भाले वाला।"

यह सुन कर काली मिर्च और भाले वाले ने उसको बताया कि वे कौन थे और उससे कहा कि वह भी दुनियॉ घूमने के लिये उनके साथ चल सकता है। चक्की घुमाने वाला भी उनके साथ घूमने के लिये तुरन्त ही तैयार हो गया। सो तीनों एक साथ यात्रा पर चल दिये।

चलते चलते वे फिर एक बड़े से शहर में आये जहॉ सब लोग परेशान से घूम रहे थे क्योंकि किसी ने वहॉ के राजा की तीन बेटियॉ चुरा ली थीं।

राजा ने सारे राज्य में यह ढिंढोरा पिटवा रखा था कि जो कोई भी उसकी तीनों बेटियों को ढूँढ लायेगा वह उनको बहुत बड़ा इनाम

देगा पर फिर भी उनको ढूँढने के लिये जाने की किसी की हिम्मत नहीं थी।

जैसे ही काली मिर्च और उसके दोनों साथियों ने यह बात सुनी तो वे तीनों राजा के पास गये और उससे उसकी तीनों बेटियों को ढूँढने की इजाज़त मॉगी और एक लाख गाड़ी भर कर लकड़ी मॉगी।

राजा ने उनको वह दे दिया जो उन्होंने मॉगा था। उस लकड़ी से उन्होंने शहर के चारों तरफ एक बाड़ बना दी। यह कर के अब वे वहॉ की पहरेदारी करने लगे।

पहली सुबह उन्होंने अपने खाने के लिये एक बैल तैयार किया और एक दूसरे से पूछा कि कौन आदमी उस मॉस की निगरानी रखेगा जबकि दूसरे दो उस बाड़े की पहरेदारी करेंगे।

भाले वाला आदमी बोला कि वह उन दोनों के पीछे वहीं रुकेगा और मॉस की निगरानी करेगा। जब वे लोग शाम को बाड़े की पहरेदारी से वापस लौटेंगे तो वह उनके लिये शाम का खाना तैयार कर के रखेगा।

जब भाले वाले आदमी ने देखा कि उसका बैल अच्छी तरह भुन चुका है तो किसी आवाज को सुन कर वह डर गया। उसने देखा तो उसके सामने एक आदमी खड़ा था जिसका माथा तीन फीट ऊँचा था और उसकी दाढ़ी नौ इंच लम्बी थी।

इस आदमी ने भाले वाले आदमी से कहा — "गुड मौर्निंग।"

पर भाले वाला आदमी उसको अचानक इस तरह से आया देख कर इतना ज़्यादा डर गया कि बजाय उसको कोई जवाब देने के वह वहॉ से भाग गया।

तीन फीट माथे वाला और नौ इंच दाढ़ी वाला इससे बहुत सन्तुष्ट था। उसने आराम से बैठ कर वहॉ अपना खाना खाया और जल्दी ही सारा बैल खत्म कर लिया। खाना खा कर वह वहॉ से उठा और चला गया।

कुछ देर बाद ही सर काली मिर्च और चक्की घुमाने वाला खाना खाने के लिये वापस लौटे और क्योंकि वे बहुत भूखे थे इसलिये वे दूर से ही चिल्लाते हुए आ रहे थे — "हमें जल्दी खाना दो हमें बहुत भूख लगी है।"

पर चक्की घुमाने वाला तो डर के मारे झाड़ियों में छिपा बैठा था। वह वहीं से बोला — "अब हमारे पास कोई खाना नहीं है। अभी थोड़ी देर पहले तीन फुट ऊॅचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला यहॉ आया था। वह सारा का सारा बैल खा गया उसने एक कौर भी नहीं छोड़ा। मैं तो उसको देख कर बहुत डर गया था सो मैं तो उसके सामने कुछ बोल ही नहीं सका।"

काली मिर्च और चक्की घुमाने वाले दोनों ने भाले वाले को अपना खाना बरबाद करने के लिये बहुत डॉटा पर उसने उसका एक बार भी विरोध नहीं किया।

चक्की घुमाने वाला बोला — "कल मॉस की रखवाली मैं करूँगा और अगर वह तीन फीट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला कल आया तो मैं उसे कल जरूर रोकूँगा।"

सो अगले दिन चक्की घुमाने वाला मॉस के पहरे पर बैठा और उसे भूनना शुरू किया। काली मिर्च और भाले वाला बाड़ की पहरेदारी करने चले गये जो उन्होंने शहर के चारों तरफ बनायी थी।

पहले की तरह से खाने के समय के ठीक पहले वह तीन फीट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला जंगल में से निकल कर फिर वहॉ आया और सीधा बैल की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने लालचीपने से उसको लेने के लिये अपना हाथ बढ़ाया।

चक्की घुमाने वाला भी उसको इस तरह अचानक आया देख कर इतना डर गया कि वह भी वहॉ से भाग लिया और जा कर छिप गया।

काली मिर्च और भाले वाला जब अपना काम खत्म कर के खाना खाने के लिये लौटे तो देखा कि वहॉ तो कुछ भी नहीं था। सो उन्होंने चिल्ला कर पूछा "हमारा खाना कहॉ है?"

इस पर चक्की घुमाने वाले ने कहा — "यहॉ कोई मॉस नहीं है। वह तीन फुट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला यहॉ आया था वही सब खा गया। वह देखने में इतना भयानक लग रहा था कि मेरी तो उससे कुछ कहने की हिम्मत ही नहीं हुई।"

अब शिकायत करना तो बेकार था सो काली मिर्च बस यही बोला — "कल बैल की रखवाली मैं करूँगा और तुम दोनों बाड़ की रखवाली करना। मैं देखता हूँ कि हम तीसरे दिन बिना खाना खाये कैसे रहते हैं।"

सो अगले दिन भाले वाला और चक्की घुमाने वाला दोनों तो बाड़ पर पहरा देने चले गये और काली मिर्च खाना बनाने के लिये रह गया।

जैसे पहले दो दिन हुआ था उसी तरह से उस दिन भी खाना तैयार होने से थोड़ी देर पहले ही वह तीन फीट ऊँचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला वहॉ आया और मॉस लेने के लिये आगे बढ़ा।

मगर काली मिर्च ने उसको एक ज़ोर का धक्का दे दिया और बोला — "तुम्हारी वजह से मैंने दो दिन से कुछ नहीं खाया है पर जब तक मेरे कन्धों पर मेरा सिर रखा है यानी मैं ज़िन्दा हूँ तीसरे दिन मैं ऐसा नहीं होने दे सकता।"

वह आदमी उसकी बहादुरी देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह बोला — "ख्याल रखना कि तुम मुझसे झगड़ा नहीं करना। इस दुनियॉ में कोई भी ऐसा नहीं है जो मुझे जीत सके – सिवाय काली मिर्च के।"

अब काली मिर्च तो यह सुन कर बहुत खुश हो गया। वह तो बिना सोचे समझे बूझे उसके ऊपर कूद पड़ा और कुछ ही समय में

उसको जमीन पर पटक दिया और बॉध दिया। फिर उसने उसको एक ऊॅचे से पाइन के पेड़ के साथ बॉध दिया।

जब भाले वाला और चक्की घुमाने वाला लौट कर आये तो यह देख कर बहुत खुश हुए कि उनका खाना सुरक्षित था। वे खाना खा ही रहे थे कि वह तीन फीट ऊॅचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला एक झटके से उठा जिससे पाइन का वह पेड़ जड़ से उखड़ गया जिससे वह बॅधा हुआ था।

वह धरती पर निशान बनाते हुए वहॉ से भाग लिया ऐसा लग रहा था जैसे तीन हल निशान बनाते जा रहे हों।

उसको भागते देख कर भाले वाला और चक्की घुमाने वाला उसके पीछे भागे पर काली मिर्च ने उनको वापस बुलाते हुए कहा कि वे पहले अपना खाना खत्म कर लें उसको बाद में देखेंगे क्योंकि खाना खत्म करने के बाद भी उनके पास उसको पकड़ने का बहुत समय होगा।

सो तीनों फिर से खाना खाने बैठ गये। खाना खत्म करने के बाद वे उन लाइनों के सहारे सहारे उसका पीछा करने लगे जिनको तीन फीट ऊॅचे माथे वाले और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाले ने भागते समय बनायीं थीं।

कुछ दूर जाने के बाद वे जमीन में बने एक अॅधेरे गहरे गड्ढे के पास आ गये। जब उन्होंने उसको चारों तरफ से देखने की

कोशिश की तो अँधेरा और गहराई की वजह से कुछ नहीं देख पाये।

वे लोग वहॉ से वापस आये और राजा से एक हजार मील लम्बी और मजबूत रस्सी मॉगी ताकि वे उस कुँए में उतर कर देख सकें कि उसमें क्या है।

राजा ने तुरन्त ही अपने नौकरों को उन्हें वे सब चीज़ें देने के लिये कह दिया जो उनको चाहिये थीं। जब उनको लम्बी और मजबूत रस्सी मिल गयी तो वे उस गड्ढे में नीचे उतरने चले गये।

जब वे रास्ते में जा रहे थे तो वे आपस में बात करते जा रहे थे कि उन तीनों में से पहले नीचे कौन उतरेगा। तय हुआ कि सबसे पहले भाले वाला नीचे जायेगा। पर साथ में उसने उनसे वायदा करा लिया कि जैसे ही वह नीचे से रस्सी हिलायेगा तो वे उसको ऊपर खींच लेंगे।

उसको नीचे उतारा गया। वह नीचे थोड़ी ही दूर गया होगा कि उसने रस्सी खींच दी और जैसा कि उन्होंने उससे वायदा किया था उसके दोनों साथियों ने उसको ऊपर खींच लिया।

उसके बाद चक्की घुमाने वाला बोला "ठीक है अब मैं जाता हूँ।" सो दूसरे दोनों ने उसको नीचे उतारा। पर पल दो पल में ही उसने रस्सी इतने ज़ोर से हिलायी कि उनको उसे भी ऊपर खींच लेना पड़ा।

अब काली मिर्च बहुत गुस्सा हुआ और बोला — "मुझे नहीं मालूम था कि तुम लोग इतने कायर हो कि तुम एक अॅधेरे गड्ढे से डर रहे हो। चलो अब मुझे नीचे उतारो।"

सो उन्होंने उसको उस गड्ढे में नीचे उतार दिया। वे उसको तब तक नीचे उतारते गये जब तक उसके पैर नीचे ठोस जमीन नहीं छूने लगे। यह देख कर कि वह अब तली में पहुॅच गया है उसने अपने चारों तरफ देखना शुरू किया।

उसने देखा कि वह तो एक बहुत सुन्दर हरे भरे मैदान में खड़ा है। वह मैदान इतना सुन्दर था कि वह देखने में ही बहुत अच्छा लग रहा था। उस मैदान के एक तरफ बहुत ही शानदार महल खड़ा हुआ था।

काली मिर्च उस महल को ठीक से देखने के लिये उसके पास तक गया तो उस महल के बागीचे में घूमती उसको दो लड़कियॉ मिलीं। उसने उनसे पूछा कि क्या वे राजा की बेटियॉ हैं। उन्होंने जवाब दिया "हॉ हम राजा की बेटियॉ हैं।"

तो उसने पूछा "तुम्हारी तीसरी बहिन का क्या हुआ।"

उन्होंने कहा कि उनकी सबसे छोटी बहिन तीन फीट ऊॅचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाले की मरहम पट्टी कर रही है। ये घाव उसको किसी काली मिर्च नाम वाले आदमी ने दिये हैं।

तब काली मिर्च ने उनको बताया कि वह कौन है और यहॉ वह उन तीनों को आजाद करवा कर राजा के पास ले जाने की नीयत से आया है।

यह अच्छी खबर सुन कर दोनों राजकुमारियॉ बहुत खुश हुई। उन्होंने काली मिर्च को बताया कि वह तीन फीट ऊॅचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला और उनकी बहिन कहॉ मिलेंगे।

पर साथ में उन्होंने उसको यह चेतावनी भी दी कि वह उसके ऊपर दौड़ कर न जाये बल्कि उसके पास बहुत ही धीमे कदमों से जाये और पहले उसके पलंग के सिरहाने की तरफ की दीवार पर लटकी हुई तलवार लेने की कोशिश करे।

क्योंकि इस तलवार में किसी भी आदमी को मारने की एक ऐसी खास ताकत है जिससे वह उस आदमी को भी बिना निशाना चूके मार सकती है जो उसकी जगह से एक दिन की दूरी पर हो।

काली मिर्च ने राजकुमारियों की बात मानने का वायदा किया। वह तीन फीट ऊॅचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाले के सोने वाले कमरे में चुपचाप घुसा और जब वह उसके पलंग के पास पहुॅच गया तो अचानक से कूद कर दीवार से उसकी वह खास तलवार उतार ली।

जैसे ही घायल राक्षस ने अपनी तलवार काली मिर्च के हाथ में देखी तो वह तुरन्त ही वहॉ से उठ कर भाग लिया। काली मिर्च ने उसका पीछा किया पर फिर जल्दी ही उसे राजकुमारियों की कही हुई

बात याद आ गयी कि उसकी तलवार में तो कितनी आश्चर्यजनक ताकत थी।

कुछ देर बाद ही उसने अपनी तलवार गर्दन काटने के लिये हवा में चलायी उसी पल उसके दुश्मन की गर्दन कट कर नीचे गिर गयी।

काली मिर्च तीनों राजकुमारियों को ले कर ऊपर की दुनियॉ में जाने यानी कुँए से बाहर निकलने की तैयारी करने लगा।

जब वह उस जगह आया जहॉ वह रस्सी से नीचे उतरा था उसने एक सबसे बड़ी टोकरी ली और उसमें सबसे बड़ी राजकुमारी को बिठा कर ऊपर भेज दिया।

उसने उसके साथ एक परचा भी लिख कर रख दिया कि यह राजकुमारी भाले वाले आदमी के लिये है। फिर उसने ऊपर खड़े खींचने वाले को खींचने का इशारा किया और उसे ऊपर खींच लिया गया।

जब ऊपर से टोकरी खाली आयी तो उसने उसमें दूसरी राजकुमारी को बिठा दिया। उसने उसको भी एक परचा दे दिया कि यह राजकुमारी चक्की घुमाने वाले के लिये है।

जब तीसरी बार ऊपर से टोकरी खाली आयी तो उसने उसमें सबसे छोटी वाली राजकुमारी को बिठा दिया। यह राजकुमारी तीनों राजकुमारियों में सबसे सुन्दर राजकुमारी थी। उसने उसको भी एक परचा दिया जिसमें लिखा था "यह राजकुमारी मेरी है।"

जैसे ही भाले वाले और चक्की घुमाने वाले ने टोकरी ऊपर खींचनी शुरू की तो राजकुमारी ने काली मिर्च को एक छोटा सा डिब्बा दिया और कहा "जब तुम किसी परेशानी में पड़ जाओ तो इसे खोल लेना।"

जब भाले वाले और चक्की घुमाने वाले ने उसकी टोकरी खींच ली तो उन्होंने देखा कि यह राजकुमारी तो बहुत सुन्दर थी। सो उन्होंने काली मिर्च को नीचे ही छोड़ने का और उन दोनों राजकुमारियों के साथ अकेले ही राजा के महल जाने का इरादा कर लिया। अब वहॉ उनको देखना था कि सबसे छोटी राजकुमारी किसकी पत्नी बनती थी।

काली मिर्च काफी देर तक इन्तजार करता रहा कि रस्सी अब आती है अब आती है पर कोई रस्सी नीचे नहीं आयी।

आखिर उसने समझ लिया कि उसके दोनों साथियों ने उसको धोखा दे दिया है और वे उसको छोड़ कर चले गये हैं। उसने देखा कि अब तो वह काफी इन्तजार कर चुका अब और इन्तजार करना बेकार है तो वह वहॉ से चल दिया जहॉ भी सड़क उसको ले जाये।

काफी देर तक चलने के बाद वह एक बड़ी सी झील के पास आ पहुॅचा। वहॉ उसने चीखने चिल्लाने की आवाजें सुनी तो उसने इधर उधर देखना शुरू किया तो कुछ ही देर में उसको बहुत सारे सजे बजे लोग वहॉ आते दिखायी दिये। लग रहा था जैसे वहॉ किसी की शादी हो रही हो।

एक सजी धजी लड़की को उस झील के किनारे पर बिठा कर लोग वहॉ से चले गये। उसको लगा कि वह लड़की बहुत दुखी थी सो वह उसके पास गया और उससे पूछा कि उसके दोस्त लोग उसको वहॉ अकेला छोड़ कर क्यों चले गये और वह इतनी दुखी क्यों है।

लड़की बोली — "इस झील में एक ड्रैगन रहता है जो हर साल एक नौजवान लड़की को खाता है। आज मेरी बारी है। मेरे लोग मुझे ड्रैगन की पत्नी की तरह सजा कर यहॉ बिठा गये हैं ताकि वह आये और मुझे निगल जाये।"

यह सुन कर काली मिर्च बोला कि वह बहुत थका हुआ है सो उसके पास बैठ कर वह कुछ देर के लिये आराम करना चाहता है।

लड़की तुरन्त ही बोली — "नहीं नहीं। इससे तो अच्छा है कि तुम यहॉ से कहीं और चले जाओ ओ मेरे बहादुर। मुझे तो मरना ही है पर इसका यह मतलब तो नहीं है कि मेरे साथ साथ तुमको भी मरना पड़े।"

काली मिर्च बोला — "तुम मेरे बारे में सोच कर अपने आपको परेशान न करो। बस मुझे अपने पास बैठ कर आराम करने की इजाज़त दे दो। मैं वाकई में बहुत थका हुआ हूँ। जब ड्रैगन आ जायेगा तभी भी मेरे पास भागने के लिये काफी समय होगा।"

इतना कह कर वह लड़की के पास बैठ गया और कुछ पल में ही सो गया। वह बहुत देर तक नहीं सोया होगा कि झील के पानी

की सतह बड़े ज़ोर ज़ोर से हिलने लगी और पानी में ऊॅची ऊॅची लहरें उठने लगीं।

इससे काली मिर्च की ऑख खुल गयी तो उसने देखा कि ड्रैगन पानी में से अपना सिर बाहर निकाल रहा है। वह तुरन्त ही झील के किनारे की तरफ बढ़ा जहॉ लड़की बैठी हुई थी। साफ जाहिर था कि वह लड़की को तुरन्त ही निगल जाना चाहता था।

यह देख कर लड़की बहुत ज़ोर से चिल्लायी और उसका एक ऑसू काली मिर्च के गाल पर जा पड़ा। काली मिर्च तुरन्त ही उठ गया। उसने कूद कर अपनी तलवार निकाली और हवा में घुमा दी और वह ड्रैगन वहीं का वहीं मर गया।

उसने लड़की का हाथ पकड़ कर उठाया और उसको शहर वापस ले गया। वहॉ पहुॅच कर उसे पता चला कि वह लड़की तो उस देश के राजा की अकेली बेटी थी।

राजा को यह सुन कर बहुत खुशी हुई कि ड्रैगन मारा गया और उसकी बेटी सुरक्षित घर वापस आ गयी। सो उसने काली मिर्च से जिद की कि वह उसकी बेटी से शादी कर ले। उसने राजकुमारी से शादी कर ली और फिर वे सब बहुत दिनों तक हॅसी खुशी रहे।

कुछ समय बाद काली मिर्च को फिर से दूसरी दुनियॉ[46] देखने की इच्छा हुई और वह दिन पर दिन उदास होता गया। जब उसकी

[46] You remember he was still in the pit and was wandering here and there. Now he wanted to come out of the pit to the world on Earth.

पत्नी ने उसमें वह बदल देखी तो वह अक्सर उससे पूछती कि उसको किस बात का दुख है तो बहुत समय तक तो उसने उसको कुछ नहीं बताया क्योंकि वह उसको तंग करना नहीं चाहता था पर फिर आखिर वह इस भेद को भेद नहीं रख सका।

उसने उसको बताया कि अब उसकी बहुत इच्छा थी कि वह अब ऊपर की दुनियॉ में जाये। यह सुन कर उसकी पत्नी बहुत दुखी हुई फिर भी उसने उससे कहा कि वह खुद राजा से उसके वहॉ से जाने की इजाज़त लेगी क्योंकि काली मिर्च की अपनी बहुत इच्छा थी वहॉ जाने की। और ऐसा उसने किया भी।

राजा ने जब यह सुना तो वह पहले तो राजी ही नहीं हुआ क्योंकि वह अपना इतना अच्छा दामाद खोना नहीं चाहता था। पर राजकुमारी ने कहा — "पिता जी उनको जाने दीजिये। उन्होंने मेरी जान बचायी है पर हम उनको उनकी इच्छा के खिलाफ क्यों रखें। मेरे तीन बेटे हम लोगों को तसल्ली देने के लिये काफी हैं।"

यह सुन कर राजा राजी हो गया और बोला — "ठीक है। फिर वैसा ही होने दो जैसा वह चाहता है। क्योंकि तुम भी कुछ नहीं बोल रहीं और उसी का पक्ष ले रही हो।

तुम अपने उस भला चाहने वाले से कह दो कि वह झील के किनारे चला जाये जहॉ उसको एक बहुत बड़ी चिड़िया मिलेगी। वह जा कर उसे मेरा नमस्कार कहे और कहे कि राजा ने उससे कहा है कि वह इस आदमी को ऊपर की दुनियॉ में छोड़ आये।"

राजकुमारी अपने पति के पास गयी और उसे जा कर वह बताया जो उसके पिता ने उससे कहने के लिये कहा था। फिर उसने उसकी यात्रा के लिये सामान तैयार किया। जब यह सब तैयार हो गया तो राजा ने चिड़िया को देने के लिये अपनी चिट्ठी तैयार की।

काली मिर्च ने अपनी पत्नी से विदा ली और झील के किनारे चल दिया। वहॉ उसको जल्दी ही बड़ी चिड़िया का घोंसला मिल गया। उसमें उसके छोटे बच्चे भी थे हालॉकि वह खुद वहॉ नहीं थी। सो वह उसी पेड़ के नीचे उसके आने के इन्तजार में बैठ गया।

जब वह वहॉ बैठा हुआ था तो उसने चिड़ियों के चींचीं करने की आवाज सुनी। वे बहुत बेचैनी से चीं चीं किये जा रही थीं।

इतने में उसने देखा कि झील के पानी में बड़ी बड़ी लहरें उठ रही हैं। वह सोचने लगा कि अब यहॉ कौन आ गया। कि इतने में ही वहॉ से एक राक्षस निकला और चिड़िया के बच्चों को खाने लिये उधर की तरफ बढ़ा।

काली मिर्च को सोचने में बहुत देर नहीं लगी। उसने तुरन्त ही अपनी आश्चर्यजनक तलवार निकाली और उस राक्षस को मार दिया।

अब ऐसा हुआ कि इसी समय बड़ी चिड़िया घर वापस आ रही थी। उसने काली मिर्च को अपने घोंसले वाले पेड़ के नीचे देखा तो डर के मारे कॉप गयी और चीख कर उसे मारने के लिये दौड़ी।

वह बोली — "आज मैंने तुम्हें पकड़ लिया। तुम ही तो वह हो न जो हर साल मेरे बच्चे खा जाते हो। आज तुम्हें इसका हरजाना देना ही पड़ेगा क्योंकि मैं अब तुम्हें मारने वाली हूँ।"

यह सुन कर उसके छोटे छोटे बच्चे अपने घोंसले में से ही चिल्लाये — "मॉ इसको कोई नुकसान नहीं पहुँचाना। इसने तो हमारी एक राक्षस से जान बचायी है जो इस झील में से हमें खाने के लिये आ रहा था।"

इस बीच काली मिर्च ने उसे राजा की चिट्ठी दी।

बड़ी चिड़िया ने उसे सावधानी से पढ़ा अैर फिर बोली — "तुम घर जाओ और बारह भेड़ मारो। उनकी खालों में पानी भरो और उनको उनके मॉस के साथ यहॉ ले कर आओ।"

काली मिर्च राजा के पास वापस गया और उससे कहा कि वह उसे बारह भेड़ का मॉस और बारह भेड़ों की पानी से भरी हुई खाल दे दे। राजा ने उसको यह सब दे दिया तो वह उनको ले कर फिर से झील के किनारे आया।

बड़ी चिड़िया ने पानी से भरी हुई भेड़ों की बारह खाल अपने बॉये पंख के नीचे रखीं और बारह भेड़ों का मॉस अपने दॉये पंख के नीचे रखा और काली मिर्च को अपने पीठ पर बिठाया।

यह कर के उसने काली मिर्च से कहा कि वह उसको ध्यान से देखता रहे कि वह क्या कर रही है। जब वह अपनी चोंच बॉयी

तरफ को घुमाये तो वह उसको पानी पिला दे और जब वह अपनी चोंच दॉयी तरफ को घुमाये तो वह उसे मॉस खिला दे।

काली मिर्च से यह कह कर वह बड़ी चिड़िया तीन तरह का बोझा ले कर सीधी ऊपर की तरफ उड़ चली। उड़ते समय वह अपनी चोंच कभी बॉयी तरफ मोड़ लेती थी तो कभी दॉयी तरफ। उस समय काली मिर्च उसको कभी मॉस खिला देता तो कभी पानी पिला देता।

आखिर सारा मॉस खत्म हो गया सो बड़ी चिड़िया ने जब अपनी चोंच दॉयी तरफ घुमायी तो काली मिर्च के पास तो अब सारा मॉस खत्म हो चुका था तो उसको लगा कि अगर उसने उसको मॉस खाने के लिये नहीं दिया तो कहीं उसके साथ कुछ बुरा न हो जाये उसने चाकू निकाला और अपने दॉये तलवे से थोड़ा सा मॉस काटा और उसको खाने को दे दिया।

चिड़िया को उस मॉस के स्वाद से ही पता चल गया कि वह भेड़ का मॉस नहीं था बल्कि काली मिर्च के अपने पैर से काटे गये मॉस का टुकड़ा था इसलिये उसने उसको निगला नहीं बल्कि अपनी जीभ के नीचे रख लिया और उसको वहीं दबाये रखा जब तक कि वह दूसरी दुनियॉ में नहीं पहुॅच गयी।

ऊपर पहुॅच कर उसने काली मिर्च को अपने ऊपर से नीचे उतारा और चलने के लिये कहा। पर नीचे उतर कर उसने चलना

चाहा तो वह तो ठीक से चल नहीं सका। वह लॅगड़ा कर चल रहा था क्योंकि उसके एक पैर में घाव हो रहा था।

बड़ी चिड़िया ने पूछा — "यह तुम लॅगड़ा कर क्यों चल रहे हो?"

इस पर काली मिर्च बोला — "कुछ नहीं। तुम इसकी चिन्ता न करो।"

पर चिड़िया ने उससे उसका दॉया पैर ऊपर उठाने के लिये कहा। और जब उसने वैसा किया तो उसने अपनी जीभ के नीचे रखा उसके पैर के मॉस का टुकड़ा उसके पैर में वहीं लगा दिया जहॉ से उसे काट कर उसने बड़ी चिड़िया को खिलाया था।

फिर उसने उस जगह को अपनी चोंच से दो तीन बार थपथपाया ताकि वह जगह उसके पैर के तलवे के दूसरी जगहों जैसी एकसार हो जाये।

अब काली मिर्च वहॉ से चल दिया। कुछ दूर चलने पर उसको राजा की सबसे छोटी राजकुमारी के दिये हुए डिब्बे की याद आयी तो उसने उसको खोला तो उसमें से एक मक्खी और एक शहद की मक्खी निकल पड़ीं।

उन्होंने उससे पूछा कि उसको क्या चाहिये। काली मिर्च ने जवाब दिया कि उसको एक अच्छा सा घोड़ा चाहिये जो उसे जल्दी जल्दी राजा के महल पहुॅचा सके। और उसको राजा से मिलने के लायक पहनने के लिये एक बहुत अच्छा जोड़ा चाहिये।

अगले ही पल एक बहुत सुन्दर शानदार साज सजा घोड़ा वहॉ तैयार खड़ा था और साथ में पहनने के लिये एक बढ़िया कीमती जोड़ा भी।

उसने कपड़े उठाये अपने घोड़े पर चढ़ा और राजा के शहर चल दिया। राजा के शहर में घुसने से पहले उसने वह बक्सा एक बार फिर खोला और मक्खी और शहद की मक्खी से कहा — "अब इस समय तो मुझे यह घोड़ा नहीं चाहिये।"

सो वे मक्खियॉ उसको ले कर अपने डिब्बे में चली गयीं। उधर काली मिर्च शहर में एक बुढ़िया के घर में रहने के लिये चला गया।

अगली सुबह मुनादी पीटने वाला कह रहा था — "क्या कोई इतना ताकतवर है जो राजा के दामाद यानी भाले वाले आदमी से लड़ सके।"

काली मर्च यह मुनादी सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने फिर से अपना बक्सा खोला और मक्खियों से कहा कि उसको लड़ने के लिये एक सूट चाहिये और एक मजबूत डंडा चाहिये ताकि वह भाले वाले से जा कर लड़ सके।

दोनों मक्खियों ने उसको वह सब दे दिया जो उसको चाहिये था और वह तैयार हो कर उस मैदान में चल पड़ा जहॉ उसको भाले वाले से लड़ाई लड़नी थी।

वहॉ जा कर उसने देखा कि भाले वाला बेचैनी उस किसी का इन्तजार कर रहा था जिससे उसको लड़ना था। सो काली मिर्च और

भाले वाला आपस में लड़े और कुछ ही देर में राजा का पहला दामाद मारा गया।

काली मिर्च यह लड़ाई लड़ कर जल्दी से घर वापस लौट गया और अपना डिब्बा खोल कर मक्खी और शहद की मक्खी से कहा कि वे अपने कपड़े और घोड़ा वापस ले जायें।

राजा उस अजनबी को तलाश करता रहा जिसने उसके पहले दामाद को मारा था पर वह उसे कहीं नहीं मिला। किसी और को भी उसके बारे में कुछ पता नहीं था।

सो कुछ दिन बाद मुनादी पीटने वाला फिर से शहर में मुनादी पीटता हुआ सुना गया। अगर किसी की हिम्मत हो तो राजा का दूसरा दामाद चक्की घुमाने वाला लड़ने के लिये तैयार है

काली मिर्च ने एक बार फिर से अपना डिब्बा खोला और मक्खी और शहद की मक्खी पिछले वाले से बढ़िया घोड़ा और लड़ाई के कपड़े मॉगे। इस बार उन्होंने उसको बहुत ही शानदार सूट और सबसे सुन्दर काला घोड़ा दिया।

वह भी सूट पहन कर घोड़े पर चढ़ कर उसी लड़ाई के मैदान में चल दिया। उसने चक्की घुमाने वाले को भी मार दिया और तुरन्त ही वहॉ से घर चला गया। तुरन्त ही उसने अपना डिब्बा खोला और मक्खियों को कपड़े और घोड़ा ले जाने के लिये कहा।

अब तो न केवल राजा ही बल्कि राज्य के सारे लोग पशोपेश में पड़ गये कि यह कौन है जो इस तरह से राजा के दामाद को मार कर तुरन्त ही गायब हो जाता है।

सो इस आदमी की कड़ी खोज शुरू हुई। उसे सारे लोग सब जगह ढूँढने लगे। पर किसी को कुछ पता नहीं चला। क्योंकि जैसे घोड़े पर सवार हो कर और जैसे कपड़े पहन कर वह लड़ने के लिये आया था वैसे घोड़े और कपड़े तो राज्य भर में कहीं नहीं थे।

राजा के दोनों दामादों के मरने के बाद फिर कुछ दिन बीत गये। लोग शान्त पड़ गये थे। उन्होंने उसको ढूँढ निकालने की सारी आशाऐं छोड़ दी थीं।

तब काली मिर्च ने राजा की सबसे छोटी बेटी को एक चिट्ठी लिखी और जिस बुढ़िया के घर में वह रहता था उसके हाथों उसे राजकुमारी को भिजवा दिया।

उस चिट्ठी में उसने राजकुमारी को वह सब लिख दिया जो उसके साथ तबसे अब तक हुआ था जबसे उसने राजकुमारी को टोकरी में बिठाया था। साथ में उसने यह भी लिखा कि वे दोनों गद्दार न्यायपूर्ण लड़ाई में उसी ने मारे थे।

छोटी राजकुमारी न जैसे ही यह चिट्ठी पढ़ी तो वह अपने पिता के पास दौड़ी गयी और उससे विनती की कि वह काली मिर्च को माफ कर दें।

राजा ने भी देखा कि वह भी अपनी बेटी की इस विनती को मना नहीं कर सकता था क्योंकि उन्होंने अपने उस दोस्त को धोखा दिया था उसे छोड़ दिया था वे गद्दार थे जिसकी हिम्मत के बिना वे राजा के दामाद कभी नहीं बन सकते थे।

यह सोचते हुए कि काली मिर्च अगर उसकी तीनों बेटियों को नहीं निकाल कर लाता तो वे तो वहीं उसी राज्य में घुट घुट कर मर जातीं जहॉ वह तीन फीट ऊॅचे माथे वाला और नौ इंच लम्बी दाढ़ी वाला उनको ले गया था।

यह सब सोचने के बाद कि उसने बेटी से कहा कि उसने अपनी मर्जी से ही काली मिर्च को माफ कर दिया और वह उसको अब महल में बुला सकती है।

काली मिर्च ने राजा के सामने जाने लायक बढ़िया कपड़े पहने और महल पहुॅचा जहॉ उसका बड़े प्रेम से स्वागत हुआ।

कुछ ही दिन बाद काली मिर्च की शादी छोटी राजकुमारी से कर दी गयी। राजा ने उन दोनों के रहने के लिये अपने महल के पास ही एक और महल बनवा दिया जिसमें वे बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

उसके बाद काली मिर्च की कहीं बाहर घूमने की कोई इच्छा नहीं हुई।

11 एक लड़का जिसने सूरज के लिये जाल बिछाया[47]

टौम थम्ब जैसे बच्चे की एक और लोक कथा। यह कथा उत्तरी अमेरिका के आदिवासियों में कही सुनी जाती है। इस कथा में यह छोटा बच्चा सूरज को पकड़ने की कोशिश करता है। आओ देखते कि वह अपने इरादों में कामयाब हो पाता है या नहीं।

यह उस समय की बात है जब इस धरती पर जानवरों का राज था। उन्होंने सारे आदमियों को मार डाला था पर एक लड़की और उसका एक बहुत छोटा सा भाई बच गये थे। इसी लिये वे दोनों वहॉ से कुछ दूर जानवरों से बहुत डर कर रहते थे।

यह लड़का एक पक्का पिग्मी[48] था और एक बहुत छोटे बच्चे[49] के साइज़ से कभी ज़्यादा बड़ा नहीं हुआ पर वह लड़की अपनी उम्र के साथ साथ बड़ी होती गयी इसलिये खाना और रहने की जगह का इन्तज़ाम करने की ज़िम्मेदारी पूरी तरीके से उस लड़की पर ही थी।

वह लड़की रोज सुबह सुबह लकड़ियॉ लेने के लिये जंगल जाती। साथ में वह अपने छोटे भाई को भी ले जाती ताकि उसके

[47] The Boy Who Set a Snare for the Sun – a folktale from Native Americans, North America. Adapted rom the Book : "The Indian Fairy Book". by Cornelius Mathews. NY, Allen Brothers. 1869. 26 stories. Available at : http://www.worldoftales.com/Indian_fairy_book.html

[48] Pigmy – a very small size man

[49] Translated for the word "Infant"

पीछे उसके भाई के साथ कोई बुरी घटना न हो जाये। क्योंकि वह पीछे घर में अकेले छोड़ जाने के लिये बहुत छोटा था।

वह इतना छोटा था कि एक बड़ी सी चिड़िया भी उसको उड़ा कर ले जा सकती थी।

एक दिन बहिन ने अपने भाई के लिये एक कमान और कुछ तीर बनाये और उससे कहा — "मेरे छोटे भाई, जहॉ मैं लकड़ियॉ इकट्ठी करती हूॅ वहॉ मैं तुमको आज अकेले छोड़ जाऊॅगी। वहॉ तुम छिप कर बैठ जाना।

जल्दी ही तुमको वहॉ ठंडे देशों वाली चिड़ियें दिखायी देंगी। वहॉ आ कर वे उन लकड़ी के लट्ठों से कीड़े खायेंगी जो मैंने इकट्ठे कर के रखे हैं। उनमें से एक चिड़िया को तुम मार लेना और घर ले आना।"

भाई ने बहिन की बात मानी और एक चिड़िया को मारने की बहुत कोशिश की पर वह उसको मार नहीं सका और घर खाली हाथ ही आ गया। उसकी बहिन ने उसको समझाया कि उसको निराश नहीं होना चाहिये और उसको अगले दिन फिर से कोशिश करनी चाहिये।

सो अगले दिन उसने फिर से अपने भाई को अपनी लकड़ियॉ इकट्ठी करने की जगह छोड़ा और घर वापस आ गयी। शाम को जब रात होने लगी तब उसने बरफ तोड़ती हुई छोटे छोटे पैरों की आवाज़ की सुनी।

उसका भाई घर आ रहा था। वह जल्दी जल्दी घर में आया और अपनी बहिन को एक चिड़िया दिखायी जो उसने मारी थी। उसके चेहरे पर इतनी खुशी थी कि ऐसा लग रहा था जैसे वह कुछ जीत कर लाया हो।

वह आ कर बोला — "बहिन, अब तुम इसको साफ कर दो और इसकी खाल निकाल लो। जब मैं ऐसी ही कुछ और चिड़ियें मार लूँगा तो फिर में उन खालों का एक कोट बनवाऊँगा।"

बहिन बोली — "पर हम इसके शरीर का क्या करेंगे?"

क्योंकि तब तक वे लोग फल और पत्ते खा कर ही रह रहे थे इसलिये वे नहीं जानते थे कि वे उसका मॉस पका भी सकते थे और खा भी सकते थे।

भाई बोला — "उसके शरीर के दो हिस्से कर लेना और उनको एक एक कर के मसाले लगा कर पका लेना।"

इस तरह वह उनके शिकार का पहला खाना था जो उन्होंने खाया और उनको बहुत स्वादिष्ट लगा।

लड़का अपनी कोशिश करता रहा और इस बीच उसने दस चिड़ियें मार लीं। उसकी बहिन ने उन सबकी खाल निकाल ली और उसके लिये एक छोटा सा कोट बना दिया।

क्योंकि वह लड़का बहुत छोटा था सो एक उसका सुन्दर सा छोटा सा कोट बन गया और उन दस चिड़ियों में से एक चिड़िया की खाल बच भी गयी।

एक दिन वह अपना नया कोट पहिने अपने घर के सामने इधर से उधर घूम रहा था और सोच रहा था कि वह दुनियॉ का सबसे सुन्दर आदमी है क्योंकि उसके पास और कोई दूसरा आदमी तो था ही नहीं। वह वहॉ अकेला ही था।

कि उसने अपनी बहिन से कहा — "बहिन, क्या हम लोग दुनियॉ में अकेले ही हैं या फिर यहॉ कोई और भी रहता है? क्या हमारे अलावा यहॉ और कोई नहीं है? मुझे तो यहॉ हम दोनों के अलावा और कोई दिखायी ही नहीं देता।

मुझे यह तो बताओ कि क्या यह इतनी बड़ी धरती और इतना बड़ा आसमान केवल हम दो छोटे छोटे लोगों के लिये ही बनाया गया है?"

लड़की बोली — "नहीं भाई ऐसा नहीं है। यहॉ पहले बहुत सारे लोग रहते थे जो हम जैसे लड़के और लड़की की तरह से सीधे सादे नहीं थे। वे दूसरी जगहों पर रहते थे। उन्होंने अपने ही लोगों को मार डाला।

और अगर वह खुद भी किसी सीधे सादे आदमी की तरह अपनी ज़िन्दगी बिताना चाहता है और अपनी ज़िन्दगी को खतरे में नहीं डालना चाहता है तो उसको उन लोगों के रहने की जगह की तरफ कभी नहीं जाना चाहिये।"

पर बहिन की इस बात ने तो भाई की उत्सुकता और बढ़ा दी। बस उसने अपना तीर कमान उठाया ओर उसी दिशा में चल दिया जिधर वे लोग रहते थे।

वह बहुत देर तक चलता रहा। रास्ते में भी उसको कोई दिखायी नहीं दिया तो वह थक गया। तभी उसको एक जगह ऐसी दिखायी दे गयी जहॉ गरमी की वजह से बरफ पिघल गयी थी और घास दिखायी देखने लगी थी। वह वहॉ जा कर लेट गया।

लेटने के लिये वह एक बहुत सुन्दर जगह थी। वह थका तो था ही लेटते ही सो गया। सूरज बहुत ज़ोर से चमक रहा था। उसकी गरमी ने उसका कोट न केवल बहुत गरम कर दिया बल्कि उसको सिकोड़ कर छोटा भी कर दिया।

अब वह उसके शरीर पर इतना कस गया कि उसकी ऑख खुल गयी। जब उसको यह लगा कि सूरज ने किस तरह से अपनी किरणों की सहायता से उसके कोट के साथ यह बदमाशी खेली है जो उसे इतना अच्छा लगता था तो उसे बहुत गुस्सा आया।

अब यह गुस्सा तो उस बच्चे के लिये बहुत ज़्यादा था जो एक आदमी के घुटने के बराबर भी बड़ा नहीं था। गुस्से में आ कर उसने सूरज को बहुत डॉटा उसने सूरज के लिये कुछ डरावनी बातें भी कहीं।

वह बोला — "तुम यह मत समझना कि तुम बहुत ऊॅचे हो इसलिये कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। मैं अपना बदला

तुमसे ज़रूर ले कर रहूँगा। तुम देखना मैं तुमको अपने खेलने की चीज़ बना लूँगा।"

जब वह घर वापस लौटा तो उसने अपनी बहिन को सब बताया कि सूरज ने उसके साथ क्या किया था और अपने सुन्दर कोट के बिगड़ जाने पर बहुत ज़ोर ज़ोर से रोया।

उस दिन उसने कुछ नहीं खाया – एक बैरी भी नहीं। वह जा कर ऐसे लेट गया जैसे उपवास कर रहा हो। लेटने के बाद भी वह वहॉ से न तो हिला और न ही अपना लेटने का ढंग बदला।

जैसे वह पहली बार लेटा था वैसे ही वह वहॉ दस दिन तक लेटा रहा। दस दिन के बाद उसने पहली बार करवट बदली और फिर वैसे ही वह दस दिन तक वहॉ और लेटा रहा।

इस तरह बीस दिन लेटने के बाद जब वह उठा तो वह पीला पड़ गया था। पर उसके चेहरे से ऐसा लगता था जैसे उसने कुछ पक्का इरादा कर रखा हो।

उसने अपनी बहिन से कहा कि वह उसके लिये एक जाल बनाये। उसने उससे यह भी कहा कि वह उस जाल से सूरज को पकड़ना चाहता था।

बहिन बोली कि उसके पास जाल बनाने के लिये कुछ भी नहीं था पर फिर बाद में वह एक हिरन की ऑतें ले आयी जो उनका पिता छोड़ गया था। जल्दी ही उसने उसका एक फन्दा सा बना लिया।

जैसे ही उसने उस फन्दे को अपने भाई को दिखाया तो वह बहुत गुस्से से बोला कि उस फन्दे से काम नहीं चलेगा और जाल बनाने के लिये उसको कोई और चीज़ ढूँढनी चाहिये।

बहिन ने उससे फिर कहा कि उसके पास जाल बनाने के ल्यि और कुछ भी नहीं था, बिल्कुल कुछ भी नहीं।

आखीर में उसको उस दसवीं चिड़िया की खाल का ध्यान आया जो उसके भाई का कोट बनाने के बाद बच गयी थी। उसने उसकी एक रस्सी बना ली और अपने भाई को दिखायी। उस रस्सी को देख कर तो वह और भी ज़्यादा गुस्सा हो गया।

वह गुस्से में आ कर बोला — "सूरज ने तो पहले से ही मेरी चिड़ियों की बहुत सारी खालें ले ली हैं। अब मैं उसको और खाल नहीं देना चाहता। तुम कुछ और ढूँढो।"

वह गुस्से में यह बुड़बुड़ाती हुई घर से बाहर निकल गयी — "उॅह, क्या कभी किसी ने इतना जिद्दी लड़का भी देखा है?"

इस बार उसने अपने भाई को यह जवाब देना भी ठीक नहीं समझा कि उसके पास जाल बनाने के लिये कुछ भी नहीं था।

तभी उसके दिमाग में अपने सुन्दर काले बाल आये। उसने उनमें से कुछ बाल तोड़ कर जल्दी से उनकी रस्सी बट ली और घर वापस आ कर उसे अपने भाई को दे दी।

जैसे ही भाई की नजर उस काले बालों की रस्सी पर पड़ी तो वह खुश हो गया और बोला — "हॉ यह काम करेगा।" कह कर

उसने उस रस्सी को अपने हाथों में तेज़ी से इधर उधर घुमाना शुरू कर दिया।

उसने एक बार फिर कहा — "हॉ यह काम करेगा।" और यह कह कर उसने उसको अपने कन्धों के चारों तरफ लपेट लिया। फिर वह आधी रात के बाद घर से चल पड़ा। उसका उद्देश्य था सूरज को उसके निकलने से पहले ही पकड़ लेना।

उसने उस जाल को ले जा कर एक ऐसी जगह लगा दिया जहॉ सूरज जैसे ही धरती पर निकलता वह वहॉ उस जगह को छूता। इस तरह से उसने सूरज को पकड़ लिया। सूरज उसकी बहिन के बालों की बनी रस्सी के जाल में जो एक बार फॅसा तो निकल नहीं सका।

जो जानवर उस समय धरती पर राज कर रहे थे उनमें सबमें हलचल मच गयी कि आज सूरज क्यों नहीं निकला। धरती पर ऑधेरा ही ऑधेरा था रोशनी बिल्कुल भी नहीं थी।

वे यह जानने के लिये कि सूरज को क्या हुआ एक दूसरे को पुकारते हुए इधर उधर भागने लगे। इस बारे में बात करने के लिये फिर उन्होंने एक मीटिंग बुलायी।

उस मीटिंग में एक चुहिया को शक हुआ कि यह समस्या कहॉ से शुरू हुई होगी सो उसने सलाह दी कि किसी को वहॉ उस रस्सी को काटने के लिये भेजा जाये जिसमें सूरज फॅसा पड़ा था।

अब यह तो बड़ी हिम्मत का काम था क्योंकि जो भी सूरज के उतने पास तक जाता सूरज की किरनें उसको जरूर ही जला देतीं।

जब और कोई दूसरा वहॉ जाने के लिये तैयार नहीं हुआ तो आखिर उस चुहिया ने खुद ही यह काम करने का फैसला किया।

उस समय में वहॉ चूहा ही सबसे बड़ा जानवर हुआ करता था। सो जब वह चुहिया जाने के लिये खड़ी हुई तो वह एक पहाड़ की तरह लग रही थी। वह जल्दी जल्दी उधर की तरफ भागी जहॉ सूरज जाल में फॅसा पड़ा था।

जैसे जैसे वह सूरज के पास आती गयी उसकी पीठ में से धुॅआ निकलने लगा और वह उसकी गरमी से जलने लगी। और कुछ देर बाद तो उसके शरीर का बहुत बड़ा हिस्सा तो जल कर राख ही हो गया।

किसी तरह से वह अपने तेज़ दॉतों से सूरज के जाल की रस्सी काटने और उसको जाल से आज़ाद करने में कामयाब हो गयी। आज़ाद होने बाद सूरज भी फिर से उसी तरह से गोल और सुन्दर हो गया जैसा वह पहले था और चौड़े नीले आसमान में चला गया।

पर वह चुहिया, या अन्धी स्त्री जैसा कि लोग उसको कहते थे, सिकुड़ कर बहुत ही छोटे साइज़ में रह गयी। और यही वजह है कि कि आज हम उसको दुनियॉ के सबसे छोटे प्राणी के रूप में देखते हैं।

वह छोटा लड़का जब घर लौटा तो उसको पता चला कि सूरज तो उसके जाल में से निकल भागा है तो वह केवल शिकार करने में ही लग गया।

उसने कहा — "अगर मेरी बहिन के सुन्दर बाल उसको पकड़ कर नहीं रख सके तो दुनियॉ की कोई चीज़ उसको पकड़ कर नहीं रख सकती।"

वह किसी छोटे से लड़के के रूप में, जैसा कि वह खुद था, सूरज की देखभाल करने के लिये नहीं जन्मा था। उसको काबू में करने के लिये तो किसी बड़े और ज़्यादा अक्लमन्द आदमी की ज़रूरत थी।

यह सोचते हुए वह अपना तीर कमान ले कर बाहर चला गया और दस और ठंड वाली चिड़ियें मार लाया क्योंकि इस काम में तो अब वह बहुत होशियार हो गया था। उन चिड़ियों की खालों से उसने अब अपने लिये एक नया कोट बनवा लिया था जो उसके पुराने कोट से भी ज़्यादा सुन्दर था।

12 मूज़ीशैक – सात वर्स्ट लम्बी मूँछें पर तुम्हारे अँगूठे जितना बड़ा[50]

एक बार किसी विशेष राज्य में विशेष साम्राज्य में एक ज़ार रहता था। एक बार ऐसा हुआ कि इस ज़ार ने अपने सपने में देखा कि वहॉ एक अजीब सा घोड़ा बँधा हुआ था जो सामान्य सफेद नहीं था बल्कि चॉदी जैसा सफेद था जिसकी भौंह पर एक चमकीला चॉद लगा हुआ था।

ज़ार जब सुबह जागा तो उसने अपने सारे राज्य में यह मुनादी पिटवा दी कि जो कोई उसके इस सपने का मतलब बतायेगा और उस घोड़े को ढूँढ कर लायेगा उसके साथ वह अपनी बेटी की शादी कर देगा और उसे अपना आधा राज्य दे देगा।

ज़ार की इस मुनादी को सुन कर बहुत सारे राजकुमार और लौर्ड आदि ने इसके ऊपर एक साथ विचार किया पर कोई भी किसी परिणाम पर नहीं पहुँच सका। न तो कोई उसके सपने का मतलब ही बता सका और न ही कोई उसके घोड़े को ढूँढ सका।

आखिरकार उन्होंने बूढ़े सफेद दाढ़ी वाले मूज़ीशैक को ढूँढा जिसने ज़ार से कहा — "आपका सपना सपना नहीं था बल्कि यह

[50] The Muzhichek-As Big As Your Thumb with Moustaches Seven Versts Long. A Russian folktale translated by Robert Nisbet Bain.
A verst equals approximately 3,500 feet, and a Muzhichek is a gnome or goblin.

सच था। क्योंकि जैसा घोड़ा आपने अपने सपने में देखा था मूज़ीशैक सात वर्स्ट ल्म्बी मूँछ वाला पर आपके अँगूठे के बराबर बड़ा उस घोड़े पर सवार हो कर आपकी बेटी को इस मजबूत किले से चुराने आया था।"

ज़ार बोला — "ओ भले आदमी इस सपने का मतलब समझाने के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद। पर क्या अब तुम मुझे यह बता सकते हो कि मेरे लिये यह घोड़ा कौन ला सकता है।"

बूढ़ा मूज़ीशैक बोला — "मेरे लौर्ड ज़ार। मैं आपको जरूर बताऊँगा। मेरे तीन बेटे हैं जो बहुत ताकतवर हैं और शान वाले हैं। मेरी पत्नी ने उन सबको एक ही रात में जन्म दिया था।

सबसे बड़े को शाम में दूसरे को आधी रात को और तीसरे को सुबह। इसलिये हमने उनका नाम रखा ज़ोरका वशोरका और पोलुनुष्का।[51] कम से कम इस राज्य में तो उनके मुकाबले का कोई भी ताकतवर और शान वाला नहीं है। अब देखिये मेरे ओ छोटे पिता और इस राज्य के स्वामी। आप उन तीनों को इस अजीब घोड़े की खोज में भेज सकते हैं।"

ज़ार बोला — "मेरे प्रिय दोस्त। तुम उन्हें घोड़े की खोज में भेज सकते हो। वे मेरे खजाने से जितना धन ले जाना चाहें ले जा सकते हैं। मैं अपने शाही वायदे से फिरूँगा नहीं। उनमें से जो कोई

[51] Zor'ka, Vechorka, and Polunochka

भी मुझे उस घोड़े को ला कर मुझे देगा मैं उसे अपनी ज़ारेवना[52] और अपना आधा राज्य दे दूँगा।

अगले दिन सुबह सवेरे ही तीन हीरो भाई ज़ोरका वशोरका और पोलुनुष्का ज़ार के दरबार में आ पहुँचे। पहले भाई का चेहरा बहुत सुन्दर था। दूसरे भाई के कन्धे बहुत चौड़े थे। तीसरे की शक्ल तो ही बहुत शाही थी।

वे ज़ार के पास अन्दर आये। पवित्र तस्वीरों को सिर झुकाया और उनकी प्रार्थना की फिर चारों ओर देख कर अपने सिर झुकाये उसके बाद उन्होंने ज़ार को बहुत अधिक नीचे तक झुक कर सिर झुकाया और कहा —

"हमारे स्वामी और ज़ार बहुत दिनों तक ज़िन्दा रहें। हम आपको पास कोई आनन्द मनाने या दावत खाने नहीं आये हैं बल्कि एक मुश्किल काम करने आये हैं। हम आपके लिये बहुत दूर से घोड़ा लाने के लिये आये हैं। वही घोड़ा जो आपको आपके सपने में दिखायी दिया है।"

ज़ार बोला — "ओ नौजवानों तुम लोगों को सफलता मिले। तुमको अपनी यात्रा के लिये क्या चाहिये।"

तीनों लड़के बोले — ओ गोसुन्दर। हमें कुछ नहीं चाहिये। बस हमारे बूढ़े माता पिता की देखभाल रखियेगा। उनकी इस उम्र में उनको वह सब कुछ दीजियेगा जो उनको जरूरत हो।"

[52] Tzarevna – daughter of the Tzar. Tzar (or Tsar) was the title of the king in Russia till 1917.

ज़ार बोला — "अगर तुम्हें बस यही चाहिये तो तुम लोग भगवान का नाम ले कर अपनी यात्रा पर निकलो। मैं तुम्हारे माता पिता को यहीं अपने दरबार में ले आऊॅगा। जब तक तुम लौट कर आते हो तब तक वे मेरे मेहमान रहेंगे।

मैं इनको अपनी शाही मेज से खाना पीना दूॅगा। मैं इनको अपने शाही पोशाकों में से पहनने के लिये कपड़े दूॅगा। और इनको वे सब अच्छी चीज़ें दूॅगा जिनकी इन्हें जरूरत होगी।"

सो वे भले नौजवान अपनी यात्रा पर निकल पड़े। उन्होंने उस दिन अपनी यात्रा की। दूसरे दिन यात्रा की और फिर तीसरे दिन भी यात्रा की। बस उनके सिर पर आसमान था और चारों ओर बड़े बड़े घास के मैदान थे।

आखिर वे घास के मैदान पीछे छूट गये और अब वे घने जंगल में आ पहुॅचे थे। वे वहॉ पहुॅच कर बहुत खुश हुए। जंगल के किनारे पर ही उन्हें एक झोंपड़ी मिल गयी। उस झोंपड़ी के बराबर में ही एक भेड़ों का बाड़ा था जिसमें कुछ भेड़ें थीं।

उन्होंने आपस में कहा कि "देखो शायद हमें यहॉ अपना सिर छिपाने के लिये थोड़ी सी जगह मिल जाये। यहॉ हम अपनी यात्रा से थोड़ा आराम भी कर सकेंगे।

उन्होंने झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया तो उन्हें कोई जवाब नहीं मिला। उन्होंने उसमें झॉका तो वह उन्हें बिल्कुल खाली दिखायी थी। तीनों भाई उसमें घुस गये और रात को लेटने की तैयारी करने

लगे। उन्होंने पहले अपनी प्रार्थना की और फिर सोने के लिये लेट गये।

सुबह को ज़ोरका और पोलुनोष्का दोनों शिकार के लिये चले गये और वशोरका से कहा कि वह उनका खाना बना कर तैयार रखे। सबसे बड़ा भाई राजी हो गया। उसने झोंपड़ी में सारा सामान ठीक से लगाया और फिर बराबर के भेड़ों के बाड़े में गया।

उसने उनमें से एक बहुत मोटा भेड़ा चुना उसे काटा साफ किया और शाम के खाने के लिये भून लिया। जैसे ही उसने मेज लगायी और खिड़की के पास भाइयों का इन्तजार करने के लिये बैठा कि तभी उसे जंगल की ओर से लुढ़कने पुड़कने की बहुत ज़ोर की आवाज आयी

उस आवाज से उसकी झोंपड़ी के दरवाजे का कब्जा भी टूट गया और एक मूज़ीशैक जिसकी सात वर्स्ट लम्बी मूँछ थी पर वह खुद तुम्हारे अँगूठे जितना बड़ा था झोंपड़ी में घुसा। उसकी मूँछें बहुत दूर तक उसके पीछे फैली हुई थीं।

जब वह झोंपड़ी में घुसा तो उसने वशोरका को अपनी घनी भौंहों के नीचे से देखा और अपनी भयानक आवाज में चीखा — "तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरी झोंपड़ी के अन्दर आने की मानो तुम ही इसके स्वामी और मालिक हो। और फिर तुम्हारी मेरा भेड़ा काटने की भी हिम्मत कैसे हुई।"

पर वशोरका ने उसकी ओर देखा और मुस्कुरा दिया।

फिर वह बोला — "इससे पहले कि तुम इतनी ज़ोर से चीखो तुमको थोड़ा और बड़ा होना चाहिये। तुम यहॉ से चले जाओ और मुझे अपनी शक्ल मत दिखाना। नहीं तो मैं एक चम्मच बन्द गोभी का सूप लूँगा और एक छोटा सा टुकड़ा रोटी का लूँगा और उससे तुम्हारी ऑखें चिपका दूँगा।"

अंगूठे जितना बड़ा और सात वर्स्ट लम्बी मूँछों वाला मूज़ीशैक बोला — "अब मुझे पता चला कि तुम नहीं जानते कि मैं छोटा जरूर हूँ पर मैं बहुत बड़ा बहादुर हूँ।"

कहते हुए उसने हीरो को बैन्च पर से उठा लिया और उसे कोने कोने घसीटता फिरा जिससे उसका सिर दीवारों से इधर उधर टकराता रहा। उसके बाद उसे इतनी ज़ोर से बैन्च के नीचे फेंका कि वह ज़िन्दा कम और मरा हुआ ज़्यादा लग रहा था। फिर उसने मेज पर से भुना हुआ भेड़ा उठाया और हड्डियों सहित सब खा कर वहॉ से गायब हो गया।

शाम को जब भाई लोग आये तो उन्होंने पूछा कि क्या हुआ था। यह तुम्हारे सिर पर पट्टी क्यों बॅधी है। वशोरका को यह बताने में बहुत शर्म आयी कि एक इतने छोटे से आदमी ने उसका यह हाल कर दिया था सो उसने कहा कि उनके बिना आग की ओर देखते देखते उसके सिर में दर्द हो गया था इसलिये उसने पट्टी बॉध रखी थी। और इसी लिये वह न तो कुछ भून सका और न ही उबाल सका।

अगले दिन ज़ोरका और वशोरका दोनों शिकार के लिये गये और पोलुनुष्का घर रह गया खाना बनाने के लिये। जैसे ही उसने खाना बना कर रखा उसे भी जंगल की ओर से लुढ़कने पुड़कने की बहुत ज़ोर की आवाज आयी

उस आवाज से उसकी झोंपड़ी के दरवाजे का कब्जा भी टूट गया और एक मूज़ीशैक जिसकी सात वर्स्ट लम्बी मूँछ थी पर वह खुद तुम्हारे अँगूठे जितना बड़ा था झोंपड़ी में घुसा। उसकी मूँछें बहुत दूर तक उसके पीछे फैली हुई थीं।

उसने पोलुनुष्का को बहुत मारा और बैन्च के नीचे फेंक दिया। फिर उसने तैयार किया गया खाना खाया और गायब हो गया।

शाम को जब दोनों भाई शिकार से वापस लौटे तो उन्होंने पोलुनुष्का से पूछा कि खाने का क्या हुआ और उसने खुद ने अपने सिर पर कपड़ा क्यों बॉध रखा है।

उसने कहा कि उसे आग की ओर देखने से उसके सिर में दर्द हो गया। उसका सिर दर्द से फटा जा रहा था इसी कारण उसने अपने सिर पर कपड़ा बॉध रखा है और इसी कारण वह खाना भी नहीं बना पाया।

तीसरे दिन दोनों बड़े भाई तो शिकार के लिये चले गये और ज़ोरका घर पर अकेला ही रह गया खाना बनाने के लिये। उसने सोचा कि "मुझे लगता है कि यहॉ कुछ है जो ठीक नहीं है। यह मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा कि मेरे दोनों भाइयों को ही आग की

ओर देखने से सिर में दर्द हो जाये।" सो उसने वहॉ कुछ सुनने और देखने की कोशिश की ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह भी अनजाने में पकड़ा जाये।

उसने भी एक भेड़ा चुना उसे मारा काटा साफ किया और भून कर मेज पर सजा कर रखा कि तुरन्त ही उसको भी जंगल से आती बहुत ज़ोर की आवाज सुनायी पड़ी।

उस आवाज से उसकी झोंपड़ी के दरवाजे का कब्जा भी टूट गया और एक मूज़ीशैक जिसकी सात वर्स्ट लम्बी मूँछ थी पर वह खुद तुम्हारे अँगूठे जितना बड़ा था झोंपड़ी में घुसा। उसकी मूँछें बहुत दूर तक उसके पीछे फैली हुई थीं। उसके सिर पर भूसे का एक गट्ठर रखा हुआ था और हाथ में पानी की एक बालटी थी।

उसने पानी की बालटी तो अपने ऑगन में रख दी और भूसा सारे ऑगन में फैला दिया। फिर वह अपनी भेड़ें गिनने के लिये चला गया। वहॉ जा कर उसने देखा कि उसकी तो एक भेड़ फिर से कम हो गयी है। उसने गुस्से में भर कर अपना छोटा सा पैर जमीन पर मारा और झोंपड़ी के अन्दर घुसा और ज़ोरका के ऊपर कूद पड़ा।

पर यह ज़ोरका अपने भाइयों जैसा नहीं था। इसने मूज़ीशैक को उसकी मूँछों से पकड़ लिया और उसे झोंपड़ी में चारों ओर घुमाने लगा। वह उसे घुमाता जा रहा था और गाता जा रहा था —

अगर तुम नदी न जानते हो तो उसे पार करने की कोशिश मत करो

मूज़ीशैक जो अंगूठे से बड़ा नहीं था उसके हाथ में फॅसा फॅसा इधर उधर ऐंठ कर ज़ारका की लोहे जितनी मजबूत पकड़ से निकलने की कोशिश कर रहा था पर वह छूट नहीं पा रहा था। हालॉकि उसने अपनी मूँछों के सिरे उसकी मुट्ठी में ही छोड़ दिये थे फिर भी किसी तरह वह छूट कर वहॉ से जितनी ज़ोर से भाग सकता था भाग निकला।

अब मूज़ीशैक आगे आगे और ज़ारका उसके पीछे पीछे। पर किधर? मूज़ीशैक तो हवा में उड़ गया और उसकी ऑखों से ओझल हो गया। अब ज़ारका झोंपड़ी में वापस आ गया और खिड़की के सहारे बैठ कर अपने प्यारे भाइयों का इन्तजार करने लग गया।

शाम को जब दोनों भाई घर लौट कर आये तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गये कि उनका भाई तो वहॉ स्वस्थ और सम्पूर्ण बैठा हुआ था और उसका खाना भी तैयार था।

पर ज़ोरका ने अपनी कमर की पेटी से मूज़ीशैक की मूछों के सिरे निकाले जो उसने पकड़ लिये थे। उसने उनको अपने भाइयों को दिखाते हुए कहा — "देखो भाइयो। मैंने तुम्हारे सिर दर्द को जो तुम्हें आग से हुआ था यहॉ अपनी कमर की पेटी से बॉध लिया है।

अब मुझे पता चला है कि न तो ताकत में और न ही दिल की कठोरता में तुम लोग मेरे योग्य मेरे साथी हो। सो अब तुम लोग तो घर वापस चले जाओ और वहॉ जा कर हल चलाओ। मैं अकेला ही उस आश्चर्यजनक घोड़े की खोज में जाऊॅगा।"

कह कर वह अकेला ही अपने रास्ते चला गया।

जब वह जंगल से बाहर निकल रहा था तो वह एक अजीब सी झोंपड़ी के पास आया। उस झोंपड़ी में से उसने किसी के रोने की आवाज सुनी "जो भी मुझे खाने पीने को देगा मैं उसकी सेवा करूँगा।"

भला आदमी उस झोंपड़ी के अन्दर चला गया और देखा कि कोई जिसके बॉहें नहीं है टॉगें नहीं हैं अॅगीठी के ऊपर पड़ा हुआ है और बड़ी करुणा भरी आवाज में रो रहा था और मॉस और शराब के लिये चिल्ला रहा था।

ज़ोरका ने उसे कुछ खाने और पीने के लिये दिया और उससे पूछा कि वह कौन था। उसने कहा — "मैं भी एक हीरो था। तुमसे ज़रा भी कम नहीं था। पर लो मैंने अॅगूठे से जो बड़ा नहीं था उस मूज़ीशैक की एक भेड़ खा ली कि बस उसने मुझे इस तरह से अंग भंग कर डाला। मैं तुम्हें बताऊॅगा कि उस आश्चर्यजनक घोड़े को कैसे पकड़ना है।"

ज़ोरका बोला — "मुझे जल्दी बताओ कि वह घोड़ा कहॉ है।"

"तब ऐसा करो कि तुम नदी के पास जाओ। वहॉ पहुॅच कर एक नाव लेना और उससे लोगों को साल भर तक नदी पार कराते रहना। किसी से कोई पैसा मत लेना और फिर देखना कि वहॉ क्या होता है।"

ज़ोरका नदी तक गया वहॉ उसने एक नाव ली और साल भर तक किसी से बिना पैसा लिये लोगों को नदी पार कराता रहा।

अब ऐसा हुआ कि एक बार उसे इस काम में वहॉ तीन बूढ़ों को नदी पार करानी पड़ी। बूढ़े किनारे पर उतरे और उन्होंने अपने अपने सामान खोलने शुरू किये।

एक बूढ़े ने अपना सामान खोला और उसमें से एक मुठ्ठी भर सोना निकाला। दूसरे ने अपना थैला खोला तो उसमें से एक बहुत लम्बी मोती की माला निकाली। तीसरे ने अपना थैला खोला तो बहुत सारे कीमती पत्थर निकाले।

उन सबको ज़ोरका को देते हुए वे बोले — "ओ भले आदमी। यह लो अपनी नाव की उतरायी।"

ज़ोरका बोला — "मैं आपसे कुछ नहीं ले सकता क्योंकि मैं यहॉ किसी से अपने वायदे के अनुसार सबको बिना उनसे कुछ भी लिये हुए नदी पार कराने के लिये हूॅ।"

"तब फिर तुम यह काम किसलिये कर रहे हो?"

ज़ोरका बोला — "मैं उस आश्चर्यजनक घोड़े की तलाश में हूॅ जो सामान्य रूप से सफेद नहीं है है बल्कि चॉदी की चमक जितना सफेद है। मुझे वह कहीं मिल नहीं रहा है। इसी कारण कुछ भले लोगों ने मुझे यह सलाह दी है कि मैं यहॉ बिना किसी से कोई पैसा लिये उनको यह नदी पार कराऊॅ और मैं यह देखूॅ कि यहॉ क्या होता है।"

वे यात्री बोले — "यह तुम्हारे लिये अच्छा ही हुआ। क्योंकि तुम अपनी बात के सच्चे हो इसलिये हम तुम्हें उस यात्रा के लिये तैयार करेंगे। यह लो यह एक अॅगूठी है इसे तुम अपनी छोटी उॅगली में पहन लो। पर इसको तुम अपनी उॅगलियों में अदलते बदलते रहना इससे तुम्हारी सारी इच्छाऐं पूरी हो जायेंगीं।"

यह कह कर वे बूढ़े तो अपने रास्ते चले गये। ज़ोरका ने तुरन्त ही वह अॅगूठी अपनी छोटी उॅगली में पहनी और कहा — "मुझे उन उन जगहों पर ले चलो जहॉ जहॉ मूज़ीशैक जो अॅगूठे से बड़ा नहीं है अपना घोड़ा चराता है।"

उसके यह कहते ही एक तूफान सा आया और इससे पहले कि वह जान पाता वह ऊॅची ऊॅची चट्टानों के बीच की एक गहरी घाटी में खड़ा था।

पर उसके एक सिरे पर मूज़ीशैक जो एक अॅगूठे के बराबर लम्बा था जबकि उसकी मूॅछें सात वर्स्ट लम्बी थीं बैठा हुआ था और अपना घोड़ा चरा रहा था जो सामान्य सफेद नहीं था बल्कि चॉदी जैसा चमकता सफेद था। उसकी भौंह पर एक चॉद चमक रहा था और बहुत सारे सितारे उसकी गर्दन की बालों पर थे।

मूज़ीशैक उसे देखते ही चिल्लाया — "स्वागत है तुम्हारा ओ नौजवान। यहॉ तुम्हारा कैसे आना हुआ।"

"मैं यहॉ तुम्हारा घोड़ा ले जाने आया हूॅ।"

मूज़ीशैक बोला — "यह घोड़ा तुम्हारे लिये भी नहीं है और न ही किसी और के लिये है जो इसे मुझसे ले सके। अगर मैं इसे केवल इसकी गर्दन के बालों से भी पकड़ लूँ और इस जगह के किनारे तक ले जाऊँ तो इसे मुझसे कोई नहीं ले जा सकता चाहे वह कितनी भी कोशिश क्यों न कर ले।"

ज़ोरका बोला — "तब तुम इसे मुझसे बदल लो।"

मूज़ीशैक बोला — "खुशी से। मुझे तुमसे बदलने में कोई ऐतराज नहीं है। तुम मुझे अपने ज़ार की बेटी ला दो और मैं तुम्हें अपना घोड़ा दे दूँगा। फिर तुम इसे एक मैदान से दूसरे मैदान तक ले जा सकते हो।"

ज़ोरका बोला — "ठीक है।"

और वह तुरन्त ही यह सोचने लगा कि किस तरह से इस राक्षस को जीता जाये। वह अपनी अँगूठी एक उँगली से दूसरी उँगली में बदलता रहा और कहता रहा "ज़ारेवना तुरन्त मेरे सामने प्रगट हो।"

और पलक झपकते ही ज़ारेवना उसके सामने प्रगट हो गयी। वह पीली पड़ी हुई थी और काँप रही थी। वह उसके सामने अपने घुटनों पर बैठी हुई थी। उसने उससे विनती की — "तुमने मेरे पिता से मुझे क्यों अलग किया। मेरे ऊपर दया करो।"

ज़ोरका ने उससे फुसफुसाते हुए कहा — "मैं बस इस राक्षस का सबसे अच्छा उपयोग करना चाहता हूॅ। मैं उसे केवल यह विश्वास दिलाना चाहता हूॅ कि मैं आपको घोड़े के बदले में उसे दे दूॅगा।

मैं आपको उसे उसकी पत्नी के रूप में दे दूॅगा पर आप यह अॅगूठी रखें। जब भी आप घर लौटना चाहें तो बस आपको इसे अपनी एक उॅगली में से निकाल कर दूसरी उॅगली में पहननी है और कहना है "मै एक छोटी सुई के रूप में ज़ोरका की कमीज़ के कौलर के नीचे लग जाना चाहती हूॅ। तब आप देखियेगा कि क्या होता है।"

जैसे ही ज़ोरका ने ज़ारेवना से यह कहा कि वह नीचे गिर गयी। ज़ोरका ने ज़ारेवना को मूज़ीशैक को उस घोड़े के बदले में दे दिया। फिर उसने उस घोड़े पर अपना साज़ सजाया उस पर चढ़ा और अपने रास्ते चला गया।

पर मूज़ीशैक हॅसा और उसके पीछे चिल्लाया — "यह तो बड़ा अच्छा है कि तुमने मुझे घोड़े के बदले में इतनी सुन्दर लड़की दे दी।"

ज़ोरका अभी दो या तीन वर्स्ट भी नहीं गया होगा कि उसने अपनी गर्दन में कुछ चुभता हुआ सा महसूस किया। उसने वहॉ हाथ रखा तो महसूस किया कि वहॉ तो एक सुई थी। उसने तुरन्त ही उसे निकाल कर जमीन पर फेंक दिया और लो वह सुई तो एक बहुत सुन्दर लड़की बन गयी।

उसने रोते हुए ज़ोरका से विनती की कि वह उसको जल्दी से जल्दी उसे पिता के पास ले जाये। ज़ोरका ने उसे अपने पास घोड़े पर बिठाया और घोड़े को एड़ मार कर एक हीरो की तरह राजा के महल ले गया।

जब वह ज़ार के महल में पहुॅचा तो उसने ज़ार को बहुत बुरे मूड में पाया।

ज़ार ने कहा — "ओ नौजवान। मुझे तुम्हारी इस सेवा से बिल्कुल भी खुशी नहीं हुई। और न मुझे तुम्हारा लाया यह घोड़ा ही चाहिये जो तुम मेरे लिये ले कर आये हो। और न मैं तुम्हें तुम्हारे गुणों के अनुसार कुछ इनाम दूॅगा।"

"मैं आपसे विनती करते हुए पूछता हूॅ मगर क्यों ओ ज़ार।"

"क्योंकि मेरी बेटी मुझसे बिना पूछे ही मुझे छोड़ कर चली गयी।"

"नहीं नहीं ऐसा नहीं है मेरे लौर्ड मेरे ज़ार। इस बात को ले कर आप मेरे साथ खेल नहीं खेल सकते। ज़ारेवना तो इसी पल मुझे अपने कमरे से हाथ हिला रही थी।"

ज़ार तुरन्त ही ज़ारेवना के कमरे की ओर दौड़े जहॉ उनको अपनी बेटी मिल गयी। उन्होंने उसे गले लगाया और फिर उसे बाहर लाये और उसे नौजवान को दे कर बोले — "ओ नौजवान। यह लो अपना इनाम और मेरे जिगर का टुकड़ा।"

ज़ार ने ज़ोरका से घोड़ा ले लिया और उसे अपनी बेटी और आधा राज्य दे दिया। ज़ोरका अभी भी अपनी पत्नी के साथ रह रहा है। वह उसे बहुत प्यार करता है। वह अपनी खुशकिस्मती पर बहुत गर्व करता है पर घमंड नहीं करता।

13 सिनज़ैरो की कहानी[53]

टौम थम्ब जैसी यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये अफ्रीका महाद्वीप के इथियोपिया देश की लोक कथाओं से ली है।

इथियोपिया में इस टौम थम्ब का नाम सिनज़ैरो है। इथियोपिया की अम्हारा जनजाति के बच्चे और बड़े सभी इस होशियार और छोटे सिनज़ैरो की साहस भरी कहानियॉ बड़े शौक से कहते सुनते हैं।

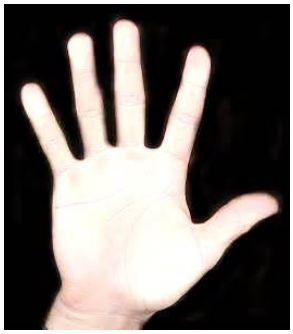

सिनज़ैरो नाम अम्हारिक भाषा[54] के सिनज़िर शब्द से निकला है। इस भाषा में इस शब्द का मतलब है "बालिश्त"। बालिश्त दूरी नापने के काम आता है। हाथ को फैलाने पर हाथ के अॅगूठे की नोक से ले कर सबसे छोटी उॅगली की नोक तक की दूरी को बालिश्त कहते हैं।

हालॉकि यह बहुत ही पुराने समय का नापने का ढंग है परन्तु घरों और गॉवों में आज भी नापने का यह एक आसान और बहुत लोकप्रिय तरीका है। इथियोपिया में नापने के लिये लोग इसे आज भी इस्तेमाल करते हैं।

[53] Sinzero – an Amhara folktale from Ethiopia, East Africa

[54] Amhara is a language of Ethiopia

इथियोपिया में दो बौनों की कहानियॉ बहुत मशहूर हैं — एक का नाम है सिनज़ैरो और दूसरे का नाम है "औरेटाट"[55]। औरेटाट का मतलब है अॅगूठा। इन दोनों ही की कहानियॉ इथियोपिया में एक जैसी मशहूर हैं।

सिनज़ैरो की कहानियों का कोई खास अन्त नहीं है परन्तु उसकी कोई कहानी ऐसी नहीं है जिसमें वह एक भला आदमी बन गया हो। पर एक बात उसके बारे में बिल्कुल सही है कि वह अपनी बूढ़ी मॉ की बहुत सेवा करता था।

इथियोपिया के अम्हारा जनजाति के बच्चे और बड़े सभी इस होशियार और छोटे सिनज़ैरो की साहस भरी कहानियॉ बड़े शौक से कहते सुनते हैं। यहॉ दी गयी कहानी उसके जन्म और उसकी ज़िन्दगी की कुछ घटनाओं के बारे में है।

इथियोपिया में एक औरत रहती थी जिसके सात लम्बे चौड़े, ताकतवर और बेवकूफ बेटे थे। उसके ये सातों बेटे घर में सारा दिन कुछ न कुछ ऊधम मचाये रखते थे।

कोई कुरसी पर बैठ जाता तो अपने बोझ से कुरसी ही तोड़ देता। किसी को भूख लगती तो वह इन्जिरा[56] की टोकरी ही खाली कर देता और साथ में वत का बरतन भी, और जब वे सोते तो सारा घर उनके खर्राटों के शोर से भर जाता।

[55] Oretat or Aure Tat – means thumb

[56] Injira is a staple food of Ethiopians. This is like Dosa of South India. It is eaten with a kind of soup, called "Wat". See both the pictures above – Injira over and Wat below it.

हालॉकि वे सब बहुत ताकतवर थे परन्तु उनमें से कोई भी अपनी इच्छा से कोई काम नहीं करना चाहता था बल्कि जितनी देर वे जागे रहते दूसरों को परेशान करने में ही लगे रहते और जब सो जाते तो अपने खर्राटों से घर भर में शोर मचाते।

एक दिन वह औरत अपने घर से तंग आ गयी। वह भाग कर झील के एक टापू पर बनी सेन्ट स्टीफेन की मोनेस्टरी[57] की तरफ चली गयी।

उस मोनेस्टरी में किसी औरत को घुसने की इजाज़त नहीं थी क्योंकि सैंकड़ों सालों से, जबसे वह मोनेस्टरी बनी थी तभी से कोई भी औरत उसके अन्दर नहीं जा सकती थी।

वहॉ जा कर वह झील के किनारे घुटनों के बल बैठ कर मोनेस्टरी की तरफ देख कर ज़ोर ज़ोर से कहने लगी — "भगवान, आपके देवदूत[58] और सब सेन्ट मेहरबानी कर के मेरी प्रार्थना सुनें।

मुझे इथियोपिया के सबसे ज़्यादा बड़े, परेशान करने वाले, भूखे और आलसी सात बेटे मिल चुके हैं। अबकी बार मुझे एक बेटी चाहिये। अगर आप सब मुझे बेटी न दे सकें तो मुझे एक बहुत ही छोटा सा बेटा दें।"

[57] Monastery of Saint Stephen
[58] Translated for the word "Angels"

भगवान प्रार्थना तो सबकी सुनते हैं परन्तु पूरी किसी किसी की करते हैं। उन्होंने उस औरत को बेटी तो नहीं दी परन्तु एक बहुत ही छोटा सा बेटा दे दिया।

वह बेटा जब पैदा हुआ तो वह आदमी के अॅगूठे की लम्बाई की आधी लम्बाई के बराबर था। उस औरत को अपना छोटा सा बेटा देख कर बहुत ही खुशी हुई और उसने उसका नाम सिनज़ैरो रख दिया।

यह उस औरत का पहला बच्चा था जिसको वह अपनी बॉहों में लेकर घूम सकती थी क्योंकि दूसरे बच्चों को तो घर तक लाने के लिये भी खच्चर बुलाना पड़ता था।

काफी दिन का हो जाने के बाद भी जब सिनज़ैरो का साइज नहीं बढ़ा तो उस औरत को और भी ज़्यादा खुशी हुई। इस सबसे उसको यह भी विश्वास हो चला था कि सिनज़ैरो बहुत ही होशियार बच्चा था।

उसको अपने उस छोटे से बेटे से बस एक ही परेशानी थी कि उसका साइज़ छोटा होने की वजह से उसको उसे उसके भाइयों से दिन में कई बार बचाना पड़ जाता था।

और केवल भाइयों से ही नहीं उसको तो उसे कई और भी चीज़ों से बचाना पड़ता था।

एक बार कमरे का दरवाजा खुला रह गया तो वह अपनी मॉ के खर्राटों की हवा से दरवाजे के बाहर उड़ कर जा गिरा था। और

उसको उसे हमेशा ही चूहे, चूज़ों आदि से तो बचा कर रखना ही पड़ता था।

जैसे जैसे दिन गुजरते गये सिनज़ैरो के सातों भाई सिनज़ैरो से बहुत नफरत करने लगे क्योंकि उनको लग रहा था कि उनकी मॉ सिनज़ैरो को उनसे ज़्यादा प्यार करती थी।

जब वे छोटे थे तो कभी उनकी मॉ ने उनको गोद में नहीं उठाया था, कभी उनको प्यार से नहीं चूमा था, कभी उनको गले से नहीं लगाया था पर सिनज़ैरो को वह सारा दिन अपनी गोद में लिये घूमती रहती थी।

एक बार सबसे बड़े भाई ने अपनी मॉ को अपनी बॉहों में लेने की कोशिश की थी तो उसने उसकी तीन पसलियॉ तोड़ दी थीं। और सिनज़ैरो को वह इतना प्यार करती थी कि दिन रात उसे साथ रखती थी।

इन सब बातों से तंग आ कर एक बार उन सातों भाइयों ने सिनज़ैरो को मारने की एक योजना बनायी।

सिनज़ैरो को मारने की कोशिश

एक दिन सिनज़ैरो के भाइयों ने सिनज़ैरो को अपने पड़ोसी का सबसे अच्छा बैल चुरा लाने के लिये राजी कर लिया। भाइयों ने सोचा कि उनका पड़ोसी जो एक आदमखोर था सिनज़ैरो को पकड़ लेगा और उसे खा जायेगा। पर ऐसा तो कुछ भी नहीं हुआ।

सिनज़ैरो उस बैल के सिर पर चढ़ गया। जब वह उसको दाहिने हाथ की तरफ ले जाना चाहता तो उसके दॉये कान पर भिनभिनाता और जब बॉये हाथ की तरफ ले जाना चाहता तो उसके बॉये कान पर भिनभिनाता।

इस तरह वह पड़ोसी के सामने ही उस बैल को जंगल की तरफ भगा कर ले गया जहॉ उसके भाई उसका इन्तजार कर रहे थे।

भाइयों को सिनज़ैरो के बच जाने का दुख तो बहुत हुआ पर बैल पाने की खुशी भी कम नहीं हुई। उन्होंने उस बैल को मारा, आग जलायी और उसका सारा मॉस खुद ही खाने लगे। सिनज़ैरो को उन्होंने कुछ भी नहीं दिया।

सिनज़ैरो बोला — "भाइयो, तुम लोग बड़े हो, तुमको खाना चाहिये वह तो ठीक है, पर मुझे कम से कम इसका ब्लैडर[59] ही दे दो।" भाइयों ने उस बैल का ब्लैडर सिनज़ैरो की तरफ फेंक दिया और सिनज़ैरो ने उसका एक ढोल बना लिया।

वह उस ढोल को एक डंडी से पीटता जाता और कहता जाता — "चैरक[60] ओ चैरक, हमने तुम्हारा बैल चुरा लिया है अगर हिम्मत हो तो आ कर हमसे लड़ो। मेरे बड़े भाई तुम्हारे जादू टोनों से नहीं डरते।"

[59] Bladder is that part of the body in which urine is collected.

[60] Cherok – name of an Ethiopian man

उसके भाई लोग यह सुन कर बहुत डरे और सारा मॉस वहीं का वहीं छोड़ कर जंगल में भाग लिये।

उधर सिनज़ैरो चैरक के घर गया और उसका एक खच्चर चुरा लाया। उस खच्चर पर उसने वह सारा मॉस लादा और अपनी मॉ को वह खच्चर और मॉस दोनों ले जा कर दे दिये। मॉ यह सब पा कर बहुत खुश हुई।

सिनज़ैरो और उसके भाइयों के बीच तनाव बढ़ता रहा। वे हमेशा यही सोचते कि उनकी मॉ सिनज़ैरो की वजह से ही उनको प्यार नहीं करती। जब यह सिनज़ैरो नहीं रहेगा तो हमारी मॉ हमें फिर से खूब प्यार करेगी।

अन्त में हालत यह हो गयी कि सिनज़ैरो का उस घर में रहना बहुत ही मुश्किल हो गया और उसको उसके लिये खास तौर पर बनाये गये एक छोटे से मकान में जा कर रहना पड़ा।

मॉ इस सब पर बहुत गुस्सा हुई। उसने अपने सातों बड़े बेटों की शादी कर दी और उनको अलग कर दिया।

एक रात सिनज़ैरो के भाई आये और उन्होंने सिनज़ैरो के छोटे से घर में आग लगा दी। पर उसकी अच्छी किस्मत कि वह उस आग में जल कर मरा नहीं। वह अपने घर के फर्श में बने एक छेद से हो कर एक खरगोश के बिल में निकल गया और बच गया।

अगली सुबह सिनज़ैरो ने अपने जले हुए घर की राख समेटी, उसको बोरों में भरा और खच्चरों पर लाद दिया। उसने वह शहर

छोड़ने का इरादा कर लिया था सो वह अपने खच्चरों के साथ वह शहर छोड़ कर चल दिया।

पहली रात वह एक अमीर आदमी के घर रुका। अगले दिन सुबह वह चिल्लाया — "अरे किसी चोर ने मेरे बोरों में से आटा चुरा कर उनमें राख भर दी है।"

जब सिनज़ैरो काफी देर तक चिल्लाता रहा तो उस अमीर आदमी को उस पर बड़ी दया आयी। इसके अलावा वह अमीर आदमी यह भी नहीं चाहता था कि उसके पड़ोसी यह सोचें कि इसी आदमी ने इस छोटे से लड़के का आटा चुराया है। इसलिये उसने सिनज़ैरो को सात बोरे आटा दे दिया।

सिनज़ैरो ने सोचा कि यह आटा मॉ को दे दिया जाये। सो वह अपने घर की तरफ चल दिया। जब सिनज़ैरो आटा देने के लिये घर लौटा तो उसने अपने भाइयों को अपनी चालाकी की कहानी सुनायी कि किस तरह उसने उस अमीर आदमी को लूटा।

उसकी कहानी सुन कर सब भाइयों ने एक आवाज में कहा — "यह तो बड़ी होशियारी की चाल है।"

उन्होंने सोचा कि वे भी कुछ ऐसा ही करेंगे सो वे लोग तुरन्त ही अपने अपने घर गये और उनमें आग लगा दी। फिर उस राख को बोरों में भर कर खच्चरों पर लाद कर वे भी उसी अमीर आदमी के घर चल दिये जिसके घर में सिनज़ैरो जा कर रुका था।

पहले दिन सबसे बड़ा भाई अपने खच्चरों के साथ उस अमीर आदमी के घर पहुँचा और उसके घर रात बितायी।

अगले दिन सुबह उठ कर उसने भी सिनज़ैरो की तरह चिल्लाना शुरू कर दिया कि उस घर में उसके आटे की चोरी हो गयी लेकिन उस अमीर आदमी उसको कोई आटा नहीं दिया बल्कि उसको अपने ऊपर इलजाम लगाने के जुर्म में घर से बाहर निकाल दिया।

जब दूसरा भाई वहॉ गया और उसने भी वही चाल खेली तो उस आदमी ने उसको धक्के मार कर सड़क पर फेंक दिया और जब तीसरा भाई वहॉ गया तो उसको तो उसने डंडों से पिटवाया।

जब चौथा भाई उसके घर गया तो उसने उससे पहले ही पूछ लिया — "तुम्हारे इन बोरों में क्या है?"

वह बेवकूफ भाई बोला — "आटा।"

अमीर आदमी बोला — "यह तो बड़ा अच्छा है, आज हमारे पास आटे की कुछ कमी है सो आज रात हम तुम्हारे लिये इसी आटे की रोटी बनवायेंगे।"

सो उस रात उस भाई को राख की रोटी खाने को मिली और अगले दिन सुबह उसको बाहर निकाल दिया गया।

उस अमीर आदमी ने यही चाल पॉचवे और छठे भाई के साथ भी खेली। लेकिन जब सातवॉ भाई वहॉ आया तो वह अमीर आदमी इन चालों और इन भाइयों से तंग आ चुका था सो उसने उस पर अपने सारे कुत्ते छोड़ दिये।

सभी भाई अपने सबसे छोटे भाई को देखने के लिये आये और तय किया कि इस बार सिनज़ैरो को जरूर ही मरना चाहिये।

सिनज़ैरो को मारने की एक और कोशिश

एक रात जब उन सब भाइयों की मॉ और पत्नियॉ सो रहीं थीं तो उन्होंने सिनज़ैरो को इन्जिरा की टोकरी में रख लिया और टोकरी नदी के किनारे ले जा कर उसका ढक्कन कस कर बॉध दिया ताकि वह खुल न सके और उस टोकरी को नदी में फेंक दिया।

ऐसा करने के बाद उनको पक्का विश्वास हो गया कि अबकी बार उनको सिनज़ैरो की शक्ल देखने को नहीं मिलेगी – पर जाको राखे सॉइयॉ मार सके ना कोय।

नदी की धारा में बहते बहते वह टोकरी कुछ ही दूर जा कर किनारे लग गयी।

सुबह उधर से यूसुफ नाम का एक अरब व्यापारी निकला। उसने वह टोकरी देखी तो उसको खोला। टोकरी खुलते ही सिनज़ैरो उसमें से बाहर निकल आया और गाने नाचने लगा।

वह बोला — "तुम अच्छी किस्मत वाले हो। तुम ही अल्लाह के प्यारे बेटे हो।"

यूसुफ बोला — "मेरी किस्मत अच्छी क्यों है? मुझे तो इसमें केवल भीगा हुआ एक लड़का मिला है। इसमें अच्छी किस्मत होने की क्या बात है?"

सिनज़ैरो बोला — "क्या मैं तुमको कुछ अजीब सा लड़का नहीं लगता?"

यूसुफ बोला — "हॉ, वह तो तुम लग रहे हो। तुम बहुत, बहुत, बहुत ही छोटे हो।"

सिनज़ैरो बोला — "हॉ, मैं बहुत ही छोटा हूॅ न इसी लिये मैं अल्लाह का पैगम्बर हूॅ और अपने छोटे साइज़ की वजह से ही मैं इस टोकरी के लायक भी नहीं था। और यह टोकरी भी क्या जादू की टोकरी है कि यह हर दोपहर को सोने से भर जाती है।"

यूसुफ यह सुन कर बहुत खुश हुआ। वह तुरन्त ही वह टोकरी ले लेना चाहता था क्योंकि वह बहुत लालची था पर उसको थोड़ी चिन्ता भी थी।

वह बोला — "अगर मैं यह टोकरी अपने घर ले जाऊॅगा तो गवर्नर मुझसे यह टोकरी ले लेगा। मैं क्या करूॅ?"

सिनज़ैरो बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो इसी लिये तो अल्लाह ने इस टोकरी को जंगल में भेजा है।"

यूसुफ बोला — "मुझे एक बात सूझी है। मैं तब तक यहीं रहूँगा जब तक यह टोकरी कई बार सोने से भरती है। फिर मैं उस सोने को अपने खच्चरों पर लाद दूँगा।

मैं इस टोकरी को यहॉ पत्थरों के पीछे छिपा दूँगा फिर इस सोने को शहर ले जा कर उसमें से थोड़ा सा सोना गवर्नर को दे दूँगा और बाकी सोना मैं अपने पास रख लूँगा। फिर जब भी मुझे सोने की जरूरत होगी मैं यहॉ से आ कर सोना निकाल लिया करूँगा।"

सिनज़ैरो बोला — "यह तो तुमने बहुत ही अक्लमन्दी की बात सोची। और यह तो मेरे लिये बहुत ही खुशी की बात है कि मेरी मुलाकात एक ऐसे आदमी से हुई जिसने पैसे के लालच में अपनी सोचने की ताकत नहीं छोड़ दी। यह तरकीब तो बहुत अच्छी है। तुम्हारे खच्चर कहॉ हैं?"

व्यापारी ने पहले अपने सिर पर हाथ मारा और फिर अपनी दाढ़ी सहलाता हुआ बोला — "अरे यह मैंने क्या कहा? मैं तो निपट बेवकूफ हूँ। मैंने तो अपने खच्चर पिछले गॉव में ही बेच कर शेख मुस्तफा को बेचने के लिये यह घोड़ा खरीदा है।"

सिनज़ैरो बोला — "कोई बात नहीं। अब तुम ऐसा करो, मैं यहॉ टोकरी के पास रहता हूँ तब तक तुम अपना यह सुन्दर घोड़ा ले कर जाओ और अपने खच्चर उससे वापस ले आओ।"

लालची व्यापारी बोला — "नहीं, ऐसा करते हैं कि मैं इस टोकरी के पास ठहरता हूँ और तुम यह पैसे और यह मेरा घोड़ा ले

जाओ और मेरे खच्चर वापस ले आओ। लेकिन तुम इस जादू की टोकरी के बारे में किसी से कहना नहीं।"

सिनज़ैरो ने उगते हुए सूरज की कसम खा कर कहा कि वह इस जादू की टोकरी के बारे में किसी को कुछ नहीं बतायेगा। फिर बोला — "तुम चिन्ता मत करो। इतने छोटे लड़के के मुँह से यह कहानी सुन कर तो कोई बेवकूफ भी उस पर यकीन नहीं करेगा।"

यूसुफ हॅसा और बोला — "यह तो तुम ठीक कहते हो। कोई भी इस कहानी पर यकीन नहीं करेगा। मगर अब तुम जल्दी चले जाओ।"

सिनज़ैरो ने व्यापारी से पैसे लिये और घोड़े की पूँछ से होता हुआ उसकी पीठ पर बैठ गया। फिर व्यापारी से बोला — "मैं तुमको एक बात बताना तो भूल ही गया। तुम टोकरी के लिये अभी नये हो इसलिये इसमें से अगर आज सोना न निकले तो घबराना नहीं। इन्तजार करना।"

"ठीक है।"

कह कर सिनज़ैरो व्यापारी को टोकरी के पास बैठा छोड़ कर शहर की तरफ चला गया और व्यापारी उस टोकरी को लिये हुए सूरज के बीच आसमान में आने का इन्तजार करता रहा।

घोड़ा तेज़ और अच्छा था सो सिनज़ैरो जल्दी ही अपने घर पहुँच गया। घोड़ा अपनी मॉ को देने के पहले सिनज़ैरो ने उसे अपने भाइयों को दिखाया। उसने उनको उस पर सवारी भी करायी।

लेकिन उसने उनको यह नहीं बताया कि वह घोड़ा उसको कहॉ और कैसे मिला।

उसने उनको व्यापारी के दिये हुए पैसे भी दिखाये और कहा कि उस व्यापारी के पास वैसे कई घोड़े थे। उसने उसी के घोड़ों को बेच कर ये पैसे कमाये थे। उसने उन पैसों में से कुछ पैसे अपनी मॉ को भी दिये।

इस पर मॉ अपने इतने बड़े बड़े बेटों पर खूब चिल्लायी — "तुम लोग इतने बड़े हो गये हो पर तुमने मुझे कभी कोई पैसे या घोड़ा ला कर नहीं दिया। हमेशा मुझे तंग ही करते हो। अगर यह मेरा छोटे वाला न होता तो हम सब भूखे ही मर जाते।"

पर मॉ की यह बात उसके सातों बेटों में से किसी को भी अच्छी नहीं लगी।

उस रात जब सारा घर उन सातों भाइयों के खर्राटों से भर गया, यानी वे सो गये, तो सिनज़ैरो अपने सबसे बड़े भाई के बिस्तर पर गया और उसके कान में फुसफुसाया — "मुझे ये घोड़े उस नदी में मिले थे जहॉ तुमने मुझे फेंका था। वहॉ अभी और भी घोड़े हैं।

जब कल सुबह सब सो रहे होंगे तब हम वहॉ चलेंगे। जब मैं सीटी बजाऊॅ तो तुम नदी पर चलने के लिये तैयार हो जाना।"

सिनज़ैरो ने अपने दूसरे भाई से कहा कि घोड़े पहाड़ पर हैं, तीसरे भाई से कहा कि घोड़े झील में हैं, चौथे भाई से कहा कि घोड़े रेगिस्तान में हैं, पॉचवे भाई से कहा कि घोड़े घास के मैदान में हैं,

छठे भाई से कहा कि घोड़े जंगल में हैं और सातवें भाई से कहा कि वे गुफा में हैं।

और उन सबसे यह भी कहा कि वे सुबह उसकी सीटी की आवाज सुन कर उठ जायें और फिर वे दोनों वहॉ चलेंगे। उसके बाद फिर सिनज़ैरो ने उन सबकी टॉगें उनके पलंगों से बॉध दीं।

सुबह सिनज़ैरो ने एक सीटी बजायी तो सभी एक साथ उठ गये और सात अलग अलग दिशाओं में भागने की कोशिश करने लगे परन्तु टॉगें बॅधी होने की वजह से कोई भी अपने बिस्तर से ही नहीं उठ सका और वे आपस में ही एक दूसरे को पीट पीट कर बेहोश हो गये।

सिनज़ैरो अपनी मॉ से बोला — "मॉ, मैं और घोड़े लाने के लिये जाता हूँ।"

मॉ ने पूछा — "बेटा, वे तुम्हें कहॉ मिलेंगे?"

सिनज़ैरो बोला — "जहॉ भी बेवकूफ लोग उन पर सवारी कर रहे होंगे।"

o

14 फ़ैरेयैल और जादूगरनी डैब्बे ऐंगल[61]

छोटे बच्चे की यह लोकप्रिय लोक कथा हमने तुम्हारे लिये पश्चिमी अफ्रीका के गाम्बिया देश की लोक कथाओं से ली है। अफ्रीका के देशों में से छोटे बच्चे की यह दूसरी लोक कथा है। इससे पहले वाली लोक कथा पूर्वीय अफ्रीका के इथियोपिया देश की सिनज़ैरो की कथा थी।

बहुत पुरानी बात है कि एक जादूगरनी थी जिसका नाम था डेब्बे ऐंगल[62]। उसके दस बहुत सुन्दर बेटियॉ थीं। वह उनके साथ गॉव से बहुत दूर एक बहुत बड़े घर में रहती थी।

उसकी बेटियों की सुन्दरता के चर्चे सब जगह थे। हर शादी की उमर वाला आदमी उनमें से किसी एक से शादी करना चाहता था।

कभी कभी वे आदमी जो उतनी दूर जा सकते थे उनमें से किसी एक से शादी करने के लिये उनके घर तक गये भी। पर अजीब सी बात यह थी कि वे वहॉ गये तो पर कोई भी वहॉ से वापस लौट कर नहीं आया।

इसलिये किसी का भी यह पता नहीं चला कि उन्होंने उनमें से किसी एक से शादी की या नहीं, और या फिर वे वहीं रह गये। या

[61] Fereyel and Debbe Engal, The Witch – a Fulani folktale from The Gambia, West Africa. Adapted from the Book "The Orphan Girl and the Other Stories", by Offodile Buchi. 2011.
[62] Debbe Engal – the name of the witch

फिर वे उन लड़कियों के घर तक भी पहुॅचे या नहीं या उनका क्या हुआ।

पर इस बात ने उन लड़कियों से शादी करने की इच्छा रखने वालों के उत्साह में कोई कमी पैदा नहीं की क्योंकि वे सब लड़कियॉ सुबह के सूरज की तरह सुन्दर थीं और हर आदमी उनका प्यार पाना चाहता था।

डैब्बे ऐंगल के गॉव से बहुत दूर के एक गॉव में एक औरत अपने दस बेटों के साथ रहती थी। उसके बेटे भी शादी के लायक थे और डेब्बे ऐंगल की बेटियों से शादी करना चाहते थे।

उनमें से सबसे बड़े बेटे ने सोचा कि यह केवल अल्लाह की मरजी है अगर उन सबकी शादी उन सब लड़कियों से हो जाये।

वह बोला — "यह तो अल्लाह की मरजी है कि हमारी शादी उन लड़कियों से हो। वे भी दस हैं और हम भी दस हैं इससे हमारे परिवारों को अलग भी नहीं होना पड़ेगा।"

उसके बाकी भाई भी इस बात पर राजी थे सो सबने डैब्बे ऐंगल और उसकी बेटियों के घर जाने के लिये उस लम्बी यात्रा के लिये अपना मन पक्का कर लिया।

उनकी मॉ उनके इस विचार से कुछ खुश नहीं थी। उसने उनको बहुत कहा कि वे अपनी पत्नियॉ वहीं किसी पास के गॉव से चुन लें पर उन्होंने साफ मना कर दिया कि वे ऐसा नहीं करेंगे और

अपना विचार भी नहीं बदला। उनको तो वे लड़कियॉ ही चाहिये थीं।

मॉ ने कहा — "मेरे बच्चों, मुझे तुम लोगों के लिये बहुत डर लगता है क्योंकि उस गॉव जो भी गया है वह वहॉ से कभी वापस लौट कर नहीं आया। वह गॉव तो बहुत ही बुरा है।"

पर उसके बेटों ने उसको विश्वास दिलाया — "तुम चिन्ता न करो मॉ, हम सब बिल्कुल ठीक रहेंगे।"

मॉ ने फिर कहा — "ऐसा भी तो हो सकता है कि पहिले तुममें से कोई एक या दो चले जाओ फिर जब वे वहॉ से लौट आयें तब बाकी भाई अपनी अपनी पत्नियों को लाने चले जायें।"

"नहीं मॉ हम सबको साथ ही जाना चाहिये और हम सब साथ साथ ही जायेंगे। हमारा विश्वास है कि डैब्बे ऐंगल अपनी सब बेटियों को एक ही परिवार में देना चाहती है और वह भी हमारे जैसे सुन्दर लड़कों को।"

इस तरह उन दसों बेटों ने मॉ का डर दूर किया और हॅस कर बोले कि क्योंकि वह स्त्री थी इसलिये आदमियों की इच्छाओं को नहीं समझ सकती थी।

उन्होंने अपनी मॉ से पूछा — "मॉ वे दस लड़कियॉ हम दस लड़कों से कैसे मैच कर सकतीं हैं?" और उन्होंने यात्रा पर जाने के लिये अपना सामान बॉध लिया।

अगले दिन बहुत सुबह, मुर्गे की बॉग देने से भी पहले उठे, उन्होंने अपनी मॉ को विदा कहा और डैब्बे ऐंगल और उसकी बेटियों के गॉव चल दिये।

उनके गॉव का रास्ता बहुत ही तंग और लम्बा था। सबसे बड़ा भाई सबसे आगे था और उसके बाकी सब भाई उसके पीछे पीछे चल रहे थे। वे सब गाते हुए चले जा रहे थे। वे सब बहुत खुश थे और अपनी इच्छा पूरी होने के बारे में सोचते जा रहे थे।

उधर जैसे ही उन दसों लड़कों ने अपना गॉव छोड़ा और तब तक सूरज भी नहीं निकला था कि उनकी मॉ ने अपने ग्यारहवें बेटे को जन्म दिया।

वह बच्चा इतना छोटा था कि वह अपनी मॉ को भी मुश्किल से दिखायी दे रहा था। उसकी मॉ ने घबरा कर इधर उधर देखा तो वह कूद कर बोला — "मैं यहॉ हूँ मॉ, मेरे बड़े भाई कहॉ हैं?"

वह बेचारी तो कुछ बोल ही नहीं सकी। ऑखें फाड़े देखती रह गयी। जब वह कुछ होश में आयी तो बोली — "वे लोग तो डैब्बे ऐंगल और उसकी बेटियों के घर गये हैं उसकी बेटियों से शादी करने।"

उस छोटे से बच्चे ने कहा — "मुझे जा कर उन्हें बचाना चाहिये मॉ। वे बहुत बड़े खतरे में हैं।" और वह तुरन्त ही अपने भाइयों को पकड़ने भाग गया।

उसने कुछ और कहने के लिये अपना मुँह खोलना चाहा पर उसके मुँह से कोई शब्द ही नहीं निकला। वह तो खतरे के नाम से ही बहुत घबरा गयी थी।

वह खुद ही बड़बड़ाता जा रहा था — "वह नीच जादूगरनी। वह केवल जवान आदमियों का शिकार करती है।

वह उनके लिये एक स्वागत वाली चटाई बिछाती है। फिर वह उनको बहुत बढ़िया बढ़िया खाना खिलाती है और शराब पिलाती है।

वह उनको इतना पिलाती है कि वे बेहोश से हो जाते हैं। फिर जब वे उसकी बेटियों से बात करते हैं तो वे भूल जाते हैं कि वे कहॉ हैं। और तब तक रात हो जाती है।

तब वह कहती है — "ओह अब तो रात हो गयी तुम यहीं मेरे घर क्यों नहीं ठहर जाते? अब यहॉ से जाने में बहुत खतरा है। तुम मेरे घर में आराम से सोओ कल सुबह चले जाना।"

वे जवान आदमी तुरन्त ही राजी हो जाते हैं। फिर जब वे सो जाते हैं तो वह नीच जादूगरनी अपनी म्यान में से एक खंजर निकालती है, उसको तेज़ करती है और उन आदमियों के कमरे में जा कर उन सबको मार डालती है।

ये जादूगरनियॉ, ये आदमी के मॉस पर ही क्यों जीती हैं, और अगर जीना चाहती हैं तो वे किसी और का मॉस खा कर जियें, पर

मेरे भाइयों के मॉस पर नहीं... । मुझे जा कर अपने भाइयों को बचाना चाहिये।"

उसने अपने आगे देखा तो उसको अपने भाई जाते दिखायी दे गये। उसने उनको पुकार कर उसका इन्तजार करने के लिये कहा तो वे आश्चर्य में पड़ गये क्योंकि उनको उम्मीद ही नहीं थी कि कोई उनको इस तरह रास्ते में पकड़ भी सकता था।

फिर उन्होंने अपने चारों तरफ देखा कि वह आवाज़ कहॉ से आ रही थी पर उनको कोई दिखायी भी नहीं दिया। वे उस आवाज को अनसुना कर के आगे चलने ही वाले थे कि वह छोटा लड़का सबसे आखीर में चलने वाले भाई की टॉगों से लिपट गया और बोला — "मैं यहॉ हूँ भैया।"

जब उन्होंने उस छोटे से लड़के को देखा तो वे आश्चर्य में पड़ गये। उनको पता नहीं था कि वे उसको क्या कहें – आदमी या कुछ और। क्योंकि देखने में वह आदमी जैसा लगता तो था पर एक आदमी कहलाने के लिये वह बहुत ही छोटा था।

उन्होंने उससे पूछा — "तुम कौन हो और क्या हो?"

वह छोटा लड़का बोला — "मैं फ़ैरैयैल हूँ, तुम्हारा भाई।"

उनमें से एक भाई बोला — "तुम हमारे भाई कैसे हो सकते हो? तुम तो कोई चालबाज हो क्योंकि हमारी मॉ के तो हम केवल दस ही बेटे हैं। तुम कहॉ से आ गये? तुम चले जाओ यहॉ से और हमको अकेला छोड़ दो हमें अभी बहुत दूर जाना है।"

फ़ैरैयैल बोला — "इसी लिये तो मैं यहॉ आया हूॅ। तुम जिस यात्रा पर जा रहे हो वह बहुत खतरनाक है और मैं तुम सबको उस खतरे से बचाने के लिये आया हूॅ।"

सारे भाई उस छोटे बच्चे की ये बातें सुन कर उन्हें मजाक समझ कर हॅस पड़े। जितना ज़्यादा वे इस बच्चे की बातों को अनसुना करते रहे उतना ही ज़्यादा वह बच्चा अपनी बात पर अड़ा रहा।

उन्होंने उसको बहुत पीटा और मरा हुआ समझ कर वहीं छोड़ कर डैब्बे ऐंगल के घर की तरफ चले गये।

काफी रास्ता पार करने के बाद जब सूरज उनके सिर के ऊपर से गुजर गया तो एक भाई को रास्ते में एक बहुत ही सुन्दर कपड़े का टुकड़ा पड़ा मिला।

उसने उस कपड़े को उठा लिया और उसको सबको दिखाते हुए बोला — "खुशी मनाओ मेरे भाइयो, अब हमारी यात्रा बहुत ही अच्छी रहेगी। यह देखो।

लगता है कि यह कपड़ा डैब्बे ऐंगल की बेटियों ने हमारे लिये यहॉ जान बूझ कर छोड़ा है ताकि हम उनके घर आसानी से पहुॅच सकें।" और यह कह कर उसने वह कपड़ा अपने कन्धे पर डाल लिया।

पर वे थोड़ी ही दूर और आगे गये थे कि उस भाई को लगा कि उसका कन्धा उस कपड़े के बोझे से कुछ भारी सा लगने लगा है सो

उसने अपने भाइयों से कहा कि वे उस कपड़े को ले चलने में उसकी सहायता करें।

उनमें से एक भाई ने हॅसते हुए कहा — "क्या? तुमको एक कपड़े को ले चलने में भी सहायता की जरूरत है? मॉ ठीक कहती थी कि तुम एक लड़की हो जो वह कभी नहीं चाहती थी।"

उसके एक भाई ने उससे वह कपड़ा ले लिया और अपने कन्धे पर डाल लिया। यह देख कर उसके दूसरे भाई हॅस पड़े। पर वे फिर कुछ ही दूर चले थे कि उस भाई को भी उस कपड़े का बोझ ज़्यादा लगने लगा सो उसने भी वह कपड़ा अपने दूसरे भाई को दे दिया।

कुछ देर बाद उसको भी वह कपड़ा बोझ लगने लगा। यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक कि दसवॉ भाई भी उसको उठा कर नहीं चल सका।

जैसे ही उसने वह कपड़ा अपने कन्धे पर से उतारा तो एक आवाज आयी — "हा हा हा। यह मैं हूॅ फ़ैरैयैल, तुम्हारा सबसे छोटा भाई।" यह कहते हुए वह कपड़े में से कूद कर बाहर आ गया।

बाहर आ कर वह बोला — "मैं कपड़े के अन्दर बैठा था और इतनी देर तक तुम लोग मुझे उठाये ला रहे थे। इसी लिये वह कपड़ा इतना भारी था।"

यह सुन कर उसके भाई लोग बहुत गुस्सा हुए। उन्होंने उसको पकड़ कर फिर से बहुत पीटा।

एक भाई ने कहा — "यह उसको सबक सिखाने के लिये काफी है इसे वह इतनी जल्दी नहीं भूल सकता।" उन्होंने उसको फिर से मरा समझ कर छोड़ दिया और आगे अपनी यात्रा पर चल दिये।

जल्दी ही उनमें से एक भाई का पैर किसी सख्त चीज़ पर पड़ा तो उसने नीचे देखा तो देखा कि वहॉ तो एक चॉदी की अॅगूठी पड़ी थी।

उसने उस अॅगूठी को उठाते हुए कहा — "लगता है कि आज मेरा दिन अच्छा है। किसी की अॅगूठी खो गयी है और अब यह मेरी है।" कह कर उसने वह अॅगूठी अपने हाथ में पहन ली और वे फिर आगे चल दिये।

कुछ देर बाद उस भाई ने महसूस किया कि उसकी वह अॅगूठी उसकी उॅगली में बहुत भारी हो गयी है और वह इतनी भारी हो गयी थी कि वह उसको और नहीं पहन सकता सो उसको उसने अपने दूसरे भाइयों को दे दिया जैसा कि उन्होंने उस कपड़े के टुकड़े के साथ किया था।

एक भाई से दूसरे भाई के हाथों से गुजरती हुई वह अॅगूठी आखीर में सबसे बड़े भाई के पास पहुॅची और जब वह भी उसको नहीं पहन सका तो फ़ैरैयैल उस अॅगूठी में से कूद कर बाहर आया

और बोला — "अब तक तुम सबको मालूम हो जाना चाहिये था कि इसमें मैं बैठा था।"

सब भाइयों ने फिर से उसको इतना पीटने का निश्चय किया कि वह मर जाये पर इस बार सबसे बड़े भाई ने उन सबको यह करने से रोक दिया।

वह बोला — "इस छोटे से बच्चे ने हमारा इतना ज़्यादा समय लिया है तो इसको अपने साथ चलने दो और फिर यह हमारे साथ चलने के लिये इतना पक्का इरादा ले कर आया है तो हमें इसे नाउम्मीद भी नहीं करना चाहिये। इससे अब हमको इतना परेशान होने की जरूरत भी नहीं है।"

इस तरह अब ग्यारह भाई अपनी यात्रा पर चल पड़े। वे अब पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ जा रहे थे। फ़ैरैयैल उन सबके पीछे चल रहा था।

वे लोग जल्दी ही डैब्बे ऐंगल के गॉव आ गये। जब वे वहॉ पहुँचे तो वह जादूगरनी उनके स्वागत के लिये बाहर आयी। उसकी बेटियॉ उसके पीछे थीं।

उन लड़कियों की सुन्दरता देख कर तो सारे भाइयों की बोलती ही बन्द हो गयी थी। उन्होंने ऐसी सुन्दरता पहिले कभी नहीं देखी थी। उन्होंने तो यह कभी सोचा ही नहीं था कि इतनी सुन्दर लड़कियॉ धरती पर थीं भी।

उनको तो अपनी मॉ की कहानियॉ याद थीं जो वह उनको सुनाया करती थी जिनमें बहुत सुन्दर लड़कियॉ पानी में रहा करती थीं, या फिर वे बहुत दूर किसी ऐसी जगह रहती थीं जहॉ अब तक कोई गया ही नहीं था।

उनकी मॉ के अनुसार अगर कोई लड़की इतनी सुन्दर थी कि अगर कोई लड़का सड़क पर उसके पास से गुजर जाता और पीछे मुड़ कर नहीं देखता था तो इसका यह मतलब था कि वह जरूर ही किसी बीमारी का शिकार था।

और अगर कोई आदमी किसी ऐसी सुन्दरता को शाम को देखे तो उसको उस लड़की से कोई बात नहीं करनी चाहिये क्योंकि वह जरूर ही कोई भूत रही होगी।

उस लड़की को उसे अपनी ऑखों के कोनों से यह देखते हुए कि वह उसे कहीं देख तो नहीं रही, गुजर जाने देना चाहिये था। उसको झुक कर यह भी देखना चाहिये था कि उसकी एड़ियॉ तो जमीन से नहीं छू रहीं थीं और उसके पैर भी जमीन पर निशान छोड़ते जा रहे थे या नहीं।

क्योंकि अगर उसकी एड़ी जमीन से नहीं छू रही थी तो उसको वहॉ से जितनी तेज़ वह भाग सकता था उतनी तेज़ भाग जाना चाहिये था क्योंकि तब तो वह निश्चित रूप से भूत थी।

उन लड़कियों को देख कर उन लड़कों ने सोचा कि वे इतनी सुन्दर लड़कियॉ केवल उनका सपना ही थीं। फिर भी वे वहॉ उन

दसों लड़कों के सामने कम से कम खड़ी तो थीं, आमने सामने। उनको लगा कि वे मर गये हैं और स्वर्ग में खड़े हैं।

डैब्बे ऐंगल बोली — "आओ मेरे बच्चों। अब जबकि तुम लोगों ने मेरी बेटियों को देख लिया है मैं चाहूँगी कि तुम उनको जान भी लो। उनको यकीन है कि वे तुमको यहॉ आराम से ठहरायेंगी।"

इसके बाद उस जादूगरनी ने उन सबका अपनी बेटियों से परिचय कराया और फिर उनको अपने मेहमानों वाले घर में ले गयी। तब तक उसने फ़ैरैयैल को नहीं देखा था जो अपने सबसे बड़े भाई के पैरों के पीछे ही खड़ा था।

उसने उन लड़कों को मेहमानों वाले घर में ले जा कर खूब अच्छा खाना खिलाया और खूब शराब पिलायी। आखीर में उसने फ़ैरैयैल को देखा तो उसे उसका साइज़ देख कर उसे बड़ा आनन्द आया।

उसने उससे कहा — "ए तुम, इधर आओ। तुम मेरे साथ मेरे घर में आओ। तुम तो बहुत ही प्यारे हो। मैं तुमको अपने घर में आराम से ठहराऊँगी।"

जैसा कि डैब्बे ऐंगल ने सोच रखा था वे लड़के उसकी बेटियों के साथ आनन्द करते रहे और उन लड़कों के वहॉ रहते रहते ही रात हो गयी।

उन लड़कों को वहॉ रोकने में उसको कोई खास परेशानी नहीं हुई। वह लड़के वहॉ रुकने में बहुत खुश थे। उसने उनको और

खाना और और शराब परसी। सब लोगों ने खूब खाया और खूब नाचा।

डैब्बे ऐंगल ने जब देखा कि बीसों लड़के लड़कियॉ खा पी कर धुत हो गये हैं और एक दूसरे के ऊपर सो रहे हैं तो वह आ कर बोली — "सब चीज़ों का कहीं तो अन्त होता ही है।"

उसने उनके बिस्तर बिछाये। आदमियों को उसने सफ़ेद कपड़े ओढ़ाये और अपनी बेटियों को नीले कपड़े ओढ़ाये। फिर वह अपने घर चली गयी।

फ़ैरैयैल के सोने के लिये उसने एक बहुत ही अच्छी जगह तैयार की। उसने फ़ैरैयैल से "गुड नाइट, मेरे छोटे आदमी" बोला तो फ़ैरैयैल बोला "गुड नाइट, मेरी बड़ी औरत। तुम कैसे सोती हो?"

डैब्बो ऐंगल बोली — "जब मैं सो जाती हूॅ तो खर्राटे मारती हूॅ, ऐसे –

हू हू हू हू अब मैं सुबह उठूॅगी हू हू हू हू अब मैं सुबह उठूॅगी

और तुम कैसे सोते हो?"

फ़ैरैयैल ने झूठ बोला — "मैं तो जंगली सूअर की तरह सोता हूॅ। हं हं हं हं।"

डैब्बो ऐंगल बोली — "ठीक है, ठीक से सोना।" और फिर वह खुद भी सोने चली गयी।

पर फ़ैरैयैल सोया नहीं, वह बस चुपचाप पड़ा रहा और सोने का बहाना करता रहा — "हं हं हं हं।"

जब डैब्बे ऐंगल ने उसको जैसे उसने उसको बताया था खर्राटे मारते सुना तो वह बिना आवाज किये अपने बिस्तर से उठी और कमरे के उस कोने में गयी जहॉ उसका खंजर रखा था।

उसने खंजर को उसकी म्यान से निकाला ही था कि फ़ैरैयैल जाग गया और बोला — "यह तुम क्या कर रही हो?"

उसने तुरन्त ही खंजर म्यान में रख दिया और परेशान सी होती हुई बोली — "कुछ नहीं। मुझे अफसोस है कि मैंने तुम्हें जगा दिया, मेरे छोटे आदमी। लाओ मैं तुम्हारा तकिया ठीक कर दूॅ।"

उसने उसका तकिया ठीक किया और उसे फिर से सो जाने के लिये कहा और वह खुद भी अपने बिस्तर पर जा कर सो गयी।

काफी देर बाद फ़ैरैयैल ने फिर से अपने खर्राटे मारने शुरू किये तो डैब्बे ऐंगल फिर से उठी और अपना खंजर लेने गयी पर फ़ैरैयैल फिर उठ गया और उसने फिर उससे पूछा — "अब तुम क्या कर रही हो?"

डैब्बे ऐंगल फिर यही बोली कि वह कुछ नहीं कर रही थी। उसने फिर से फ़ैरैयैल का तकिया ठीक किया और उसको सोने के लिये कहा।

काफी देर बाद, सुबह होने के करीब के समय में जब सब शान्त था, कोई मकड़ा भी नहीं बोल रहा था, फ़ैरैयैल अपनी यात्रा के बारे में सोच रहा था तो उसने जादूगरनी के खर्राटे सुने –

हू हू हू हू अब मैं सुबह उठूॅगी, हू हू हू हू अब मैं सुबह उठूॅगी

उसके खर्राटे सुन कर फ़ैरैयैल चुपचाप से अपने बिस्तर से उठा और उस मेहमानों वाले घर में पहुॅच गया जहॉ उसके भाई और वे सुन्दर लड़कियॉ सोयी हुई थीं।

उसने बड़ी सावधानी से अपने भाइयों के ऊपर से सफेद कपड़े हटा कर उन्हें लड़कियों के ऊपर डाल दिया और उन लड़कियों के नीले कपड़े हटा कर अपने भाइयों के ऊपर डाल दिये।

यह सब कर के वह अपने उस घर में आ गया जहॉ वह और डैब्बे ऐंगल सो रहे थे। धीरे से वह अपने बिस्तर में घुस गया और अपनी चादर ओढ़ ली। वह फिर से उस जादूगरनी को धोखा देने के लिये खर्राटे भरने लगा।

जब डैब्बो ऐंगल ने फिर से फ़ैरैयैल के खर्राटे सुने तो वह फिर चुपचाप से उठी और अपने कमरे के कोने में अपना खंजर निकालने गयी।

उसने अबकी बार बड़ी धीरे से अपनी म्यान में से उसे निकाला, चुपचाप ही उसको तेज़ किया और मेहमानों वाले कमरे में चली गयी।

उसने पहचाना कि कौन कौन है और फिर सफेद कपड़े से ढके लोगों को बड़ी सफाई से मार दिया। अपने काम से सन्तुष्ट हो कर वह अपने कमरे में आ कर सो गयी।

काफी देर बाद उसने भी खर्राटे मारना शुरू कर दिया। फ़ैरैयैल को पता चल गया कि अब वह गहरी नींद सो गयी है।

तुरन्त ही फ़ैरैयैल अपने बिस्तर से उठा और अपने भाइयों को जगाने गया। उसने उनको पहले समझाया और फिर दिखाया कि वहॉ क्या हुआ था कि डैब्बे ऐंगल ने अपनी ही बेटियों को मार दिया था।

यह देख कर तो वे सब बहुत आश्चर्य में पड़ गये। उन्होंने वहॉ से अपना सामान उठाया और भाग लिये।

अभी वे लोग जंगल में बहुत दूर नहीं जा पाये थे कि डैब्बे ऐंगल जाग गयी। उसने देखा कि फ़ैरैयैल अपने बिस्तर पर नहीं है तो वह मेहमानों वाले घर की तरफ भागी जिसमें वे नौजवान और उसकी बेटियॉ सोये हुए थे।

वहॉ जा कर उसने देखा कि उसने तो गलती से अपनी ही बेटियों को मार दिया था और वे नौजवान भी वहॉ से भाग गये थे।

यह सब देख कर तो वह गुस्से से लाल पीली हो गयी। उसने तुरन्त ही हवा को बुलाया और उस हवा पर सवार हो कर वह उन नौजवानों का पीछा करने चली।

फ़ैरैयैल ने देख लिया कि उनके पीछे आने वाली हवा में वह जादूगरनी थी। उसने अपने भाइयों को सावधान किया भी पर उसके भाइयों को तो पता ही नहीं था कि उनको क्या करना है।

लेकिन फ़ैरैयैल ऐसा नहीं था। उसने तुरन्त ही झाड़ियों में से एक अंडा निकाला और उसे अपने भाइयों और हवा के बीच में तोड़ दिया।

तुरन्त ही उस हवा और भाइयों के बीच में एक बहुत चौड़ी नदी बन गयी जो वह जादूगरनी पार नहीं कर सकती थी। यह देख कर जादूगरनी ने हवा में से एक कैलेबाश पैदा किया।

वह उस कैलेबाश में नदी का पानी भर भर कर नदी को खाली करने लगी। जल्दी ही वह नदी खाली हो कर सूख गयी और डैब्बे ऐंगल फिर से उन भाइयों का पीछा करने लगी।

फ़ैरैयैल ने फिर देखा कि वह जादूगरनी अभी भी हवा में आ रही थी सो उसने फिर से अपने भाइयों को सावधान किया। पर उसके भाइयों को तो पता ही नहीं था कि उनको क्या करना था।

अबकी बार फ़ैरैयैल ने नीचे से एक पत्थर उठाया और उसको अपने और डैब्बे ऐंगल के बीच में उड़ा दिया। वह पत्थर तुरन्त ही एक पहाड़ में बदल गया और उसने उन दोनों के बीच का रास्ता ही बन्द कर दिया।

इस पर डैब्बो ऐंगल ने हवा से जादू की एक कुल्हाड़ी बुलायी और उससे पहाड़ खोदने लगी। पर जब तक उसने

पहाड़ में से जाने का रास्ता बनाया तब तक तो वे भाई लोग ज़िन्दा आदमियों और जादूगरों की दुनियॉ के बीच की हद पार कर चुके थे।

अब वह उन पर अपना कोई असर नहीं डाल सकती थी। उन लोगों को भी अपना घर दिखायी दे गया था सो वे दौड़ कर अपने घर के अन्दर घुस गये।

अगले दिन इन भाइयों को गॉव के लिये लकड़ी काटने जंगल जाना था पर वे अभी भी डरे हुए थे कि कहीं उनका सामना डैब्बे ऐंगल से न हो जाये। पर उनको तो लकड़ी लाने जाना ही था सो वे जंगल तो गये पर वे बहुत सावधान थे और हमेशा पीछे देखते रहते थे।

डैब्बे ऐंगल ने उन लोगों को देख लिया तो वह एक लट्ठे का रूप रख कर वहीं रास्ते में पड़ गयी। फ़ैरैयैल ने जब एक अजीब सा लट्ठा रास्ते में पड़ा देखा तो उसने पहचान लिया कि यह तो डैब्बो ऐंगल है।

उसने फिर अपने भाइयों को सावधान किया कि वह वहॉ लट्ठा नहीं था बल्कि वह तो जादूगरनी थी तो इससे पहले कि वह जादूगरनी उनको किसी और रूप में बदल पाती वे वहॉ से जल्दी ही अपने घर भाग गये।

पर डैब्बे ऐंगल भी उनको छोड़ने वाली नहीं थी। उसने अपने आपको कई चीज़ों में बदला ताकि गॉव वाले उसे पहचान न सकें पर उसकी कोई तरकीब काम नहीं की।

कई दिनों बाद एक बार उन भाइयों को जंगल से आलूबुखारा[63] लाने के लिये भेजा गया। तब तक वे सब तो उस जादूगरनी को भूल ही गये थे पर फ़ैरैयैल नहीं भूला था।

जब वे सब अपने प्रिय आलूबुखारों के पेड़ों के पास आये तो उन्होंने देखा कि करीब करीब सारे आलूबुखारे खराब हो चुके थे सिवाय एक पेड़ पर एक गुच्छे के।

उस पेड़ की पत्तियॉ गहरे हरे रंग की थीं और उसके फल रसीले और सुन्दर लग रहे थे। सारे भाई यह देख कर बहुत खुश हुए।

वे उन फलों को तोड़ने के लिये दौड़े कि फ़ैरैयैल ने महसूस किया कि यह तो डैब्बो ऐंगल की चाल है सो उसने उनको सावधान कर दिया। इससे वे उसकी पकड़ में आने से बच गये।

अगली सुबह जब वे भाई सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि एक गधा बाहर मैदान में चर रहा है। वे उस गधे पर चढ़ गये और उसको दौड़ाने के लिये "अइ अइ अइ" करने लगे।

[63] Translated for the word "Plums". See its picture above.

पर वह तो चला भी नहीं और फ़ैरैयैल की तरफ देखने लगा। तो उसके भाइयों ने उससे कहा — "आओ, तुम भी इस गधे पर चढ़ जाओ।"

फ़ैरैयैल बोला — "हालॅकि मैं बहुत छोटा हूॅ पर वहॉ मेरे बैठने के लिये तो कोई जगह ही नहीं है।" यह सुन कर गधा और लम्बा हो गया और उसने उसके लिये भी जगह बना दी।

फ़ैरैयैल बोला — "तुम्हारी ज़िन्दगी ले कर नहीं। मैं और उस गधे पर चढ़ूॅ जो मुझे सुन सकता है और मुझे सुन कर अपनी लम्बाई बढ़ा सकता है? नहीं नहीं कभी नहीं।" यह सुन कर गधा फिर से अपनी पुरानी लम्बाई में आ गया।

फ़ैरैयैल जान गया था कि यह गधा नहीं था बल्कि डैब्बे ऐंगल खुद थी सो वह उस पर हॅसने लगा और अपने भाइयों से बोला — "तुम लोग फिर से धोखा खा गये हो। यह गधा नहीं है बल्कि डैब्बे ऐंगल खुद है क्योंकि एक गधा कैसे तो दस आदमियों को बिठा सकता है और कैसे आदमी की बात सुन सकता है?"

उस गधे ने तुरन्त ही उन दसों भाइयों को नीचे गिरा दिया। वे सब उठे और उठ कर वहॉ से भाग गये। डैब्बे ऐंगल ने भी अपने आपको गधे से डैब्बे ऐंगल में बदल लिया और उनके पीछे पीछे भागी।

फिर उसने सोचा — "मैंने हर तरकीब लड़ायी पर मेरी हर कोशिश नाकामयाब रही, केवल इस छुटके की वजह से। पहले मुझे

इस छुटके से निपटने की कोई तरकीब सोचनी चाहिये उसके बाद मैं उन दसों को तो अपने मुट्ठी में कर ही लूँगी।"

सो अगले दिन, दिन निकलने के काफी देर बाद, एक बहुत सुन्दर लड़की फ़ैरैयैल के पास आयी। वह लड़की बहुत सुन्दर थी। इतनी सुन्दरता तो उसने पहले कभी देखी नहीं थी।

वह बोली — "मैं तुमसे मिलने आयी हूँ।" फ़ैरैयैल उसको देख कर बहुत खुश था। वह उस लड़की को अपने घर ले गया और वहॉ उसने उसकी बहुत खातिरदारी की।

उसकी मॉ ने उस लड़की के लिये बहुत ही स्वादिष्ट खाना बनाया और उनको पीने के लिये बढ़िया शराब भी दी। जब शाम हो गयी तो वह लड़की बोली कि अब वह अपने माता पिता के पास जाना चाहती थी।

फ़ैरैयैल बोला — "ठीक है, अच्छा विदा। उम्मीद है कि हम लोग फिर जल्दी ही मिलेंगे।"

वह लड़की बोली — "क्या तुम मुझे मेरे घर तक छोड़ने भी नहीं चलोगे? और यह इसलिये नहीं है कि दोस्त लोग अपने घर का रास्ता नहीं जानते बल्कि इसलिये भी कि किसी दोस्त को छोड़ने जाना दोस्ती की भी निशानी है और तौर तरीका भी है।"

फ़ैरैयैल ने अपने सिर पर अपना दॉया हाथ मारा और उससे माफी मॉगते हुए बोला — "उफ़, मुझे अफसोस है। मैं तो भूल ही

गया था। सचमुच मुझे बहुत ही अफसोस है कि मैं तो अपने तौर तरीके ही भूल गया था।"

जैसे ही वे दोनों अँधेरे में घर से बाहर निकले फ़ैरैयैल की मॉ ने भी उस लड़की को विदा कहा। उस रात चॉद आधा ही था सो चारों तरफ बहुत ही कम रोशनी थी।

लड़की आगे आगे जा रही थी और फ़ैरैयैल उसके पीछे पीछे चल रहा था पर उसको दस पन्द्रह फीट से आगे का भी मुश्किल से ही दिखायी दे रहा था।

अचानक उस लड़की ने अपने कदम बढ़ाये और एक बड़े से पेड़ के तने के पीछे छिप गयी। इससे पहले कि फ़ैरैयैल कुछ कहता वह फिर से वापस आ गयी। पर इस बार वह लड़की के रूप में नहीं थी बल्कि एक बहुत बड़े भयानक अजगर के रूप में थी।

वह फ़ैरैयैल की तरफ बढ़ी तो फ़ैरैयैल बोला — "मुझे मालूम था कि यह तुम हो डैब्बे ऐंगल। तुम उसके साथ चालें नहीं खेल सकतीं जो खुद ही भगवान से बात करने वाला[64] हो।"

और यह कहते के साथ ही फ़ैरैयैल एक नरक की आग के रूप में बदल गया। अजगर तब तक अपनी लम्बी कुंडली नहीं खोल सका ताकि वह उस आग से बच कर भाग सके सो जब तक वह

[64] Translated for the word "Diviner"

उस नरक की आग का सामना करता तब तक तो वह आग के चपेटे में आ गया था।

अजगर आग में जल कर मर गया था। फ़ैरैयैल अपने गॉव अपने घर लौट आया और अपने भाइयों और सब गॉव वालों को बताया कि क्या हुआ था। सारे गॉव में खूब खुशियॉ मनायी गयीं। खूब अच्छा खाना पीना नाचना हुआ कि डैब्बो ऐंगल जादूगरनी मर गयी थी।

List of Stories of Tom Thumb Like Stories

1. Tom Thumb – Germany, Europe.
2. The History of Tom Thumb – Britain, Europe.
3. Don Firriulieddu – Italy, Europe.
4. Thumb – France, Europe. By Charles Perrault. I
5. The Little Paucett – United Kingdom, Europe.
6. Thumbelina - Denmark, Europe.
7. Little Chickpea - Italy, Europe.
8. Thumbikin – Norse Countries, Europe.
9. Ali Thumb – From Turkey, Europe.
10. Sir Peppercorn – From Serbia, Europe.
11. The Boy Who Set a Snare for the Sun – Native Americans, North America.
12. The Muzhichek-As-Big-As-Your-Thumb-with-Moustaches-Seven-Versts-Long - From Russia
13. Story of Sinzero – Ethiopia, Africa. An Amhara folktale from Ethiopia, East Africa
14. Fereyel and Debbe Engal, the Witch – The Gambia, West Africa.

Books in "One Story Many Colors" Series

1. Cat and Rat Like Stories (20 stories)
2. Bluebeard Like Stories (7 stories)
3. Tom Thumb Like Stories (14 stories)
4. Six Swans Like Stories
5. Three Oranges Like Stories (9 stories)
6. Snow White Like Stories
7. Sleeping Beauty Like Stories
8. Ping King Like Stories – 3 parts
9. Puss in Boots Like Storie (15 stories)
10. Hansel and Gratel Like Stories (4 stories)
11. Red Riding Hood Like Stories
12. Cinderella Like Stories in Europe (14+11 stories)
12. Cinderella in the World (21 stories)
13. Rumplestiltuskin Like Stories (22 stories)
14. Ali Baba and Forty Thieves Like Stories (4 stories)
15. Crocodile and Monkey Like Stories
16. Lion and Man Like Stories (14 stories)
17. Pome and Pee Like Stories (6 stories)
18. Soldier and Death Like Stories
19. Tees Maar Kahan Like Stories (11 stories)
20. Lion and Rabbit like Stories
21. Frog Princess Like Stories (7 stories)

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022